सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 26, नई दिल्ली । रविवार, 06 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 स्टील स्लैग आधारित 'ईकोफिक्स' तकनीक से दिल्ली की सड़कों की....
06 कराहती कुदरत के चिंताजनक संदेश
08 कैबिनेट ने ओडिशा में 2 रेलवे परियोजनाओं को मंजूरी दी

जल्द मिलेगी द्वारका एक्सप्रेसवे के दिल्ली भाग को हरी झंडी, प्रधानमंत्री मोदी कर सकते हैं उद्घाटन

दिल्ली भाग पूरी तरह से बनकर तैयार, सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से सुरंगों की जांच शुरू, इस महीने हर स्तर पर पूरी हो जाएगी जांच

संजय बाटला

द्वारका एक्सप्रेसवे का दिल्ली भाग भी तैयार हो गया है। सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से दोनों सुरंगों (टनल) की जांच शुरू कर दी गई है। इस महीने के भीतर हर स्तर पर जांच पूरी हो जाएगी। इसके बाद दिल्ली भाग को चालू कर दिया जाएगा। चालू होने के बाद दिल्ली-गुरुग्राम एक्सप्रेसवे पर से ट्रैफिक का दबाव 25 से 30 प्रतिशत तक कम होने की उम्मीद है।

नई दिल्ली/गुरुग्राम। द्वारका एक्सप्रेसवे का दिल्ली भाग भी तैयार हो गया है। सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से दोनों सुरंगों (टनल) की जांच शुरू कर दी गई है। फायर फाइटिंग एवं लाइटिंग सिस्टम से लेकर साइन बोर्ड तक की जांच की जा रही है। इस महीने के भीतर हर स्तर पर जांच पूरी हो जाएगी।

इसके बाद दिल्ली भाग को चालू कर दिया जाएगा। चालू होने के बाद दिल्ली-गुरुग्राम एक्सप्रेसवे पर से ट्रैफिक का दबाव 25 से 30 प्रतिशत तक कम होने की उम्मीद है। इस भाग का भी विधिवत शुभारंभ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से कराए जाने की चर्चा है।

9000 करोड़ रुपये की लागत से द्वारका एक्सप्रेसवे का निर्माण

दिल्ली-गुरुग्राम एक्सप्रेसवे पर से ट्रैफिक का दबाव कम करने के लिए गुरुग्राम में खेड़कीदौला टोल प्लाजा के नजदीक से लेकर दिल्ली के महिपालपुर में शिवमूर्ति के सामने तक लगभग नौ हजार करोड़ रुपये की लागत से द्वारका एक्सप्रेसवे का निर्माण किया गया है। निर्माण न केवल तेजी हो बल्कि बेहतर हो, इसे ध्यान में रखकर प्रोजेक्टर को दो भागों में बांटकर अलग-अलग कंपनियों को निर्माण की जिम्मेदारी सौंपी गई।

गुरुग्राम भाग का निर्माण पिछले साल ही हो चुका है पूरा

गुरुग्राम भाग की जिम्मेदारी निर्माण कंपनी एलएंडटी ने पिछले साल ही पूरी कर दी। इस भाग के ऊपर ट्रैफिक लोड भी डाला जा चुका है। दिल्ली भाग के निर्माण की जिम्मेदारी जयकुमार इंफ्रा प्रोजेक्ट लिमिटेड के पास है। गत वर्ष ही प्रोजेक्ट पूरा होना था लेकिन इलाके में ट्रैफिक के दबाव की वजह से सुरंगों के निर्माण में समय लग गया। अब दिल्ली भाग के दोनों सुरंगें न केवल पूरी तरह तैयार हो चुकी हैं बल्कि चालू करने से पहले उनकी सुरक्षात्मक जांच शुरू कर दी गई है।

हाई प्रेशर वाटर मिस्ट फायर सिस्टम विकसित

दिल्ली भाग में एक सुरंग का निर्माण द्वारका से लेकर दिल्ली-गुरुग्राम एक्सप्रेसवे के नजदीक तक किया गया है जबकि दूसरी सुरंग का निर्माण महिपालपुर में शिवमूर्ति के नजदीक से पालम एयरपोर्ट तक किया गया है। दोनों सुरंग की लंबाई क्रमशः लगभग चार किलोमीटर एवं ढाई किलोमीटर है। दोनों सुरंगों में हाई प्रेशर वाटर मिस्ट फायर सिस्टम विकसित किया गया है। इससे कभी भी आग लगने पर कुछ ही देर में उसके ऊपर काबू पाया जा सकेगा।

30 मिनट में मानेसर से पालम एयरपोर्ट

दिल्ली भाग के चालू होने के बाद मानेसर से पालम एयरपोर्ट पहुंचने में अधिक से अधिक 30 मिनट लगेंगे। अभी औसतन डेढ़ से दो घंटे लग जाते हैं। पीक आवर के दौरान कई बार तीन से चार घंटे भी लग जाते हैं। द्वारका एक्सप्रेसवे से जाने वाले वाहन शिवमूर्ति के नजदीक से अंदर ही अंदर यानी सुरंग से होते हुए सीधे एयरपोर्ट पर पहुंच जाएंगे। अधिक से अधिक पांच मिनट का समय लगेगा। वर्तमान में पांच मिनट की दूरी तय करने में आधा से एक घंटा लग जाता है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआइ) के अधिकारी का कहना है कि दिल्ली भाग तैयार हो चुका है। चालू करने से पहले टेस्टिंग अनिवार्य है। टेस्टिंग शुरू हो चुकी है।

तकनीकी क्षेत्र में देश किस तरह आगे बढ़ रहा है, इसका आइना द्वारका एक्सप्रेसवे है। रात में देखने पर ऐसा लगता है जैसे विदेश में हों। सुरंगों का निर्माण भी विश्वस्तरीय है। इसी तरह की सुरंग देश के सभी शहरों में बनाने के ऊपर जोर देना होगा। खासकर गुरुग्राम में इसके ऊपर काफी काम करने की आवश्यकता है। सुरंग एवं एलिवेटेड रोड बनाकर ही ट्रैफिक का दबाव कम कर सकते हैं।

- जेएस सुहाग, पूर्व तकनीकी सलाहकार, एनएचएआई

एक नजर में द्वारका एक्सप्रेसवे प्रोजेक्ट

- एक्सप्रेसवे का 18.9 किलोमीटर हिस्सा गुरुग्राम में, बाकी 10.1 किलोमीटर हिस्सा दिल्ली में है।
- 23 किलोमीटर भाग एलिवेटेड और लगभग चार किलोमीटर भूमिगत (टनल) बनाया गया है।
- देश पहला एक्सप्रेसवे है जिसका एलिवेटेड हिस्सा सिंगल पिलर के ऊपर बनाया गया है।
- इसमें लगभग दो लाख एमटी स्टील लगा है, जो एफिल टावर की तुलना में 30 गुना अधिक है।
- लगभग 20 लाख सीयूएम कंक्रीट लगा है जो बुर्ज खलीफा की तुलना में छह गुना अधिक है।

चैत्र नवरात्रि का अंतिम यानि 9वां दिन माँ सिद्धिदात्री को समर्पित

6 अप्रैल को चैत्र नवरात्रि का अंतिम यानी 9वां दिन है। नवरात्रि के 9वें दिन मां दुर्गा के के नवमं स्वरूप मां सिद्धिदात्री की पूजा होती है। नव दुर्गाओं में मां सिद्धिदात्री अंतिम हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मां सिद्धिदात्री भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी करती हैं और उन्हें यश, बल और धन भी प्रदान करती हैं। शास्त्रों में मां सिद्धिदात्री को सिद्धि और मोक्ष की देवी माना जाता है। मां सिद्धिदात्री सभी प्रकार की सिद्धियां प्रदान करने वाली हैं। सभी देवी-देवताओं को मां से ही सिद्धियों की प्राप्ति हुई हैं। भगवान शिव ने भी मां की तपस्या कर सिद्धियों को प्राप्त किया। मां सिद्धिदात्री की कृपा से ही भगवान शिव का आधा शरीर देवी का हो गया और वह अर्धनारीश्वर कहलाए। नवरात्र में नौवें दिन मां सिद्धिदात्री की पूजा के बाद नवरात्र का समापन माना जाता है।

एक्शन मोड में गुरुग्राम ट्रैफिक पुलिस, 50 हजार से ज्यादा कटे चालान.....

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम ट्रैफिक पुलिस ने बिना हेलमेट वाहन चलाने वालों के खिलाफ अभियान चलाया और 53215 चालान जारी किए। जुर्माने की कुल राशि 5.32 करोड़ रुपये है। पुलिस का उद्देश्य यातायात को व्यवस्थित और सुरक्षित बनाना है। लोगों को यातायात नियमों के बारे में जागरूक करने के लिए अभियान चलाए जा रहे हैं।

गुरुग्राम। बिना हेलमेट के वाहन चलाने वाले चालकों के विरुद्ध पुलिस ने विशेष अभियान चलाया। बिना हेलमेट वाहन चलाकर यातायात नियमों की अवहेलना करने वाले वाहन चालकों पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस ने 53215 चलान किए गए। जिनकी कुल जुर्माना राशि 5.32 करोड़ रुपये हैं।

यातायात पुलिस का मुख्य उद्देश्य यातायात का संचालन व्यवस्थित व सुचारू रूप से कराते हुए सफर को सुगम व सुरक्षित बनाना है। यातायात के सुचारू, सुगम व व्यवस्थित संचालन के लिए पुलिस द्वारा यातायात की अवहेलना करने वालों के विरुद्ध अभियान चला रही है।

पुलिस द्वारा समय-समय पर लोगों को जागरूक करने के लिए विशेष जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को यातायात नियमों के बारे में जानकारी देकर उन्हें यातायात नियमों की पालना करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस दौरान लोगों को यह भी बताया जाता है कि यातायात नियमों की पालना करना सुनिश्चित करें ताकि सड़क दुर्घटना से बचा जा सके और जान माल की हानि न हो।

वहीं पर दूसरी ओर अब सार्वजनिक स्थानों, संकेतक बोर्ड, दीवारों आदि पर बिल बोर्ड या पंफलेट लगाकर शहर को गंदा करने वालों पर अब नगर निगम जुर्माना लगाने के साथ ही एफआईआर दर्ज करवाएगा।

नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त अशोक कुमार गर्ग ने कहा कि अवैध रूप से पंफलेट आदि लगाने से शहर गंदा दिखाई देता है, साथ ही वाहन चालकों व राहगिरों को भी परेशानी होती है।

छह माह के कारावास का भी प्रविधान

अब निगम की टीमें विभिन्न स्थानों पर लगे बिल बोर्ड व पंफलेट आदि की जांच करेंगी तथा जिस भी व्यक्ति या फर्म से संबंधित बिल बोर्ड या पंफलेट सार्वजनिक संपत्ति, दीवार, संकेतक, दिशा-सूचक बोर्ड पर लगा होगा, उस पर भारी जुर्माना लगाया जाएगा।

इसके साथ ही संबंधित के विरुद्ध हरियाणा संपत्ति विरूपण निवारण अधिनियम के तहत एफआईआर दर्ज कराई जाएगी, जिसमें छह माह के कारावास का भी प्रविधान है। निगमायुक्त ने कहा कि यह शहर हम सभी का है तथा इसकी स्वच्छता, सुंदरता व बेहतरी की जिम्मेदारी भी हमारी ही है। कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक स्थानों, दीवारों, दिशा-सूचक बोर्ड, संकेतक व बोलार्ड पर पंफलेट या बिल बोर्ड न लगाए।

अमेरिका, जर्मनी और फ्रांस की तरह देश में उड़ेंगे जायरोकॉप्टर, जाम से मिलेगी मुक्ति; खासियत जान होंगे दंग

परिवहन विशेष न्यूज

जल्द ही भारत में जायरोकॉप्टर उड़ान भरते दिखाई देंगे जिससे सेना अर्धसैनिक बल और पुलिस को दुर्गम इलाकों पर भी नजर रखना आसान होगा। यातायात जाम से बचने के लिए उद्यमी भी इसका इस्तेमाल कर सकेंगे। यह 100 से 150 मीटर की ऊंचाई पर उड़ान भर सकता है और एक बार ईंधन भरने पर 600 किलोमीटर तक की दूरी तय कर सकता है।

गुरुग्राम। जल्द ही अमेरिका, जर्मनी व फ्रांस की तरह अपने देश में भी जायरोकॉप्टर उड़ते हुए दिखाई देंगे। इससे सेना, अर्धसैनिक बल एवं पुलिस को दुर्गम इलाकों पर भी नजर रखना आसान होगा। यातायात जाम से बचने के लिए उद्यमी भी इसे खरीदकर प्रयोग कर सकेंगे।

जहां कहीं भी जाने में चार घंटे लगते हैं, वहां का सफर बिना जाम का सामना किए डेढ़ से दो घंटे में पूरा करना आसान होगा। जायरोकाप्टर 100 से 150 मीटर की ऊंचाई पर भी उड़ान भर सकेगा।

कंपनी ने डीजीसीए से अनुमति लेने की तैयारी की शुरू

पांच वर्ष पूर्व कंपनी जायरोक्स एविएशन ने पोलैंड से जायरोकाप्टर (तकनीकी रूप से इसे जायरोप्लेन कहा जाता है) भारत में लाने की योजना बनाई थी। यह अब सफल होने जा रहा है। जायरोकॉप्टर की डिजाइन को नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) से प्रमाणपत्र हासिल हो चुका है।

कंपनी ने अब पोलैंड से आयात करने के लिए डीजीसीए से अनुमति लेने की तैयारी शुरू कर दी है। कंपनी प्रबंधन के अनुसार, अनुमति मिलने में अधिक समय नहीं लगता है, जिससे उम्मीद है कि इस महीने के अंत तक एक जायरोकॉप्टर गुरुग्राम पहुंच जाएगा।

कई अन्य राज्यों की पुलिस से बातचीत जारी

कंपनी जायरोकॉप्टर को सेना, अर्धसैनिक बलों व पुलिस को उपलब्ध कराएगी। इसके लिए सेना एवं अर्धसैनिक बलों से वह बातचीत कर चुकी है, कुछ अर्धसैनिक बलों ने इसमें रुचि भी दिखाई है। जबकि हरियाणा पुलिस के साथ ही कई अन्य राज्यों की पुलिस से बातचीत की जा रही है। सभी को इसे उड़ाकर दिखाया जाएगा। उसके बाद मांग के अनुरूप कंपनी विदेश से जायरोकाप्टर मंगाएगी।

केवल 100 मीटर लंबी एयरस्ट्रिप की जरूरत

जायरोकॉप्टर के टेक आफ के लिए केवल 100 मीटर लंबी व 15 मीटर चौड़ी एयरस्ट्रिप की आवश्यकता होगी। इसमें ईंधन के तौर पर पेट्रोल का इस्तेमाल होगा। एक बार ईंधन डालने के बाद 600 किलोमीटर तक की दूरी तय की जा सकेगी। इसकी अधिकतम रफ्तार 200 किमी प्रति घंटे तक होगी।

यह 100 से 150 मीटर की ऊंचाई पर 30 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से भी उड़ान भर सकेगा। इतनी ऊंचाई से नीचे किसी भी चीज को बेहतर तरीके से देखा जा सकेगा, इसलिए इसे सेना, अर्धसैनिक बलों व पुलिस के लिए लाभदायक माना जा रहा है।

न्यूनतम 40 घंटे की उड़ान आवश्यक

जिस प्रकार अन्य विमान कंपनियों को उड़ान भरने से पहले एयरपोर्ट अथारिटी को जानकारी देनी होती है, उसी तरह इसे उड़ाने के लिए भी एयरपोर्ट अथारिटी को जानकारी देनी होगी। अथॉरिटी की अनुमति मिलने पर ही जायरोकॉप्टर उड़ान भर सकेगा।

इसे उड़ाने के लिए जायरो प्रशिक्षित स्पोर्ट पायलट लाइसेंस की आवश्यकता होगी, जिसका प्रशिक्षण कामर्शियल पायलट लाइसेंस मानकों के अनुरूप होता है और इसके लिए प्रशिक्षण के दौरान न्यूनतम 40 घंटे की उड़ान आवश्यक होती है।

रायसीना में होगा वर्कशॉप

जायरोकाप्टर के रखरखाव हेतु वर्कशाप के निर्माण के लिए कंपनी ने रायसीना गांव के पास 20 एकड़ जमीन खरीदी है। वर्कशाप के लिए भी डीजीसीए से अनुमति मिल गई है। जायरोकाप्टर की मांग बढ़ने पर कंपनी मानेसर में इसकी एसेंबलिंग शुरू करेगी।

इसके लिए कंपनी ने फ्रांस की एक कंपनी से लाइसेंस प्राप्त कर लिया है। इसकी कीमत केवल डेढ़ से दो करोड़ होने की वजह से इसकी मांग बढ़ने की उम्मीद है। उल्लेखनीय है कि पिछले साल उत्तराखंड पर्यटन विभाग ने भी एक निजी कंपनी की मदद से ऋषिकेश-हरिद्वार में पर्यटकों के लिए जायरोकाप्टर सेवा पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर शुरू की थी।

यह पायलट प्रोजेक्ट सफल रहा था। इसके व्यावसायिक इस्तेमाल के लिए संबंधित कंपनी डीजीसीए से अनुमति लेने के प्रयास कर रही है, अनुमति मिलते ही इस सेवा को फिर से शुरू किए जाने की योजना है।

मैं कई सालों से जायरोकाप्टर लाने के प्रयास में लगा हूं। अब जाकर सपना साकार हो रहा है। इस महीने के अंत तक एक जायरोकाप्टर लेकर आने की तैयारी है। डीजीसीए को आयात के लिए आवेदन भेजने की तैयारी शुरू कर दी गई है। सेना एवं अर्धसैनिक बलों से बातचीत हो चुकी है। सेना के साथ ही अर्धसैनिक बलों में बीएसएफ एवं सीआरपीएफ की ओर से इसमें रुचि दिखाई गई है। जायरोकाप्टर के आते ही उन्हें उड़ाकर दिखाया जाएगा। आने वाले समय में देश जायरोकाप्टर का हब होगा, क्योंकि इसकी काफी आवश्यकता है। इसकी एक घंटे की उड़ान के लिए केवल 15 लीटर पेट्रोल चाहिए। कारों की तरह इसमें भी कहीं भी पेट्रोल भरवाया जा सकेगा।

कर्नल (सेवानिवृत्त) रामपाल सुहाग, सीएमडी, जायरोक्स एविएशन प्राइवेट लिमिटेड

श्री राम नवमी

राम नवमी हर साल चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मनाया जाता है। यह दिन भगवान श्रीराम के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है और विशेष रूप से भगवान श्रीराम की पूजा की जाती है। राम नवमी का पर्व भारतीय संस्कृति और परंपरा में काफी विशेष स्थान रखता है। इसे भगवान श्रीराम की मर्यादा, वीरता, और धर्म के प्रति उनकी निष्ठा का प्रतीक माना जाता है। इस दिन श्रद्धालु भगवान श्रीराम की पूजा करने के साथ-साथ उनके आदर्शों को अपनाने का प्रयास करते हैं।

मान्यता है कि इस दिन भगवान श्रीराम की पूजा करने से भक्तों के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि का वास होता है, साथ ही जीवन के तमाम संकट समाप्त होते हैं। साथ ही, इस दिन विशेष रूप से मां दुर्गा के नौवें रूप सिद्धिदात्री की भी पूजा की जाती है, जो सुख-समृद्धि और सभी बाधाओं से मुक्ति प्रदान करने वाली मानी जाती हैं। राम नवमी का पर्व में श्रद्धा और भक्ति से मनाया जाता है। यह पर्व धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

राम नवमी की तिथि चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि आरंभः 05 अप्रैल 2025, शनिवार, सायं 07:26 मिनट पर

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि समाप्तः 06 अप्रैल 2025, रविवार, सायं 07:22 मिनट पर

उदया तिथि के अनुसार राम नवमी का पर्व 06 अप्रैल 2025 को मनाया जाएगा।

राम नवमी की पूजा का शुभ समयः 06 अप्रैल 2025, प्रातः 11:08 मिनट से दोपहर 01:39 मिनट तक और राम नवमी मध्याह्न मुहूर्त - प्रातः 11:07 से दोपहर 13:39 तक

राम नवमी की पूजा विधि राम नवमी के दिन सबसे पहले ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान करें और स्वयं को शुद्ध करें। इसके बाद व्रत का संकल्प लें और भगवान श्रीराम की पूजा करने का मन बनाएं। व्रत का पालन करते समय पूरे दिन सत्य बोलने और उत्तम आचरण का ध्यान रखें। पूजा स्थान को गंगाजल से शुद्ध करके वहां एक चौकी रखें और उस पर पीले रंग का वस्त्र बिछाएं। फिर उस पर भगवान श्रीराम, माता सीता, भाई लक्ष्मण और श्री हनुमान की प्रतिमा स्थापित करें। भगवान श्रीराम की पूजा के लिए यह चौकी विशेष रूप से शुभ मानी जाती है। अब, भगवान श्रीराम का ध्यान करते हुए उनका आह्वान करें। भगवान राम को अपने घर में आमंत्रित करते हुए उनके चरणों में श्रद्धा अर्पित करें। इसके बाद पंचोपचार पूजा करें जिसमें फूल, चंदन, दीपक, नैवेद्य (प्रसाद) और अर्पण किया जाता है। अब राम स्त्रोत और राम चालीसा का पाठ करें। राम स्त्रोत का पाठ करने से भगवान श्रीराम की कृपा प्राप्त होती है। राम चालीसा का पाठ विशेष रूप से शक्ति और सौभाग्य को बढ़ाने वाला माना जाता है।

पूजा के अंत में भगवान श्रीराम की आरती करें और उनका धन्यवाद अर्पित करें। अंत में प्रसाद का वितरण करें और घर के सभी सदस्यों को प्रसन्नचित्त करें। इस प्रकार, पूजा विधि पूरी करने से जीवन में सुख-शांति और समृद्धि का वास होता है।

रामनवमी पर सुख, शांति और समृद्धि के लिए क्या करें? ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक, इस रामनवमी पर ग्रहों की अनुकूलता बन रही है और ऐसे शुभ संयोग में भगवान श्रीराम की कृपा प्राप्त करने के लिए विशेष उपाय करने से जीवन में सकारात्मक ऊर्जा और सफलता प्राप्त की जा सकती है। आइए, यहां पंडित जी से जानते हैं कि रामनवमी पर कौन-से विशेष उपाय करना लाभदायक साबित हो सकता है।

राम नाम का जाप और हनुमान जी की आराधना रामनवमी के दिन 'श्री राम जय राम जय जय राम' का जाप करने से मन और घर में शांति आ सकती है। इसके अलावा हनुमान चालीसा या सुंदरकांड का पाठ करने से भी बुरी शक्तियों और नकारात्मकता का प्रभाव कम हो सकता है।

माँ यमुना जन्मोत्सव विशेष

चैत्र मास की शुक्लपक्ष की षष्ठी को यमुना जयंती के नाम से जाना जाता है। इसे यमुना छठ भी कहा जाता है। इसदिन यमुना जी का जन्मोत्सव मनाया जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार यमुना जी (प्राकट्य रूप में) भगवान सूर्य की पुत्री है। मृत्यु के देवता यमराज इनके बडे भाई और शनिदेव यमुना जी के छोटे भाई है। यमुना भगवान श्री कृष्ण की पटरानी थी। ब्रज क्षेत्र में यमुना को माता के समान माना जाता है। इसलिये इन्हे यमुना मैया कह के पुकारा जाता है। यमुना अपने भक्तों के पापों का नाश करके उन्हे निर्मल बना देती है।

माँ यमुना का पौराणिक महत्व यमुना नदी को यमुना देवी के रूप में पूजा जाता है। नदी के रूप में इसका उद्गम हिमालय का कालिंद पर्वत है। इसलिये यमुना को कालिंदी भी कहा जाता है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जब यमुना भगवान सूर्य की पुत्री है और यमराज एवं शनिदेव की बहन है। हिंदु धर्म में यमुना पूजन, यमुना स्नान का विशेष महत्व माना जाता है। ब्रजक्षेत्र में स्थानीय भाषा में कहा जाता है – यमुना यमदूतन टारत है, भव टारत है श्री राधिका रानी। इसका अर्थ है यमुना की उपासना से मृत्यु के उपरांत यमदूतों का भय नही होता और श्रीराधा जी की भक्ति करने से जातक भव सागर को पार करके मोक्ष को प्राप्त करता है। धर्मग्रंथों में वर्णित कथा के अनुसार यम द्वितिया अर्थात भाई दूज (कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की द्वितिया) के दिन यमुना स्नान करने से मनुष्य को मृत्यु के समय यमदूतों का भय नही रहता। इससे यमुना जी का महात्म्य पता चलता है। यमुना जी के प्राकट्य के विषय में यह कथा है कि जब श्री कृष्ण ने गोलोक में श्रीराधा जी से भूलोक पर अवतार लेने के लिये कहा तो उन्होने धरती पर यमुना के ना होने से सुख की अनुभूति ना होने की बात कही। तब श्रीकृष्ण ने यमुना जी को धरती पर अवतरित होने के लिये कहा। ऐसा माना जाता है कि यमुना जयंती के दिन प्रातःकाल यमुना स्नान करने से महान पुण्य मिलता है। जो लोग यमुना स्नान नही कर सकते वो पानी में काले तिल मिलाएं और "श्री कृष्ण शरणम ममः" मंत्र का जाप करते करते स्नान करें। ऐसा करने से जातक को भगवान श्री कृष्ण की शरण प्राप्त होती है। यमुना जी की अर्चना करने से साधक को भगवान श्री कृष्ण की कृपा प्राप्त होती है। यमुना जी भगवान श्री कृष्ण की पटरानी है। एक पौराणिक कथा के अनुसार जब प्रजापति दक्ष के द्वारा आयोजित यज्ञ में माता सती ने भगवान शिव की उपेक्षा और अपमान होते हुये देखा तो वो बहुत दुखी हुई और उन्होने यज्ञ की अग्नि में कूदकर अपनी देह त्याग दी। इस दुख से दुखित होकर भगवान शिव यमुना जल में कूद गये थे। इस कारण से यमुना जी का जल कृष्णवर्णा हो गया। एक अन्य कथा के अनुसार श्री कृष्ण यमुना जी में कालिया नाग का मर्दन किया था इस कारण यमुना जी का जल काला हो गया था।

यमुना जयंती पर क्या करें यमुना जयंती के दिन यमुना स्नान व यमुना आरती करने से महान पुण्य की प्राप्ति होती है। ब्रज क्षेत्र में यमुना मैया की बहुत मान्यता है, यमुना जयंती पर यमुना पूजन करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है। यमुना जयंती के दिन प्रातःकाल जल में काले तिल डालकर स्नान करें। स्नान करते समय "श्री कृष्ण शरणम ममः" मंत्र का जाप करें। इस दिन भगवान श्री कृष्ण की पूजा करनी चाहिये। उन्हे भोग लगाना चाहिये और उस प्रसाद को सभी में बाँटना चाहिये। कृष्ण जी के मंदिर जाकर दर्शन करने चाहिये।

यमुना छठ पर यमुना नदी में दीपदान करने से जातक की सभी मनोकामनायें पूर्ण होती है। यमुना छठ पर भक्त निर्जल व्रत का पालन करते है और अगले दिन (सप्तमी के दिन) सुबह स्नान के बाद व्रत का पारण करते है। इस व्रत को करने से जातक शुद्ध हो जाता है और उसके सभी पापों का नाश हो जाता है।

।।महाअसंतुष्ट।।

एक बार भगवान विष्णु और लक्ष्मी जी अपनी रचना यह जगत देखने निकले। एक स्थान पर कई लोंगों को एकत्रित देख कर लक्ष्मी जी भगवान से बोली प्रभू क्या है यहां देखना चाहिये, भगवान बोले चलो यह संसार है, देखलो रूको मत।

लक्ष्मी जी हठ किया बोली महाराज देख तो ले मांजरा क्या है, दोंनों मिलकर पहुंचे जहां लोग एकत्रित थे और पता किया तो लोंगों ने एक महाशय की तरफ इशारा किया और कहा यह कभी संतुष्ट नही होते हैं हमेशा इनको शिकायत रहती है। लक्ष्मी जी भगवान की ओर देखा, भगवान कहा लक्ष्मी जी आप इसके चक्कर में न पड़े यह जैसा है इसे वैसा ही रहनें दे चलो आगे बढ़ते हैं। लक्ष्मी जी नही मानी, कहा हमें भी एक बार इसे संतुष्ट करनें का प्रयास करना चाहिये, भगवान रहस्यमयी मुस्कान मुस्कुराये और कहा ठीक है, तुम भी देखलो। लक्ष्मी जी उस व्यक्ति के पास गयी और कहा यदि आपत्ती न हो तो चलो हमारे साथ और हमारा आतीथ्य स्वीकार करो, उसने कहा चलो कहां चलना होगा, लक्ष्मी उसका हांथ पकड़ा क्षणमात्र में वैकुंठपुरी पहुंच गयी। उस व्यक्ति की व्यवस्था करवा कर परिकरों को आदेश दिया की ध्यान रहे यह हमारे विशेष अतिथी है, इन्हे सब प्रकार संतुष्ट रखना है।

इस प्रकार व्यवस्था करके लक्ष्मी जी भगवान के पास विराजमान हुई।

जिसकी व्यवस्था स्वयं लक्ष्मी जी करें भला वहां असंतुष्टि कैसे प्रवेश करे, इस प्रकार छः महीने व्यतीत होगये, भगवान विष्णु जी एक दिन लक्ष्मी जी से कहा आप के अतिथि का क्या समाचार है ?

लक्ष्मी जी भी तो कुछ कम नहीं तिरछी चितवन से प्रभू की ओर देखा, कहा चलिए आप स्वयं देखले। भगवान श्री के साथ चले अतिथिशाला की ओर आगे आगे लक्ष्मी जी पीछे पीछे भगवान जब अतिथीशाला पहुंचे, लक्ष्मी जी ने कहा, कहो अतिथी संतुष्ट तो हो न, अतिथि हॉथ जोड़ नमस्कार किया कहा कोई कमी नहीं है माते। लक्ष्मी जी गद्गगद् होकर भगवान की तरफ देखा, भगवान भी मुस्कान बिखेर दिये।

इतने मे अतिथी लक्ष्मी और भगवान को संकेत किया और कहा बाकी तो सब ठीक है, पर एक बात हमारी समझ में नहीं आ रही की दुनियां मे इतने लोग है, यह व्यवहार हमारे साथ ही क्यों किया गया इतने दिनों से मै यही सोच रहा हूं उत्तर नहीं मिल रहा है कृपया बतायें यह व्यवहार हमारे साथ ही क्यों ?

भगवान ठठा कर हंसे, लक्ष्मी जी की ओर देखा, लक्ष्मी जी संकुचित हो पैर के अंगुठे चला रही थी।

भगवान लक्ष्मी जी का हॉथ पकड़े प्रेम से उनकी ओर देखते हुए कहा चलो।।

मिटहिं न मलिन स्वभाव अभंगू।

कालचक्र

पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु के नाभि कमल से उत्पन ब्रम्हा की आयु 100 दिव्य वर्ष मानी गयी है। पितामह ब्रम्हा के प्रथम 50 वर्षों को पूर्वार्ध एवं अगले 50 वर्षों को उत्तरार्ध कहते हैं। सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग को मिलकर एक महायुग कहते हैं। ऐसे 1000 महायुगों का ब्रम्हा का एक दिन होता है। इसी प्रकार 1000 महायुगों का ब्रम्हा की एक रात्रि होती है। अर्थात परमपिता ब्रम्हा का एक पूरा दिन 2000 महायुगों का होता है। ब्रम्हा के 1000 दिनों का भगवान विष्णु की एक घटी होती है। भगवान विष्णु की 1200000 (बारह लाख) घाटियों की भगवान शिव की आधी कला होती है। महादेव की 1000000000 (एक अरब) अर्धकला व्यतीत होने पर 1 ब्रम्हाक्ष होता है। अभी ब्रम्हा के उत्तरार्ध का पहला वर्ष चल रहा है (ब्रम्हा का 51 वा वर्ष)।

ब्रम्हा के एक दिन में 14 मनु शाषण करते हैं:

1. स्वयंभू
2. स्वरोचिष
3. उत्तम
4. तामस
5. रैवत
6. चाक्षुष
7. वैवस्वत
8. सावर्णि
9. दक्ष सावर्णि
10. ब्रम्हा सावर्णि
11. धर्म सावर्णि
12. रूद्र सावर्णि
13. देव सावर्णि
14. इन्द्र सावर्णि

इस प्रकार ब्रम्हा के द्वितीय परार्ध (51 वे) वर्ष के प्रथम दिन के छः मनु व्यतीत हो गए है और सातवे वैवस्वत मनु का अठाईसवा (28) युग चल रहा है। इकहत्तर (71) महायुगों का एक मनु होता है। 14 मनुओं का 1 कल्प कहा जाता है जो की ब्रम्हा का एक दिन होता है। आदि में ब्रम्हा कल्प और अंत में पद्मा कल्प होता है। इस प्रकार कुल *2 कल्प होते हैं। ब्रम्हा के परार्ध में रथन्तर तथा उत्तरार्ध में श्वेतवराह कल्प होता है। इस समय श्वेतवराह कल्प चल रहा है। इस प्रकार ब्रम्हा के 1 दिन (कल्प) 4000 *20000000 (चार लाख बतीस "करोड़") मानव वर्ष के बराबर है जिसमे 14 मवंतर होते है. चार युगों का एक महायुग होता है।

1. सतयुगः सतयुग का काल 1728000 (सत्रह लाख अठाईस हजार) वर्षों का होता है। इस युग में चार अमानवीय अवतार हुए. मत्स्यावतार, कुर्मावतार, वराहावतार एवं नरिसिंघवातर। सतयुग में पाप 0 भाग तथा पुण्य 20 भाग था। मनुष्यों की आयु 100000 वर्ष, उचाई 21 हाथ, पात्र स्वर्णमय, द्रव्य रत्नमय तथा ब्रम्हांडगत प्राण था। पुष्कर तीर्थ, स्त्रियाँ पद्मिनी तथा पतिव्रता थी। सूर्यग्रहण *2000 तथा चंद्रग्रहण 5000 बार होते थे। सारे वर्ण अपने धर्म में लीन रहते थे। ब्राम्हण 4 वेद पढने वाले थे।

2. त्रेतायुगः त्रेतायुग का काल 1296000 (बारह लाख छियान्वे हजार) वर्षों का होता है। इस युग में तीन मानवीय अवतार हुए। वामन, परशुराम एवं राम। त्रेता में पाप 5 भाग एवं पुण्य 15 भाग होता था। मनुष्यों की आयु 10000 वर्ष, उचाई 14 हाथ, पात्र चांदी के, द्रव्य स्वर्ण तथा अस्थिगत प्राण था। नैमिषारण्य तीर्थ, स्त्रियाँ पतिव्रता होती थी। सूर्यग्रहण *200 तथा चंद्रग्रहण 500 बार होते थे। सारे वर्ण अपने अपने कार्य में रत थे। ब्राम्हण * वेद पढने वाले थे.

3. द्वापर युगः द्वापर युग का काल 864000 (आठ लाख चौसठ हजार) वर्षों का होता है। इस युग में 2 मानवीय अवतार हुए। कृष्ण एवं बुद्ध। इस युग में पाप 10 भाग एवं पुण्य 10 भाग का होता था। मनुष्यों की आयु 1000 वर्ष, उचाई 7 हाथ, पात्र ताम्र, द्रव्य चांदी तथा त्वचागत प्राण था। स्त्रियाँ शंखिनी होती थी। सूर्यग्रहण *20 तथा चंद्रग्रहण 50 हुए। वर्ण व्यवस्था दूषित थी तथा ब्राम्हण 2 वेद पढने वाले थे।

4. कलियुगः कलियुग का काल 4 *2000 (चार लाख *2 हजार) वर्षों का होता है। इस युग में एक अवतार संभल देश, गोड़ ब्राम्हण विष्णु यश के घर कल्कि नाम से होगा। इस युग में पाप 15 भाग एवं पुण्य 5 भाग होगा। मनुष्यों की आयु 100 वर्ष, उचाई *.5 हाथ, पात्र मिट्टी, द्रव्य ताम्र, मुद्रा लौह, गंगा तीर्थ तथा अन्नमय प्राण होगा। कलियुग के अंत में गंगा पृथ्वी से लीन हो जाएगी तथा भगवान विष्णु धरती का त्याग कर देंगे। सभी वर्ण अपने कर्म से रहित होंगे तथा ब्राम्हण केवल एक वेद पढने वाले होंगे अर्थात ज्ञान का लोप हो जाएगा।

भगवान विष्णु के चरणों का महत्व

किसी ने सही ही कहा है कि भगवान के पांव में स्वर्ग होता है। उनके चरणों जैसी पवित्र जगह और कोई नहीं है। इसलिए तो लोग भगवान के चरणों का स्पर्श पाकर अपने जीवन को सफल बनाने की होड़ में लगे रहते हैं।लेकिन भगवान के चरणों का इतना महत्व क्यों है क्या कभी आपने जाना है? भगवान के चरणरज की ऐसी महिमा है कि यदि इस मानव शरीर में त्रिभुवन के स्वामी भगवान विष्णु के चरणारविन्दों की धूलि लिपटी हो तो इसमें अगरू, चंदन या अन्य कोई सुगन्ध लगाने की जरूरत नहीं, भगवान के भक्तों की कीर्तिरूपी सुगन्ध तो स्वयं ही सर्वत्र फैल जाती है। संसार के पालहार व परम दयालु भगवान विष्णु सबमें व्याप्त हैं। शेषनाग की शय्या पर शयन कपने वाले व शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करने वाले भगवान विष्णु के चरण-कमल भूदेवी (भूमि) और श्रीदेवी (लक्ष्मी) के हृदय-मंदिर में हमेशा विराजित रहते हैं। भगवान के चरणों से निकली गंगा का जल दिन-रात लोगों के पापों को धोता रहता है। भगवान के चरणरज की ऐसी महिमा है कि यदि इस मानव शरीर में त्रिभुवन के स्वामी भगवान विष्णु के चरणारविन्दों की धूलि लिपटी हो तो इसमें अगरू, चंदन या अन्य कोई सुगंध लगाने की जरूरत नहीं, भगवान के भक्तों की कीर्तिरूपी सुगन्ध तो स्वयं ही सर्वत्र फैल जाती है। जो मनुष्य नित्य-निरन्तर उनके चरण-कमलों की दिव्य गंध का सेवन करता है भगवान विष्णु उनके हृदयकमल में अपने चरणकमलों की स्थापना करके स्वयं भी उनके अंतःकरण में निवास करने लगते हैं। भगवान के चरण-कमलों के प्रताप से ही उनके सेवकों का मन भटकता नहीं है, उनके मन की चंचलता मिट जाती है और पापों का नांश हो जाता है। भगवान के चरणों में शंख का चिह्न है। शंख भगवान का विशेष आयुध है। यह सदा विष्णु भगवान के हाथ में रहता है। शंख विजय का प्रतीक है। जिस मनुष्य के हृदय में भगवान के चरण रहते हैं, वह सब पर विजयी हो जाता है। उसके सारे विरोधी-भाव शंखध्वनि से नष्ट हो जाते हैं। भगवान के चरणों में ऊर्ध्वरेखा का चिह्न है। सामुद्रिक विज्ञान के अनुसार जिसके चरण में ऊर्ध्वरेखा होती है, वह सदैव ऊंचे की ओर बढ़ता जाता है। जो मनुष्य अपने हृदय में भगवान के चरणों का ध्यान करता है, उसकी गति और दृष्टि ऊर्ध्व हो जाती है, वह सीधे ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। भगवान विष्णु के चरणों में राजा बलि का चिह्न है। भगवान राजा बलि को ठगने गए थे परंतु अपने-आप को ठगा आए और उन्हें सदैव राजा बलि के द्वार पर पहरेदार बन कर रहना पड़ता है। भगवान ने बलि के मस्तक पर देवताओं के लिए भी दुर्लभ अपने चरण रखे और

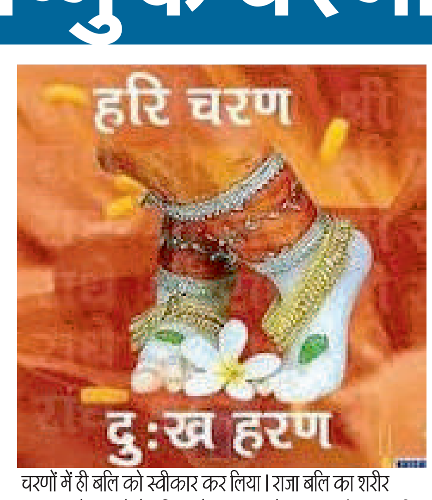

चरणों में ही बलि को स्वीकार कर लिया। राजा बलि का शरीर भगवान के चरणों में अंकित हो गया, इससे बढ़कर सौभाग्य की बात क्या हो सकती है ? राजा बलि को पहले राज-मद था। प्रह्लादजी ने जो कि उनके पितामह थे, उनको समझाया पर बलि नहीं माने। प्रह्लादजी ने देखा कि बीमारी बढ़ गयी है तो भगवान का स्मरण किया। भगवान ने वामन रूप में आकर बलि के संपूर्ण राज्य के साथ शरीर तक को नाप लिया। राजा बलि ने जब राजत्व का साज हटाकर मस्तक झुकाया, तब प्रभु ने उसके आंगन में खड़े रहना अंगीकार किया। यह मानभंग, ऐश्वर्यनाश आदि भगवान की बड़ी कृपा से होता है। जैसा रोग होता है, भगवान वैसी ही दवा देते हैं। बलि का सब कुछ हर लिया पर सुदामा को सबकुछ दे दिया। जो मनुष्य सब प्रकार से अपने को भगवान के चरणों में समर्पण कर देता है, उसके पास भगवान सदा के लिए बस जाते हैं। भगवान के चरणों में दर्पण का चिह्न है। दर्पण में प्रतिबिम्ब दिखता है, उसी तरह यह जगत भगवान का प्रतिबिम्ब है **'वासुदेव सर्वम्'**, सब कुछ, सब जगह भगवान-ही-भगवान हैं। किसी भी छवि को दर्पण रखता नहीं है वरन् छवि की शोभा को बढ़ाकर देखने वाले को आनन्द प्रदान करता है। भगवान के चरणों में प्रेम रखकर जो भगवान को सुखी करना चाहते हैं, भगवान भी उनकी पूजा स्वीकार कर उन्हें कोटिगुना प्रेम और आनंद लौटाकर सुखी करते हैं। इसके अतिरिक्त दर्पण के सामने जो जैसा जाता है, दर्पण उसे वैसा ही रूप लौटा देता है। भगवान के चरणों में जो जिस भाव से जाएगा, भगवान उसका वह भाव उसी रूप में प्रदान करेंगे। गीता में भगवान ने कहा है—**'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।' 'जो जिस भाव से मुझे भजता है, मैं भी उन्हें उसी तरह भजता हूँ।'** भगवान के चरणों में सुमेरुपर्वत का चिह्न है। सुमेरु का अर्थ है—जिसका मेरु सुंदर हो। सुमेरु को सोने का पहाड़ भी कहते हैं। इस सुमेरु को कुछ लोग **'गोवर्धन'** कहते हैं जिसे भगवान ने अपनी कनिष्ठा उंगली के नख पर उठाया था। भगवान ने उसे सदा के लिए अपने चरणों में बसा लिया है। सुमेरु के बिना किसी वस्तु की स्थिति नहीं। सूर्य भी सुमेरु पर उगते हैं। इसलिए सुमेरु रात-दिन की संधि है। जपमाला में भी सुमेरु होता है। सुमेरु माला को व्यवस्था में रखने वाला केंद्र है। स्वर्णमय सुमेरु के अंदर अनन्त धन राशि छिपी है। जिसे भगवान के चरण प्राप्त हो जाते हैं, उसे संसार का सबसे बड़ा धन प्राप्त हो जाती है। उसकी जीवनमाला व्यवस्थित हो जाती है। वह जीवन-मृत्यु की संधि को समझ जाता है। भगवान के चरणों में घंटिका का चिह्न है। यह भगवान की विशेष प्रिय वस्तु है। पूजा में यह अत्यंत आवश्यक है। भगवान की करधनी में छोटी-छोटी घंटी लगी रहती है, नूपुर के साथ यह भी बजती है। इसका तांत्रिक अर्थ भी है।अनहद नाद में दस प्रकार के स्वर होते हैं। इसमें तीसरा स्वर घंटिका का होता है। घंटी **'क्लीं क्लीं क्लीं'** का उच्चारण करती है। यही श्रीकृष्ण का महाबीज—प्रेम बीज मंत्र है। यह बीज घंटिका के रूप में आया है इसलिए पूजा का प्रधान उपकरण है; इसलिए भगवान के चरणों में इसे स्थान प्राप्त है। भगवान के चरणों में वीणा का चिह्न है। वीणा भगवान को विशेष प्रिय है, जिसे भगवान ने नारदजी को प्रदान किया था। वाद्यों में सबसे प्राचीन वीणा है। वीणा में सारे स्वर एक साथ हैं। यह आदि वाद्य है। गायन की विभूति रूप में इसे भगवान के चरणों मे स्थान मिला है। वीणा भगवान का नाम गाती है। जिसके हृदय में भगवान के चरण हैं उसे सदैव सब जगह वीणा का स्वर सुनाई देता है।

बिनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि ॥4॥

भावार्थः मुनि ने (इस प्रकार) विनती करके और फिर सिर नवाकर, हाथ जोड़कर कहा- हे नाथ! मेरी बुद्धि आपके चरण कमलों को कभी न छोड़े॥ अर्थात मैं भगवान के परम पवित्र चरण-कमलों की वंदना करता हूँ जिनकी ब्रह्मा, शिव, देव, ऋषि, मुनि आदि वंदना करते रहते हैं और जिनका ध्यान करने मात्र से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार धनलोलुप मनुष्य के मन में सदैव धन बसता है वैसे ही हे प्रभु ! मेरे मन में सदैव आपके चरण-कमल का वास हो।

भगवान विष्णु के इन मंदिरों में दर्शन करने से पूरी होती है हर मनोकामना...

हिन्दू धर्म के आधारभूत ग्रन्थों में बहुमान्य पुराणानुसार भगवान विष्णु, परमेश्वर के तीन मुख्य रूपों में से एक रूप हैं। न्याय को प्रश्रय, अन्याय के विनाश तथा जीव को परिस्थिति के अनुसार उचित मार्ग-ग्रहण के निर्देश हेतु विभिन्न रूपों में अवतार ग्रहण करने वाले के रूप में विष्णु जी मान्य रहे हैं। कहते हैं कि पाप का नाश और जगत के उद्धार के लिए, भगवान विष्णु ने हर युग में अवतार लिया है। और हर युग में उनकी महिमा अपरम्पार रही है। इस कलियुग में भी उनके भक्तों की श्रद्धा, इन विश्वविख्यात मंदिरों में देखने को मिलती है.. आइए आपको बताते हैं भगवान विष्णु के प्रसिद्ध मंदिरों के बारे में...

बद्रीनाथ

श्री बद्रीनाथ मंदिर, उत्तराखंड के चमोली जिले में अलकनंदा के किनारे विराजमान है। यह हिंदू धर्म के 'चार धाम' में से एक तीर्थस्थल है। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित 108 मंदिरों (दिव्य देसम) में शामिल है, जिनका तमिल संतों ने छठी से 9वीं शताब्दी के बीच उल्लेख किया था।

जगन्नाथ पुरी

यह मंदिर भी वैष्णवों के 'चार धाम' में शामिल है। जगन्नाथ पुरी से जुड़ी कई अद्भुत कथाएं हैं। यहां हर साल निकलने वाली विशेष रथ यात्रा में लाखों श्रद्धालु शामिल होते हैं। यहां भगवान विष्णु अपने जगन्नाथ अवतार में विराजमान हैं।

श्री रंगनाथस्वामी

यह मंदिर दक्षिण भारत के तिरुचिरापल्ली शहर के श्रीरंगम में स्थित है। श्री रंगनाथस्वामी मंदिर, श्री हरि के विशेष मंदिरों में से एक है। कहा जाता है कि भगवान विष्णु के अवतार श्रीराम ने लंका से लौटने के बाद यहां पूजा की थी।

वेंकटेश्वर

यह मंदिर भगवान विष्णु के सबसे पुराने और प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। वेंकटेश्वर मंदिर, तिरुपति के पास तिरुमला पहाड़ी पर स्थित है। हर साल अनगिनत लोग यहां आकर भगवान वेंकटेश के दर्शन करते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं।

द्वारिकाधीश

यह मंदिर भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण को समर्पित है। माना जाता है कि द्वारिकाधीश लगभग 2000 साल पुराना मंदिर है। इस मंदिर को भगवान कृष्ण के पोते वज्रनाभ ने बनवाया था। यह मंदिर इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह द्वारिका में है, जहां श्री कृष्ण का निवास था। द्वारिकाधीश मंदिर 'चार धाम' में से एक है।

विट्ठल रुक्मिणी

यह वैष्णव मंदिर महाराष्ट्र के पंढरपुर में स्थित है। विट्ठल रुक्मिणी मंदिर, भगवान विष्णु के रूप विठोबा को समर्पित है। यहां श्री हरि और उनकी पत्नी रुक्मिणी विराजमान हैं।

इन सभी मंदिरों की मान्यता विश्वप्रसिद्ध है। माना जाता है कि अगर इन मंदिरों में भक्त श्रद्धापूर्वक भगवान के दर्शन करते हैं तो उनकी हर मनोकामना पूरी होती है।

गुरुवार को भगवान बृहस्पति की पूजा का विधान है। इस पूजा से परिवार में सुख-शांति रहती है....

गुरुवार व्रत की विधिः गुरुवार की पूजा विधि-विधान के अनुसार की जानी चाहिए। व्रत वाले दिन सुबह उठकर बृहस्पति देव का पूजन करना चाहिए। बृहस्पति देव का पूजन पीली वस्तुएं, पीले फूल, चने की दाल, मुनक्का, पीली मिठाई, पीले चावल और हल्दी चढ़ाकर किया जाता है। इस व्रत में केले के पेड़ की का पूजा की जाती है। कथा और पूजन के समय मन, कर्म और वचन से शुद्ध होकर मनोकामना पूर्ति के लिए बृहस्पतिदेव से प्रार्थना करनी चाहिए। जल में हल्दी डालकर केले के पेड़ पर चढ़ाएं। केले की जड़ में चने की दाल और मुनक्का चढ़ाएं साथ ही दीपक जलाकर पेड़ की आरती उतारें। दिन में एक समय ही भोजन करें। खाने में चने की दाल या पीली चीजें खाएं, नमक न खा एं, पीले वस्त्र पहनें, पीले फलों का इस्तेमाल करें। पूजन के बाद भगवान बृहस्पति की कथा सुननी चाहिए।

गुरुवार व्रत की कथाः प्राचीन काल की बात है। किसी राज्य में एक बड़ा प्रतापी और दानी राजा राज करता था। वह प्रत्येक गुरुवार को व्रत रखता एवं भूखे और गरीबों को दान देकर पुण्य प्राप्त करता था, परंतु यह बात उसकी रानी को अच्छी नहीं लगती थी। वह न तो व्रत करती थी, न ही किसी को एक भी पैसा दान में देती थी और राजा को भी ऐसा करने से मना करती थी। एक समय की बात है, राजा शिकार खेलने के लिए वन चले गए थे। घर पर रानी और दासी थी। उसी समय गुरु बृहस्पतिदेव साधु का रूप धारण कर राजा के दरवाजे पर भिक्षा मांगने आए। साधु ने जब रानी से भिक्षा मांगी तो वह कहने लगी, हे साधु महाराज, मैं इस दान और पुण्य से तंग आ गई हूं। आप कोई ऐसा उपाय बताएं, जिससे कि सारा धन नष्ट हो जाए और मैं आराम से रह सकूं। बृहस्पतिदेव ने कहा, हे देवी, तुम बड़ी विचित्र हो, संतान और धन से कोई दुखी होता है अगर अधिक धन है तो इसे शुभ कार्यों में लगाओ, कुंवारी कन्याओं का विवाह कराओ, विद्यालय और बाग-बगीचे का निर्माण कराओ, जिससे तुम्हारे दोनों लोक सुधरें परंतु साधु की इन बातों से रानी को खुशी नहीं हुई। उसने कहा कि मुझे ऐसे धन की आवश्यकता नहीं है, जिसे मैं दान दूं और जिसे संभालने में मेरा सारा समय नष्ट हो जाए। तब साधु ने कहा- यदि तुम्हारी ऐसी इच्छा है तो मैं जैसा तुम्हें बताता हूं तुम वैसा ही करना। गुरुवार के दिन तुम घर को गोबर से लीपना, अपने केशों को पीली मिटटी से धोना, केशों को धोते समय स्नान करना, राजा से हजामत बनाने को कहना, भोजन में मांस मदिरा खाना, कपड़ा धोबी के यहां धुलने डालना। इस प्रकार सात बृहस्पतिवार करने से तुम्हारा समस्त धन नष्ट हो जाएगा। इतना कहकर साधु रुपी बृहस्पतिदेव अंतर्ध्यान हो गए। साधु के अनुसार कही बातों को पूरा करते हुए रानी को केवल तीन बृहस्पतिवार ही बीते थे कि उसकी समस्त धन-संपत्ति नष्ट हो गई। भोजन के लिए राजा का परिवार तरसने लगा। तब एक दिन राजा ने रानी से बोला कि हे रानी, तुम यहीं रहो, मैं दूसरे देश को जाता हूं, क्योंकि यहां पर सभी लोग मुझे जानते हैं इसलिए मैं कोई छोटा कार्य नहीं कर सकता। ऐसा कहकर राजा परदेश चला गया। वहां वह जंगल से लकड़ी काटकर लाता और शहर में बेचता। इस तरह वह अपना जीवन व्यतीत करने लगा। इधर, राजा के परदेश जाते ही रानी और दासी दुखी रहने लगी। एक बार जब रानी और दासी को सात दिन तक बिना भोजन के रहना पड़ा, तो रानी ने अपनी दासी से कहा- हे दासी, पास ही के नगर में मेरी बहन रहती है। वह बड़ी धनवान है। तू उसके पास जा और कुछ ले आ, ताकि थोड़ी-बहुत गुजर-बसर हो जाए। दासी रानी की बहन के पास गई। उस दिन गुरुवार था और रानी की बहन उस समय बृहस्पतिवार व्रत की कथा सुन रही थी। दासी ने रानी की बहन को अपनी रानी का संदेश दिया, लेकिन रानी की बड़ी बहन ने कोई उत्तर नहीं दिया। जब दासी को रानी की बहन से कोई उत्तर नहीं मिला तो वह बहुत दुखी हुई और उसे क्रोध भी आया। दासी ने वापस आकर रानी को सारी बात बता दी। सुनकर रानी ने अपने भाग्य को कोसा। उधर, रानी की बहन ने सोचा कि मेरी बहन की दासी आई थी, परंतु मैं उससे नहीं बोली, इससे वह बहुत दुखी हुई होगी। कथा सुनकर और पूजन समाप्त करके वह अपनी बहन के घर आई और कहने लगी- हे बहन, मैं बृहस्पतिवार का व्रत कर रही थी। तुम्हारी दासी मेरे घर आई थी परंतु जब तक कथा होती है, तब तक न तो उठते हैं और न ही बोलते हैं, इसलिए मैं नहीं बोली। कहो दासी क्यों गई थी। रानी बोली- बहन, तुमसे क्या छिपाऊं, हमारे घर में खाने तक को अनाज नहीं था। ऐसा कहते-कहते रानी की आंखें भर आई। उसने दासी समेत पिछले सात दिनों से भूखे रहने तक की बात अपनी बहन को विस्तारपूर्वक सुना दी। रानी की बहन बोली- देखो बहन, भगवान बृहस्पतिदेव सबकी मनोकामना को पूर्ण करते हैं। देखो, शायद तुम्हारे घर में अनाज रखा हो। पहले तो रानी को विश्वास नहीं हुआ पर बहन के आग्रह करने पर उसने अपनी दासी को अंदर भेजा तो उसे सचमुच अनाज से भरा एक घड़ा मिल गया। यह देखकर दासी को बड़ी हैरानी हुई। दासी रानी से कहने लगी- हे रानी, जब हमको भोजन नहीं मिलता तो हम व्रत ही तो करते हैं, इसलिए क्यों न इनसे व्रत और कथा की विधि पूछ ली जाए, ताकि हम भी व्रत कर सकें। तब रानी ने अपनी बहन से बृहस्पतिवार व्रत के बारे में पूछा। उसकी बहन ने बताया, बृहस्पतिवार के व्रत में चने की दाल और मुनक्का से विष्णु भगवान का केले की जड़ में पूजन करें तथा दीपक जलाएं, व्रत कथा सुनें और पीला भोजन ही करें। इससे बृहस्पतिदेव प्रसन्न होते हैं। व्रत और पूजन विधि बताकर रानी की बहन अपने घर को लौट गई। सात दिन के बाद जब गुरुवार आया, तो रानी और दासी ने व्रत रखा। घुड़साल में जाकर चना और गुड़ लेकर आईं। फिर उससे केले की जड़ तथा विष्णु भगवान का पूजन किया।अब पीला भोजन कहां से आए इस बात को लेकर दोनों बहुत दुखी थे चूंकि उन्होंने व्रत रखा था इसलिए बृहस्पतिदेव उनसे प्रसन्न थे। इसलिए वे एक साधारण व्यक्ति का रूप धारण कर दो थालों में सुन्दर पीला भोजन दासी को दे गए। भोजन पाकर दासी प्रसन्न हुई और फिर रानी के साथ मिलकर भोजन ग्रहण किया। उसके बाद वे सभी गुरुवार को व्रत और पूजन करने लगी। बृहस्पति भगवान की कृपा से उनके पास फिर से धन-संपत्ति आ गई, परंतु रानी फिर से पहले की तरह आलस्य करने लगी। तब दासी बोली- देखो रानी, तुम पहले भी इस प्रकार आलस्य करती थी, तुम्हें धन रखने में कष्ट होता था, इस कारण सभी धन नष्ट हो गया और अब जब भगवान बृहस्पति की कृपा से धन मिला है तो तुम्हें फिर से आलस्य होता है। रानी को समझाते हुए दासी कहती है कि बड़ी मुसीबतों के बाद हमने यह धन पाया है, इसलिए हमें दान-पुण्य करना चाहिए, भूखे मनुष्यों को भोजन कराना चाहिए, और धन को शुभ कार्यों में खर्च करना चाहिए, जिससे तुम्हारे कुल का यश बढ़ेगा, स्वर्ग की प्राप्ति होगी और पित्र प्रसन्न होंगे। दासी की बात मानकर रानी अपना धन शुभ कार्यों में खर्च करने लगी, जिससे पूरे नगर में उसका यश फैलने लगा। बृहस्पतिवार व्रत कथा के बाद श्रद्धा के साथ आरती की जानी चाहिए इसके बाद प्रसाद बांटकर उसे ग्रहण करना चाहिए।

स्टील स्लैग आधारित 'ईकोफिक्स' तकनीक से दिल्ली की सड़कों की टिकाऊ मरम्मत का रास्ता खुलेगा

माननीय दिल्ली PWD मंत्री प्रवेश साहिब सिंह की उपस्थिति में हुआ सफल तकनीकी ट्रायल

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली के लोक निर्माण विभाग (PWD) ने आज स्टील स्लैग आधारित इंस्टेंट पॉटहोल रिपेयर तकनीक 'ईकोफिक्स' का सफल तकनीकी ट्रायल दिल्ली सचिवालय रोड पर किया। यह ट्रायल माननीय दिल्ली PWD मंत्री प्रवेश साहिब सिंह की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ।

'ईकोफिक्स' एक रेडी-टू-यूज़ पॉटहोल रिपेयर मिक्स है, जिसे CSIR – सेंट्रल रोड रिसर्च इंस्टीट्यूट (CRRI) ने रामुका ग्लोबल सर्विसेज (एक DPIIT मान्यता प्राप्त स्टार्टअप) के साथ मिलकर विकसित किया है।

CSIR-CRRI और रामुका की टीम द्वारा किए गए लाइव प्रदर्शन में जलभराव वाले और सूखे दोनों प्रकार के गड्ढों को बिना किसी जल निकासी (dewatering) के सफलतापूर्वक भरा गया। इस तकनीक की सबसे खास बात यह रही कि मरम्मत के मात्र 15 से 20 मिनट बाद सड़क को यातायात के लिए खोल दिया गया, जिससे आम लोगों को कोई असुविधा नहीं हुई।

इस मौके पर कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे:

- डॉ. एन. कैलैसेल्वी, सचिव DSIR एवं महानिदेशक CSIR
- इंजी. नयमुद्दीन, इंजीनियर-इन-चीफ, दिल्ली PWD
- महेन्द्र कुमार गुप्ता, संयुक्त सचिव, प्रशासन (CSIR एवं DSIR)
- डॉ. मनोरंजन परिडा, निदेशक, CSIR-CRRI
- साथ ही दिल्ली PWD और अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी

ईकोफिक्स तकनीक के आविष्कारक और CSIR-CRRI के वरिष्ठ प्रमुख वैज्ञानिक सतीश पांडे ने जानकारी दी कि यह मिक्स स्टील उद्योग के मेटलर्जिकल वेस्ट यानी स्टील स्लैग से तैयार किया गया है। यह टिकाऊ और किफायती है, साथ ही प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता को भी कम करता है, जिससे पर्यावरण की रक्षा होती है।

माननीय मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने कहा:

"दिल्ली की जनता को बेहतर, सुरक्षित और गड्ढामुक्त सड़कें देना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। 'ईकोफिक्स' तकनीक का ट्रायल सफल रहा और इससे हमें मानसून से पहले सड़कों की समयबद्ध और टिकाऊ मरम्मत करने में बड़ी मदद मिलेगी। यह तकनीक केवल गड्ढों को भरने का नहीं, बल्कि जनता के विश्वास को मज़बूत करने का काम करेगी। दिल्ली अब स्मार्ट और सस्टेनेबल इंफ्रास्ट्रक्चर की ओर तेज़ी से आगे बढ़ रही है।"

उन्होंने यह भी बताया कि इस तकनीक को लागू करने वाली कंपनी ने 2.5 साल की वारंटी देने का वादा किया है,

"अगले ढाई वर्षों तक यदि किसी भी तरह की मरम्मत की आवश्यकता होगी, तो उसकी पूरी जिम्मेदारी संबंधित एजेंसी की होगी," मंत्री ने कहा।

यह हरित पहल (Green Initiative), भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'वेस्ट टू वेल्थ' (कचरे से संपत्ति) विज़न को साकार करने की दिशा में एक ठोस कदम है, जिसमें औद्योगिक अपशिष्ट को उपयोगी संसाधन में बदलकर टिकाऊ बुनियादी ढांचे का निर्माण किया जा रहा है।

दिल्ली सरकार और PWD इस तकनीक का विस्तृत मूल्यांकन कर रही है, ताकि इसे बड़े पैमाने पर लागू किया जा सके। आने वाले समय में 'ईकोफिक्स' दिल्ली को गड्ढामुक्त, सुरक्षित और नवाचारयुक्त सड़कें देने में अहम भूमिका निभाएगा।

दिल्ली की नव स्थापित भाजपा सरकार एक वर्ष में अपने संकल्प पत्र 2025 के लगभग सभी वादों की पूर्ति का रोड मैप जारी कर देगी -- *वीरेन्द्र सचदेवा*

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की भाजपा सरकार ने आयुष्मान भारत योजना का दोहरा लाभ दिल्ली वालों को देने का विधानसभा चुनाव 2025 के संकल्प पत्र का अपना सबसे महत्वपूर्ण संकल्प सरकार स्थापना के मात्र 45 दिन में पूरा कर दिया है। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की देश में अनेक दल चुनाव जीतते हैं पर मात्र 45 दिन में महिला समृद्धि योजना के 2500 रूपए प्रति माह देने एवं आयुष्मान भारत योजना के तहत 10 लाख रूपए का निशुल्क इलाज कवर देने के जैसे महत्वपूर्ण एवं बड़े आर्थिक व्यय वाली योजनाओं की प्रशासनिक प्रक्रिया पूरी करके सीएम रेखा गुप्ता की भाजपा सरकार ने एक कीर्तिमान बनाया है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की अरविंद केजरीवाल के विश्व स्तरीय शिक्षा, स्वास्थ्य एवं महिला कल्याण के दावे थोथे दावे थे पर दिल्ली की नव स्थापित भाजपा सरकार एक वर्ष में अपने संकल्प पत्र 2025 के लगभग सभी वादों की पूर्ति का रोड मैप जारी कर देगी।

वक्फ बोर्ड में भ्रष्टाचार के डर और उसमें उनकी भूमिका का खुलासा होने की संभावना के कारण ही अमानतुल्लाह खान ने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है : दिल्ली भाजपा प्रवक्ता

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नईदिल्ली। दिल्ली भाजपा प्रवक्ता प्रवीण शंकर कपूर ने कहा कि सरकार बदलने के बाद अमानतुल्लाह खान अब दिल्ली वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष नहीं रहे, इसलिए सुप्रीम कोर्ट में वक्फ बिल को चुनौती देना कोई वक्फ बोर्ड की चुनौती नहीं बल्कि एक व्यक्तिगत प्रयास है। दिल्ली भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि दिल्ली के लोग, जिनमें मुसलमान भी शामिल हैं, बखूबी जानते हैं कि अमानतुल्लाह खान की अध्यक्षता में दिल्ली वक्फ बोर्ड में कितनी भ्रष्टाचार की घटनाएँ हुईं हैं। यही भ्रष्टाचार और उसमें उनकी भूमिका खुलने का डर है, जिसके कारण अमानतुल्लाह खान सुप्रीम कोर्ट का रुख करने को मजबूर हुए हैं।

अनकही कहानियों की कहानी है फिल्म 'अकाल-द अनकॉन्क्वेर्ड' : गिप्पी ग्रेवाल

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली। वर्ष 2020 से लेकर 2022 तक कोविड की वजह से बॉलीवुड को काफी नुकसान हुआ, लेकिन 2023 में बॉलीवुड फिल्मों ने जो वापसी की, उसके तो सभी साक्षी बने। अब तो काफी सारी फिल्में न केवल बनने लगी हैं, बल्कि जोर—शोर से उनका प्रमोशन भी किया जाने लगा हे। इसी कड़ी में हाल ही में अभिनेता गिप्पी ग्रेवाल, निमृत खैरा, निकितिन धीर और गुरप्रीत घुग्गी जैसे सितारे भी अपनी आनेवाली फिल्म 'अकाल : द अनकॉन्क्वेर्ड' के प्रमोशन के सिलसिले में दिल्ली आए। प्रमोशनल कार्यक्रम नई दिल्ली के पंचतारा होटल ली मेरिडियन में आयोजित हुआ।

जहां तक फिल्म 'अकाल : द अनकॉन्क्वेर्ड' की कहानी का सवाल है, तो यह 1840 के दशक में सेट एक एक्शन ड्रामा है, जिसमें पंजाब के योद्धा एक विशोधी सेना के खिलाफ खुद का बचाव करते हैं। फिल्म के बारे में बात गिप्पी ग्रेवाल ने बताया कि 'अकाल : द अनकॉन्क्वेर्ड' ऐसी कहानियों के बारे में एक फिल्म है, जो अब तक अनकही रही हैं और इनके बारे में बहुत कम लोगों को पता है। जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है 'अकाल' का मतलब है कालातीत, यानी जिसे किसी भी काल में जीता नहीं जा सकता।'

बता दें कि फिल्म 'अकाल : द अनकॉन्क्वेर्ड' का निर्माण करण जौहर (धर्मा प्रोडक्शंस) द्वारा किया गया है और यह 10 अप्रैल 2025 को रिलीज़ होगा।

संस्कारशाला: "बच्चे वही बनते हैं जो आप उन्हें बनाते हैं"

लेखिका : प्रियंका श्रीवास्तव

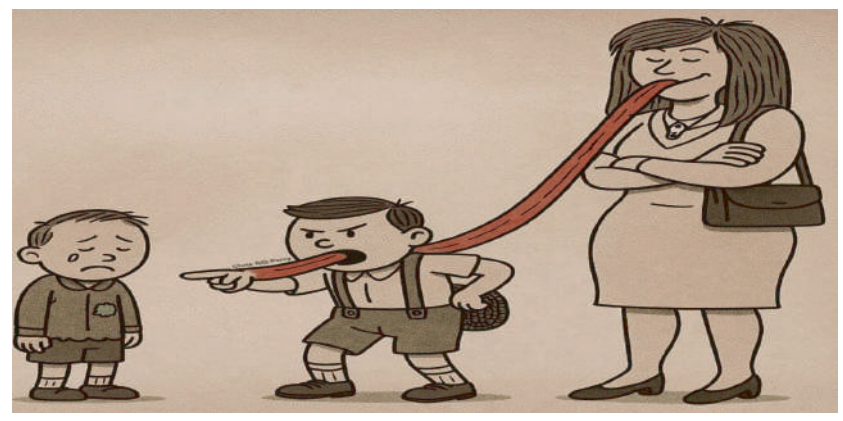

बच्चा कैसा बनेगा, उसका स्वभाव कैसा होगा, वह जीवन में किस दृष्टिकोण से आगे बढ़ेगा — इसका सबसे बड़ा आधार होता है उसका परिवार और विशेषकर उसके माता-पिता। यह बात बार-बार दोहराई जाती है कि बच्चे अपने माता-पिता का प्रतिबिंब होते हैं, पर वास्तव में इसका अर्थ बहुत गहराई से समझने की आवश्यकता है।

जब हम अपने बच्चे को दूसरों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करते देखते हैं, तो हमें गर्व होता है, पर हमें यह भी समझना चाहिए कि उसने यह व्यवहार सीखा कहां से?

बच्चे हमारे कार्यों, हमारे शब्दों और हमारी सोच को चुपचाप आत्मसात करते हैं। वे हमारी बातों से ज़्यादा हमारे व्यवहार से सीखते हैं।

1. आप जैसे बोलते हैं, वैसा ही वह अपने आप से बोलेगा

अगर हम अपने बच्चों से कड़वे, गुस्से भरे या तिरस्कारपूर्ण शब्दों में बात करते हैं, तो वह धीरे-धीरे अपने आप को भी वैसा ही देखने लगता है। "तू कुछ नहीं कर सकता", "तेरे बस की बात नहीं" — ये शब्द उनके आत्मविश्वास को तोड़ते हैं। इसके विपरीत, जब हम कहते हैं, "मुझे तुम पर गर्व है", "तुम कर सकते हो", तो बच्चे की आत्मा में आशा और शक्ति भर जाती है।

2. आपका व्यवहार दूसरों के प्रति, उसकी दुनिया बनाता है

बच्चा देखता है कि आप घर में नौकरों से, दुकानदार से, राह चलते अजनबियों से कैसा व्यवहार करते हैं। अगर आप आदर, धैर्य और करुणा दिखाते हैं, तो बच्चा भी यही गुण अपनाता है। अगर आप चिड़चिड़े, अशिष्ट या असंवेदनशील हैं, तो बच्चा यही सीख लेता है कि दुनिया से ऐसे ही पेश आना है।

3. आपका विश्वास उसके आत्मविश्वास की नींव है

अगर आप अपने बच्चे को उसके छोटे-छोटे प्रयासों के लिए भी सराहते हैं, उस पर भरोसा जताते हैं, तो वह खुद पर यकीन करना सीखता है। माता-पिता का विश्वास, बच्चे के लिए सबसे बड़ा सहारा होता है।

जैसे आप उसे देखते हैं, वैसा ही वह खुद को देखने लगता है।

4. आदर्श बनने का कार्य सबसे पहले घर से शुरू होता है

बच्चों को उपदेश देने की जगह, अगर हम अपने जीवन में वैसा आचरण करें जो हम उनसे चाहते हैं, तो परिणाम कहीं अधिक प्रभावशाली होता है। अगर हम चाहते हैं कि बच्चा संयमित हो, तो हमें भी गुस्से पर काबू रखना होगा। अगर हम चाहते हैं कि वह दयालु हो, तो हमें भी लोगों की मदद करनी होगी।

संस्कारों की शुरुआत घर की दीवारों से होती है, और बच्चे की पहली पाठशाला वही घर होता है। इसलिए हर माता-पिता को यह समझना चाहिए कि उनके हर शब्द, हर भाव, हर निर्णय बच्चे के मन में गहरी छाप छोड़ता है।

आइए, हम सब संकल्प लें कि हम अपने बच्चों के सामने वही उदाहरण प्रस्तुत करेंगे जो हम उन्हें बनते देखना चाहते हैं।क्योंकि अंततः, हमारा बच्चा वही बनेगा जैसा हमने उसे महसूस कराया।

संस्कारशाला — नानी अम्मा के अनमोल सूत्र

विषय: तर्क और वाद-विवाद में अंतर, और क्यों बचना चाहिए बहस से

नानी अम्मा कहती हैं —

"बातों को कहना हो तो तर्क करो, जीतना हो तो मौन रखो। बहस में न रिश्ते बचते हैं, न सम्मान।"

आज संस्कारशाला में हम सीखेंगे कि तर्क और वाद-विवाद (Arguments) में क्या फर्क है और यदि किसी मतभेद की स्थिति में कोई टकराव हो जाए, तो उसे कैसे सँभाला जाए।

तर्क और वाद-विवाद में फर्क क्या है?

तर्क (Discussion):

जब दो लोग शांतिपूर्वक किसी विषय पर विचार साझा करते हैं, एक-दूसरे की बात सुनते हैं और समाधान खोजते हैं, तो वह तर्क होता है। यह विकास की ओर ले जाता है।

वाद-विवाद (Argument):

जब कोई केवल अपनी बात मनवाने के लिए ज़ोर देता है, सामने वाले की बात को नकारता है और अहंकार आड़े आता है — तो वह बहस होती है। यह दूरी और कड़वाहट लाती है।

यदि टकराव हो जाए तो क्या करें? – नानी अम्मा के 5 नायाब उपाय

पहले सुनो, फिर बोलो:

हर व्यक्ति की अपनी सोच होती है। सामने वाले की बात पूरी शांति से सुनना पहला कदम है समझदारी का।

मौन की ताकत:

जब भावनाएं उबाल पर हों, तब बोलने से ज़्यादा ताकत चुप रहने में होती है। नानी अम्मा कहती हैं, "गर्म तवे पर रोटी नहीं सेंकते, थोड़ा ठंडा होने दो।"

शब्द सोचकर बोलो:

बहस में कहे गए कटु शब्द तीर बन जाते हैं। बोलने से पहले सोचो — क्या इससे समाधान निकलेगा या ज़ख़्म बढ़ेगा?

"मैं सही हूँ" से बचो:

रिश्ते में 'हम' ज़्यादा ज़रूरी होता है 'मैं' से। कोशिश करो कि समाधान पर फोकस हो, न कि खुद को सही साबित करने पर।

माफी माँगना कमजोरी नहीं:

जब कोई टकराव बढ़ जाए, तो माफी माँग लेना समझदारी और परिपक्वता की निशानी है। नानी अम्मा कहती हैं, ₹जो माफ कर दे, वही सबसे बड़ा होता है।"

क्यों बचना चाहिए बहस से?

रिश्तों में दरार पड़ती है

समय और ऊर्जा का नुकसान होता है

मानसिक तनाव बढ़ता है

और सबसे ज़रूरी — प्रेम की जगह अहंकार आ जाता है

नानी अम्मा की सीख:

"जीवन एक संग्राम नहीं, एक संगीत है। उसमें स्वर मिलाने चाहिए, शोर नहीं।"

संस्कारशाला के इस विशेष सत्र में हम सबने जाना कि बात करने का सही तरीका ही रिश्तों की नींव को मजबूत करता है। अगली बार जब आप किसी मतभेद का सामना करें, तो नानी अम्मा की बात ज़रूर याद रखें —

मैंने नानी को हमेशा arguments से दूर ही देखा है। शायद यही हमारे बड़े-बुज़ुर्गों के संस्कार हैं जो सिखाते हैं कि बात को तर्क के साथ कहो, पर कभी बहस में न उलझो। नानी हमेशा कहती हैं — ₹बात करो, पर बात बढ़ाओ मत।₹ उनकी शांति, उनकी मुस्कान और समझदारी भरी चुप्पी सिखा देती है कि हर बात का जवाब ज़रूरी नहीं होता, लेकिन हर रिश्ते की अहमियत ज़रूरी होती है।

"तर्क से समाधान होता है, बहस से केवल दूरी।"

एक विशेष संवाद । आयोजक : आर्ट निर्भर भारत

क्यों ज़रूरी है लेखन — मानसिक और भावनात्मक जुड़ाव के लिए

विशेष अतिथि : प्रसिद्ध कैलीग्राफर व मार्गदर्शक श्री इंकू कुमार (दिल्ली से)

संवादकर्ता : डॉ. अंकुर शरण, आर्ट निर्भर भारत

An initiative with Global Confederation of NGOs

डॉ. अंकुर शरण:

आपका स्वागत है श्री इंकू कुमार जी! यह हमारे लिए गर्व की बात है कि आज आप हमारे मंच पर हैं। आपने जिस तरह से लेखन को एक कला से ऊपर आत्म-अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है, वो अद्भुत है। मेरा पहला सवाल है — आज जब हर कोई स्मार्टफोन और कीबोर्ड पर निर्भर हो चुका है, तो क्या वाकई आज के समय में लिखना ज़रूरी है?

श्री इंकू कुमार:

बहुत सुंदर प्रश्न है। दरअसल, लेखन सिर्फ़ शब्दों को काग़ज़ पर उतारना नहीं है। यह एक ध्यान की प्रक्रिया है। जब हम लिखते हैं, तो हमारा मस्तिष्क, मन और आत्मा एक लय में आते हैं। ये विज्ञान से प्रमाणित है कि जब हम हाथ से लिखते हैं, तो हम विचारों को बेहतर समझते हैं, उन्हें आत्मसात करते हैं और उनका विश्लेषण करने की शक्ति प्राप्त करते हैं।

डॉ. शरण:

बिल्कुल! और यही वजह है कि हम 'Art Nirbhar Bharat' के माध्यम से बच्चों, युवाओं और वयस्कों को लेखन की ओर प्रेरित करने के लिए लगातार अभियान चला रहे हैं। लेकिन आज की शिक्षा प्रणाली में बच्चों को बहुत जल्दी बॉल पेन या जेल पेन दे दिया जाता है। क्या आपको लगता है इससे लेखन क्षमता पर असर पड़ता है?

श्री इंकू कुमार:

निश्चित तौर पर। हम जब छोटे थे, तो फाउंटेन पेन से लिखते थे, जिससे हाथ की पकड़, गति और मोटर स्किल्स का विकास होता था। आज बॉल पेन ने वह सारी प्रक्रिया खत्म कर दी है। बच्चों को बचपन में पेंसिल और फिर फाउंटेन पेन से लिखना सिखाना चाहिए। इससे न केवल अक्षर सुंदर बनते हैं, बल्कि उनका लेखन आत्मविश्वास भी बढ़ाता है।

डॉ. शरण:

यह बात बहुत गहराई से समझने की ज़रूरत है। हमने हाल ही में 'लेट्स राइट इंडिया' नाम से एक पैन इंडिया वर्कशॉप श्रृंखला शुरू की है, जिसमें हम स्कूलों, कॉलेजों और गाँवों में जाकर बच्चों को लेखन के महत्व को समझा रहे हैं — हाथ से सुंदर लिखना, रोज़ डायरी लिखना और कैलीग्राफी के ज़रिए अपने विचारों को सजाना।

श्री इंकू कुमार:

बहुत ही सराहनीय पहल है। मैं स्वयं भी Calligraphy for Self Discovery वर्कशॉप के ज़रिए युवाओं को ये सिखा रहा हूँ कि कैसे कैलीग्राफी आत्म-संवाद का एक सशक्त माध्यम बन सकता है।

डॉ. शरण:

हमारा मानना है कि हर बच्चे को टेक्नोलॉजी से पहले अपनी लेखन शैली विकसित करनी चाहिए। हम "Write to Heal" जैसे अभियान चला रहे हैं जिसमें बच्चों को भावनात्मक रूप से स्वस्थ करने के लिए उन्हें अपनी भावनाएं काग़ज़ पर उतारने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

श्री इंकू कुमार:

मैं एक सुझाव देना चाहूँगा — हर स्कूल में एक "लेखन ध्यान केंद्र" होना चाहिए, जहाँ बच्चे दिन में कुछ समय सिर्फ़ लिखने के लिए दें। मोबाइल स्क्रीन से हटकर कलम और कागज़ से संवाद करें।

डॉ. शरण:

बिल्कुल! और आर्ट निर्भर भारत इसी दिशा में कार्य कर रहा है। हम हर जिले में "राइटिंग एम्बेसडर्स" नियुक्त कर रहे हैं जो अपने स्कूल, कॉलेज और समाज में इस मुहिम को आगे बढ़ाएं। आप जैसे प्रेरक कलाकारों का मार्गदर्शन हमारे लिए अमूल्य है।

श्री इंकू कुमार:

यह एक नई क्रांति की शुरुआत है — ₹लेखन से जुड़ाव, आत्मा से संवाद₹। मैं हर युवा को यही कहना चाहूँगा — लिखना शुरू कीजिए, सोचने और समझने की नई दृष्टि मिलेगी।

संक्षेप में पहलें:

फाउंटेन पेन से लेखन की पुनः शुरुआत

स्कूलों में राइटिंग ध्यान केंद्र की स्थापना

"लेट्स राइट इंडिया" वर्कशॉप श्रृंखला

"Write to Heal" — भावनात्मक स्वास्थ्य हेतु लेखन

"Calligraphy for Self Discovery" सत्र

जिले स्तर पर "राइटिंग एम्बेसडर्स" की नियुक्ति

आर्ट निर्भर भारत, अचीवर्स टॉक और Global Confederation of NGOs

इस मुहिम को गाँव-गाँव, स्कूल-संस्थान और युवा समूहों तक लेकर जाएगा, ताकि हम एक बार फिर लेखन की संस्कृति को पुनर्जीवित कर सकें — जो मन, मस्तिष्क और आत्मा को जोड़ती है।

अगर आप भी इस अभियान से जुड़ना चाहते हैं, तो हमें लिखें: artnirbharbharat.ankur@gmail.com

लेखन की शक्ति को जानें, अपनाएं और आगे बढ़ाएं।

रामनवमी महोत्सव 6 अप्रैल 2025 - दुनियाँ के कई देशों में श्री राम जन्मोत्सव महोत्सव का आगाज़

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ में भारत को आध्यात्मिकता, मान्यताओं, प्रथाओं एवं पूजास्थलों का बॉस कहा जाता है, क्योंकि यहां सभी धर्मो जातियों के त्योहारों को धर्मनिरपेक्षता के साथ धूमधाम से सभी मिलकर मनाते हैं, चाहे ईद हो या रामनवमी, गुरुनानक जयंती हो या 25 दिसंबर क्रिसमस डे, सभी उत्सव में सभी धर्म समाजों के लोग शामिल होते हैं। मैं खुद भी कई बार मंदिरों मस्जिदों गुरुद्वारों व चर्चा में भी होकर आया हूं, बड़ी खूबसूरती लगती है जब सर्वधर्म समभाव का सटीक उदाहरण ग्राउंड जीरो पर दिखता है। परंतु कुछ चंद असामाजिक तत्वों की आंखों से यह देखा नहीं या सहन नहीं किया जा सकता, और वे इन खूबसूरत उत्सवों में व्यवधान उत्पन्न करते हैं, खासकर ईद व रामनवमी के जुलूस में पथराव ! परंतु अभी शासन प्रशासन पुलिस विभाग, बिजली विभाग, आरटीओ विभाग सहित सभी विभाग अति सतर्कता से कम कर तथा अपनी अपनी गाइड लाइंस जारी कर रहे हैं, जिसको सुरक्षा के लिए रेखांकित किया जा सकता है ।रामायण में राम के जीवन से जुड़ी कथाओं में वर्णित कई शहरों में बड़े पैमाने पर उत्सव मनाया जाता है। इनमें अयोध्या (उत्तर प्रदेश), रामेश्वरम (तमिलनाडु), भद्राचलम (तेलंगाना) और सीतामढ़ी (बिहार) शामिल हैं। राम नवमी से जुड़े अनुष्ठान और रीति-रिवाज पूरे भारत में अलग- अलग क्षेत्रों में अलग-अलग होते हैं। दुनिया के कई देशों में भगवान राम की पूजा होती है, रामायण भी कई देशों में लोकप्रिय है, रामायण लोकप्रिय देशः (1) थाईलैंड में रामायण को राष्ट्रीय पुस्तक माना जाता है. थाई भाषा में इसे राम-कियेन कहते हैं। (2) इंडोनेशिया में रामायण को राष्ट्रीय काव्य माना जाता है. यहां काकविन रामायण पढ़ी जाती है। (3) बर्मा में रामायण को अनौपचारिक रूप से राष्ट्रीय महाकाव्य माना जाता है ।यहां इसे यमयान के नाम से जाना जाता है। (4) मलेशिया में रामायण को हिकायत सेरी राम के नाम से जाना जाता है। (5) नेपाल में भगवान राम को दामाद माना जाता है। (6) कंबोडिया, जावा, चीन में भी रामायण का बड़ा महत्व है। (7) लाओस, फिलीपींस, श्रीलंका, जापान, मंगोलिया, वियतनाम में भी रामायण का प्रचलन है, रामायण का प्रभाव राम की कहानी एशिया के लाओस, कंबोडिया और थाईलैंड से लेकर दक्षिण अमेरिका के गुयाना और अफ्रीका के मॉरीशस तक लोकप्रिय है ।फिलीपाइन्स, चीन, जापान और प्राचीन अमरीका तक राम-कथा का प्रभाव मिलता है। इसी क्रम में हमारी राइस सिटी गोंदिया नगरी में भी तैयारियां बड़े जोर शोर से शुरू है। गोंदिया श्री राम जन्मोत्सव समिति तथा श्री राम कथा आयोजन समिति से 6 अप्रैल की रामनवमी महोत्सव व 10 अप्रैल से शुरू हो रहे राम कथा के लिए, संगठन समितियों संस्थाओं के प्रमुखों को रामनवमी महोत्सव व शोभायात्रा तथा में आने के लिए पदाधिकारी स्वयं जाकर आमंत्रण उनको सम्मानित रूप से देकर आ रहे हैं जो रेखांकित करने वाली बात है। चूँकि भारत से दुनियाँ के कई देशों में राम जन्मोत्सव का आगाज हो रहा है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे रामनवमी महोत्सव 6 अप्रैल 2025 दुनियाँ के कई देशों में श्री राम जन्मोत्सव का आगाज़ उल्लेखनीय है।

साथियों बात अगर हम प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी 6 अप्रैल 2025 को राम जन्मोत्सव, व श्री राम कथा को मनाने की करें तो, हिन्दू पंचांग के अनुसार चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि के दिन रामनवमी का त्योहार मनाया जाता है। शास्त्रों के अनुसार इसी दिन भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था, इसलिए इस दिन को राम जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। राम जी के जन्म पर्व के कारण ही इस तिथि कोरामनवमी कहा जाता है। भगवान राम को विष्णु का अवतार माना जाता है। धरती पर असुरों का संहार करने के लिए भगवान विष्णु ने त्रेतायुग में श्रीराम के रूप में मानव अवतार लिया था। भगवान राम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन काल में कई कष्ट सहते हुए भी मर्यादित जीवन का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने विपरीत परिस्थियों में भी अपने आदर्शों को नहीं त्यागा और मर्यादा में रहते हुए जीवन व्यतीत किया। इसलिए उन्हें उत्तम पुरुष का स्थान दिया गया है। इस दिन विशेष रूप से भगवान राम की पूजा अर्चना और कई तरह के आयोजन कर उनके जन्म के पर्व को मनाते हैं। वैसे तो पूरे भारत में भगवान राम का जन्मदिन उत्साह के साथ मनाया जाता है लेकिन खास तौर से श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में इस पर्व को बेहद हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। रामनवमी के समय अयोध्या में भव्य मेले का आयोजन होता है, जिसमें दूर-दूर से भक्तगणों के अलावा साधु- संन्यासी भी पहुंचते हैं और रामजन्म का उत्सव मनाते हैं ।रामनवमी के दिन आम तौर पर हिन्दू परिवारों में व्रत-उपवास, पूजा पाठ व अन्य धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता है। राम जी के जन्म के समय पर उनके जन्मोत्सव का आयोजन किया जाता है और खुशियों के साथ उनका स्वागत किया जाता है ।कई घरों में विशेष साज-सज्जा कर, घर को पवित्र कर कलश स्थापना की जाती है और श्रीराम जी का पूजन कर, भजन-कीर्तन का आयोजन किया जाता है। इस दिन विशेष तौर पर श्रीराम के साथ माता जानकी और लक्ष्मण जी की भी पूजा होती है ।हिंदू धर्म में भगवान राम को आदर्श पुरुष और महान योद्धा के रूप में पूजा जाता है। उनकी उपासना से साधक को सद्बुद्धि की प्राप्ति होती है। इतना ही नहीं व्यक्ति की अध्यात्मिक उन्नति भी होती हैं। इस दौरान राम जी को प्रसन्न और उनकी विशेष कृपा पाने के लिए राम नवमी की तिथि को सबसे शुभ माना गया है। बता दें, रामनवमी भगवान राम के जन्म के अवसर में मनाई जाती है। इस दिन उनकी पूजा-अर्चना और दान-पुण्य से जुड़े कार्य करने पर व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। श्री राम नवमी की कहानी लंका के राजा 'रावण' से शुरू होती है, उसके शासन में लोग आतंकित थे और उससे मुक्ति पाना चाहते थे ।रावण ने भगवान ब्रह्मा से ऐसी शक्ति प्राप्त की थी कि वह कभी भी देवताओं या यक्षों (देवताओं) के हाथों नहीं मारा जाएगा. वह सबसे शक्तिशाली था, इसलिए, इस आतंक के कारण, सभी देवता मदद के लिए भगवान विष्णु के पास गए,इस प्रकार, राजा दशरथ की पत्नी कौशल्या ने भगवान राम को जन्म दिया. तब से, इस दिन को श्रीरामनवमी के रूप में मनाया जाता है। साथ ही, चैत्र शुक्ल नवमी को ही तुलसीदास ने रामचरितमानस लिखना बहुत समय से शुरू किया था।

साथियों बात अगर हम श्री राम के अनुयायियों को इन प्रमुख बातों को अपने जीवन में अनुसरण करने की करें तो, राम नवमी इस साल 6 अप्रैल,रविवार को पूरे भारत में मनाई जा रहा है, इस दिन सभी भारतवासी पूरे उत्साहपूर्वक बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं, क्योंकि यह दिन भगवान राम जन्म का प्रतीक माना जाता है. रामनवमी के इस खास मौके पर लोगों को भगवान राम के जीवन से जुड़ी कुछ खास बातों को अपने जीवन में अनुसरण करना चाहिए। भगवान राम की इन प्रेरणा दाई आदतों को अपनाने वाला इंसान जीवन की हर बाधा को पार करने में सक्षम हो जाता है, वह कठिन से कठिन परिस्थितियों को आसानी से निपटने में माहिर हो जाता है, ऐसे में इस आर्टिकल में बताई गई भगवान राम के इन गुणों को अमल में लाएंगे, यह आपके जीवन को बहुत ही सरल बनाने का काम करेगा। (1) संयम से काम करना-हमें अपने जीवन में प्रभु श्री राम से सीख लेनी चाहिए कि आखिर कैसे उन्होंने 14 वर्षों तक वनवास में रहकर संयम के साथ कार्य किया था, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में ऐसे ही काम करना चाहिए। (2) पूरी तरह से ज्ञान होना-जीवन में ज्ञान बहुत मायने रखता है, क्योंकि ज्ञान के जरिए इंसान अपने लक्ष्य को हासिल करता है. ऐसे में व्यक्ति को हर क्षेत्र का बखूबी ज्ञान होना जरूरी है, क्योंकि इसी के बदोलत वह हर कम को अच्छे से जानकार आगे की ओर बढ़ सकता है।श्री राम ने भी अपने जीवन में ज्ञान की हर कसौटी को हासिल किया था। (3) अच्छी दोस्ती-हमें अपने जीवन में सबके साथ अच्छा संबंध बनाकर रखना चाहिए. चाहे वो दोस्ती हो, या फिर प्रेम सबके साथ अच्छे से व्यवहार करना चाहिए, इस राम नवमी आप अपने ऊपर ये गुण उतार सकते है। (4) मदद या भलाई करना-प्रभु राम के जीवन से हमें सीख लेनी चाहिए कि हमें दूसरों के प्रति मदद की भावना रखना चाहिए. जरुरतमंद लोगों की हर मुश्किल परिस्थितियों में साथ देना चाहिए।

साथियों बात अगर हम हमारी राइस सिटी गोंदिया में भी श्री राम जन्मोत्सव महोत्सव मनाने की तैयारी की करें तो, महाराष्ट्र की राइस सिटी गोंदिया में रामजन्मोत्सव को लेकर रामभक्तों में उत्साह का माहौल है। सभी पूजा की तैयारी में जोर-शोर से जुटे हैं। सभी समाजों के संगठनों में में भी रामनवमी पूजा की विशेष तैयारी की गयी है। गली- मुहल्ले से लेकर मुख्य चौक राम पताकों से पटा हुआ है। मेन रोड स्थित चौकों को आकर्षक ढंग से सजाया गया है। मेन रोड की सड़क के दोनों ओर दर्जनों पताकाएं लहरा रहा है। गोंदिया में पारंपरिक ढंग से रामनवमी का त्योहार घर-घर में मनाया जा रहा है। झंडा पूजा कर घरों के सामने प्रभु श्री राम पताकाएं लहराया जा रहा है ।रामनवमी को सुबह में पूजा अर्चना का दौर, दोपहर बाद प्रभु श्री राम के स्वरूपों और झंडों के साथ विशाल शोभायात्रा निकाली जारही है। शोभायात्रा परंपरागत मार्ग से होकर गुजरेगी। इस दौरान बजरंगबलि के भक्त अस्त्र-शस्त्र का करतब भी दिखाएंगे। रामनवमी पूरे भक्तिभाव के साथ आनंद के वातावरण में मनायीजा रही है।

साथियों बात अगर हम विभिन्न राज्यों की राम जन्मोत्सव रामनवमी के आयोजन पर पुलिस, बिजली विभाग ट्रैफिक विभाग, सहित अनेक विभागों द्वारा अपनी रणनीति व दिशा निर्देशों की करें तो, रामनवमी जुलूस को लेकर दिशा-निर्देश जारी किया है, निकलने वाले रामनवमी जुलूस को लेकर विद्युत आपूर्ति के विद्युत अधीक्षण अभियंता ने पत्र जारी कर सभी रामनवमी पूजा समितियों से सुरक्षा के दृष्टिकोण से सतर्कता बरतने का आग्रह किया है, ताकि किसी प्रकार की अप्रिय घटना न हो। विद्युत अधीक्षण अभियंता ने रामनवमी पूजा समिति से अपील की है कि झंडा खड़ा करते समय बिजली के तार या उपकरण का ध्यान रखें, किसी भी प्रकार की लापरवाही से अप्रिय घटना हो सकती है, बसों व अन्य बड़े वाहनों की छत पर कोई व्यक्ति न बैठे और न ही उस पर कोई ऊंची सामग्री या ऊंचा झंडा लगाया जाए। जुलूस के दौरान समिति के स्वयंसेवक जुलूस के साथ चल रहे श्रद्धालुओं पर लगातार विशेष नजर रखें, ताकि किसी की लापरवाही या गलती से कोई दुर्घटना न हो. श्रद्धालु या आम लोग जुलूस के मार्ग में पड़ने वाले बिजली के तार या उपकरण को न छुएं और न ही किसी डंडे या अन्य माध्यम से उनसे संपर्क करने का प्रयास करें।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विशेष कारण करें तो हम पाएंगे कि रामनवमी महोत्सव 6 अप्रैल 2025 - दुनियाँ के कई देशों में श्री राम जन्मोत्सव महोत्सव का आगाज़ ।मंगल भवन अमंगल हारी।द्रवदु सु दशरथ अज़रि बिहारी।। राम सिया राम। सिया राम जय जय राम।। रामायण में राम के जीवन से जुड़ी कथाओं में वर्णित अयोध्या, रामेश्वरम, भद्राचलम व सीतामढ़ी सहित पूरे विश्व में विशाल स्तरपर रामनवमी जन्म महोत्सव का आगाज़।

नरी सेमरी छाता में श्रद्धालुओं की सेवा में लगी सिविल डिफेंस मथुरा

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा : जिला अधिकारी मोहदय के आदेश अनुसार नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा के प्रभारी अपर जिला अधिकारी नमामि गंगे राजेश यादव एवं उप नियंत्रक सुमित मौर्य , चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल, डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल के नेतृत्व मे सिविल डिफेंस के वार्डन एवं स्वयंसेवक के द्वारा दूर दराज से आए श्रद्धालुओं की सेवा में जुटी रही। नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा के पोस्ट वार्डन एवं आपदा मित्र अशोक यादव की क्विक रिस्पांस टीम के द्वारा फर्स्ट एड किट के साथ जगह जगह पर श्रद्धालुओं की सेवा में लगे रहे। साथ ही पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर यातायात व्यवस्था एवं भीड़ नियंत्रण करने में अपनी सेवाएं देते नजर आए ड्यूटी पर डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी, डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल, सीनियर स्टाफ ऑफीसर टू चीफ वार्डन दीपक चतुर्वेदी बैंकर, पोस्ट वार्डन अशोक यादव, मुकेश शर्मा, नरेंद्र कुमार मेहता, सुनने, प्रमोद, ज्योति, राकेश, जवर सिंह, नरेंद्र, हेमंत आदि वार्डन एवं स्वयंसेवक मौजूद रहे।

बदायूं थाना सिविल लाइन के ग्राम मझिया में एक किसान की जान लेने वाले सांड को पशु पालन विभाग, नगर पालिका, जवाहर पुरी चौकी पुलिस और पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा की टीम की मदद से सुरक्षित पकड़ कर रफियाबाद गौशाला भेजा गया।

अमेरिकी टैरिफः भारत को नुकसान या फायदा ?

हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने टैरिफ की घोषणा की है। गौरतलब है कि ट्रंप के 60 देशों पर पारस्परिक टैरिफ लगाया है। इनमें भारत भी शामिल है। अमेरिका ने भारत पर 27 प्रतिशत टैरिफ लगाने का फैसला किया है। यहां यदि हम टैरिफ की बात करें तो यह वस्तुओं के आयात पर लगाए जाने वाला सीमा शुल्क या आयात शुल्क है, जिसे आयातक की तरफ से सरकार को देना होता है। आम तौर पर कंपनियां इनका बोझ उपयोगकर्ताओं पर डालती हैं। दूसरे शब्दों में, इसका असर आम लोगों की जेब पर ही पड़ता है। वहीं यदि हम जबाबी टैरिफ की बात करें तो यह शुल्क व्यापारिक साझेदारों की तरफ से लगाए जा रहे शुल्क में वृद्धि या उच्च शुल्क के जवाब में लगाया जाता है। ट्रंप की टैरिफ घोषणा से वैश्विक व्यापार पर एक नया असर पड़ना स्वाभाविक ही है। टैरिफ मैन द्वारा टैरिफ की घोषणा के बाद शेयर बाजार में भी गिरावट देखी गई। पाठकों को बताता चलूं कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के रेसिप्रोकल टैरिफ का सीधा असर भारतीय शेयर बाजार पर देखने को मिला है और मार्केट ओपन होने के साथ ही बीएसई सेंसेक्स व एनएसई निफ्टी बुरी तरह टूट गए ।शेयर बाजार में गिरावट के साथ ही इंडियन करेंसी भी गुरुवार (3 अप्रैल 2025) को टूटी है और अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 26 पैसे गिरकर 85.78 पर आ गया। न केवल भारतीय बाजार बल्कि यूएस स्टोक मार्केट भी क्रैश हुआ। पाठकों को बताता चलूं कि गुरुवार को एस एंड पी 500 में वर्ष 2020 के बाद से सबसे बड़ी एक दिन की गिरावट दर्ज की गई। डाऊ जोन्स इंडस्ट्रियल एवरेज 4.0% गिरावट के साथ 40,545.93 पर बंद हुआ। इसने 1,600 अंकों से अधिक का गोता लगाया। ट्रंप के टैरिफ ने निवेशकों में दहशत फैला दी है, और बाजार को लग रहा है कि इससे मंदी, महंगाई और कमजोर मुनाफे का दौर शुरू हो सकता है। कुल मिलाकर अमेरिकी बाजार छह प्रतिशत तक गिरा। मार्केट कैप करीब 2 ट्रिलियन डॉलर घट गया। यहां तक कि एप्पल और नाइकी के शेयर 15 प्रतिशत तक टूट गये। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि एप्पल के आईफोन मुख्य रूप से चीन में बनाए जाते हैं और ट्रंप के टैरिफ का सबसे बड़ा असर भी चीन पर ही पड़ा है। बहरहाल, गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में भारत पर 26 प्रतिशत 'रियायती पारस्परिक शुल्क' लगाने की घोषणा की है, जो भारत द्वारा अमेरिकी वस्तुओं पर लगाए गए 52 प्रतिशत शुल्क का आधा है। पाठकों को बताता चलूं कि ट्रंप ने भारत को 'बहुत कठोर' बताया है। उन्होंने यह बात कही है कि, 'यह मुक्ति दिवस है, एक ऐसा दिन जिसका हम लंबे समय से इंतजार कर रहे थे। 2 अप्रैल 2025 को हमेशा उस दिन के रूप में याद किया जाएगा, जिस दिन अमेरिकी इंडस्ट्री का पुनर्जन्म हुआ, जिस दिन अमेरिका ने नियति को पुनः प्राप्त किया और जिस दिन हमने अमेरिका को फिर से समृद्ध बनाना शुरू किया।' साथ ही, उन्होंने यह भी कहा है कि 'हम अमेरिका को अच्छा और समृद्ध बनाएंगे।'

बहरहाल, जो भी हो डोनाल्ड ट्रम्प की टैरिफ घोषणा से वैश्विक व्यापार पर असर पड़ता लाज़िमी ही है। पाठक जानते होंगे कि ट्रंप ने भारत ही नहीं बल्कि दुनिया के तकरीबन सभी प्रमुख देशों पर पारस्परिक टैरिफ की घोषणा की है। उनकी घोषणा के तुरंत बाद ही बाजारों में हलचल देखने को मिली। अमेरिका का दावा है कि भारत पर 26 फीसदी का शुल्क, भारत द्वारा अमेरिकी उत्पादों पर लगाए गए 52 फीसदी टैरिफ के जवाब में है, जो उनके अमेरिका फर्स्ट एजेंडे का ही हिस्सा है। दरअसल, ट्रंप यह बात बहुत पहले से ही कहते आए हैं कि यदि कोई देश अमेरिकी सामान पर ज्यादा आयात शुल्क लगाता है, तो अमेरिका भी उस देश से आयात होने वाली चीजों पर ज्यादा टैरिफ लगाएगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत अमेरिकी वस्तुओं पर सबसे ज्यादा टैरिफ लगाने वाले देशों में शामिल है और इसे देखते हुए हाल ही में ट्रंप द्वारा लगाया गया जवाबी शुल्क अप्रत्याशित नहीं है। वास्तव में भारत अमेरिका को काफी वस्तुओं का निर्यात करता है। पाठकों को बताता चलूं कि अमेरिका की नई टैरिफ पॉलिसी के तहत भारतीय उत्पादों पर 27 फीसदी तक टैरिफ लगाया जाएगा। इसमें एक यूनिवर्सल 10 फीसदी टैरिफ भी शामिल है, जो 5 अप्रैल से प्रभावी हो जाएगा। वहीं, 27 फीसदी टैरिफ 9 अप्रैल से लागू होगा। अमेरिका द्वारा घोषित इस नए टैरिफ से भारत के कई एक्सपोर्ट सेक्टर्स पर असर पड़ने की आशंका है। इनमें झींगा मछली, कालीन, गोल्ड जूलरी, चिकित्सा उपकरण जैसे उत्पाद शामिल हैं। गौरतलब है कि अमेरिका भारतीय झींगा मछली का सबसे बड़ा बाजार है और हाई टैरिफ के कारण भारतीय झींगा अमेरिकी बाजार में कम प्रतिस्पर्धी हो जाएगी। उपलब्ध जानकारी के अनुसार अमेरिका पहले से ही भारतीय झींगा पर डंपिंग-रोधी और प्रतिपूरक शुल्क लगा रहा है। भारत अपने झींगा निर्यात का 40% अमेरिका को भेजता है, जहां इसके मुख्य प्रतिस्पर्धी इक्वाडोर और इंडोनेशिया हैं। वास्तव में, कृषि क्षेत्र में अमेरिका के जवाबी टैरिफ का सबसे अधिक प्रभाव मछली, मांस और प्रसंस्कृत समुद्री भोजन के निर्यात पर पड़ेगा। वर्ष 2024 में इनका निर्यात 2.58 अरब डॉलर था। अब हालिया घटनाक्रम के बीच इस क्षेत्र पर 27.83 प्रतिशत से अधिक टैरिफ का भार बढ़ सकता है। इसी प्रकार से अमेरिका भारत से बड़ी मात्रा में कालीनों का भी आयात करता है। जानकारी के अनुसार वित्त वर्ष 2023-24 में यह (कालीन आयात) लगभग 2 अरब डॉलर का था। नए टैरिफ से इस सेक्टर पर भी व्यापक असर पड़ेगा। इतना ही नहीं अमेरिका भारत से रत्न और आभूषणों का भी बड़ी संख्या में आयात करता है ।एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार वित्त वर्ष 2023-24 में भारत ने वैश्विक स्तर पर 32.85 अरब डॉलर के रत्न और आभूषण निर्यात किए, जिसमें अमेरिका का हिस्सा 30.28% (10 अरब डॉलर) था। नए टैरिफ से इस सेक्टर पर भी बहुत असर पड़ेगा। जानकारी के अनुसार तराशे हुए हीरे पर शुल्क 0% से 20% तक और सोने के आभूषणों पर 5.5-7% तक बढ़ सकता है। इतना ही

नहीं, अमेरिका द्वारा चिकित्सा उपकरण निर्यात पर 27% टैरिफ लगाने से इस सेक्टर की ग्रोथ के लिए चुनौतियाँ पैदा हो सकती हैं। वित्त वर्ष 2023-24 में भारत का अमेरिका को चिकित्सा उपकरण निर्यात 71 करोड़ 43.8 लाख डॉलर था। संक्षेप में कहें तो टैरिफ से हमारे देश के कृषि, ऑटोमोबाइल, दवा, स्वर्ण आभूषण जैसे क्षेत्रों पर बड़ा असर हो सकता है। वहीं, रसायन और दवा क्षेत्र में यह 8.6 प्रतिशत, प्लास्टिक के लिए 5.6, वस्त्र-परिधान 1.4, हीरे, सोने व आभूषणों के लिए 13.3 फीसदी, लोहा, इस्पात और आधार धातुओं के लिए 2.5 प्रतिशत, मशीनरी व कंप्यूटर के लिए 5.3 प्रतिशत, इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए 7.2 फीसदी व ऑटोमोबाइल और ऑटो घटकों के लिए टैरिफ का यह अंतर 23.1 फीसदी है। इतना ही नहीं, प्रसंस्कृत खाद्य, चीनी और कोको निर्यात पर भी असर पड़ सकता है, क्योंकि इसमें टैरिफ अंतर 24.99 प्रतिशत है। पिछले साल इसका निर्यात 1.03 अरब डॉलर था। इसी तरह, अनाज, सब्जियां, फल और मसाले के क्षेत्र में टैरिफ अंतर 5.72 प्रतिशत है। वास्तव में, टैरिफ अंतर जितना अधिक होगा, संबंधित क्षेत्र उतना ही अधिक प्रभावित हो सकता है ।यहां पाठकों को बताता चलूं कि घरेलू उद्योग व निर्यातकों ने भारत के निर्यात पर अमेरिकी टैरिफ के असर को लेकर चिंता जताई है, क्योंकि शुल्क से बाजारों में कई वस्तुएं प्रतिस्पर्धा से बाहर हो सकती हैं। उल्लेखनीय है कि अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, लेकिन यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि चीन (34 फीसदी), वियतनाम (46 फीसदी), बांग्लादेश (37 फीसदी), थाईलैंड (36) फीसदी) और इंडोनेशिया (32 फीसदी) की तुलना में भारत पर लगाया गया टैरिफ कम ही है। इसलिए स्थिति तुलनात्मक रूप से भारत के लिए अच्छी हो सकती है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि वित्त वर्ष 2021-22 से 2023-24 तक अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार था। अमेरिका की भारत के कुल माल निर्यात में हिस्सेदारी करीब 18%, आयात में 6.22% और द्विपक्षीय व्यापार में 10.73% है ।अमेरिका के साथ 2023-24 में भारत का व्यापार अधिशेष (आयात व निर्यात में अंतर) 35.32 अरब अमेरिकी डॉलर था। बहरहाल, यहां यह भी उल्लेखनीय है कि रेसिप्रोकल टैरिफ की घोषणा में फार्मास्युटिकल्स उद्योग को छूट दी गई है ।गौरतलब है कि हिमाचल प्रदेश देश का सबसे बड़ा फार्मा हब है। बद्दी, परवाणू और पांवटा साहिब में देश की सभी प्रतिष्ठित कंपनियां दवाओं का उत्पादन कर रही हैं। पाठकों को बताता चलूं कि ट्रंप ने जब टैरिफ की घोषणा की तो भारत पर 27 फीसदी टैरिफ तो लगाया लेकिन फार्मा उद्योग को इससे पूरी तरह बाहर रखा गया, जो राहत की बात है, लेकिन हिमाचल के बागवानों को शंका है। दरअसल, यह आशंकाएं जताई जा रही हैं कि अमेरिकी दबाव में भारत सरकार सेब पर आयात शुल्क घटा सकती है। इससे हिमाचल प्रदेश के सेब बागवान चिंतित हो गए हैं। पाठकों को बताता चलूं कि दवा के अलावा सेमीकंडक्टर, तांबे के अलावा तेल, गैस, कोयला, एलएनजी जैसे ऊर्जा उत्पाद टैरिफ के दायरे से बाहर रखे गए हैं। बहरहाल, यदि हम यहां पर भारत पर शुल्क की बात करें तो इस्पात, एल्युमीनियम और वाहनों तथा कलपुर्जों पर पहले से ही 25% शुल्क लागू है। शेष उत्पादों पर 5 से 8 अप्रैल के बीच 10% का मूल (बेसलाइन) शुल्क लगेगा और 9 अप्रैल से बढ़कर 27% हो जाएगा। भारत के लिए अमेरिका द्वारा लगाया टैरिफ कितनी बड़ी चुनौती है तो इस संबंध में विशेषज्ञों का मानना है कि भारत की स्थिति अपने प्रतिस्पर्धी देशों की तुलना में बेहतर है। भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में अपनी भूमिका बढ़ाने का अवसर मिल सकता है। लेकिन इसके लिए उसे व्यापार को आसान बनाना होगा, लॉजिस्टिक्स और बुनियादी ढांचे में निवेश करना होगा। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि अमेरिका ने जो टैरिफ लगायें हैं वे डब्ल्यूटीओ के अनुरूप नहीं हैं। मसलन, ये शुल्क स्पष्ट तौर पर विश्व व्यापार संगठन के नियमों का उल्लंघन करते हैं। यह एमएफएन (तरजीही राष्ट्र) दायित्वों तथा बाध्य दर प्रतिबद्धताओं के भी खिलाफ हैं। सदस्य देशों को इनके खिलाफ डब्ल्यूटीओ के विवाद निपटान तंत्र का दरवाजा खटखटाने का पूरा अधिकार है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि पीएम नरेंद्र मोदी ने फरवरी में अमेरिका यात्रा के दौरान 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार 500 अरब डॉलर तक बढ़ाने की घोषणा की थी। वास्तव में, दोनों पक्षों का लक्ष्य इस साल अक्तूबर तक सौदे के पहले चरण को अंतिम रूप देना है, और उम्मीद की जानी चाहिए कि भारत की ओर से अधिकांश चर्चा इन शुल्कों के कुछ प्रतिकूल प्रभावों को कम करने पर केंद्रित होगी। कहना चाहूंगा कि टैरिफ संकट से भारत को अमेरिका के साथ अपने व्यापारिक संबंधों में विविधता लाने का अवसर प्रदान करेगा। हालांकि यह भी स्पष्ट है कि ट्रंप की रेसिप्रोक्ल टैरिफ पालिसी असल प्रभाव आने वाले समय में स्पष्ट होगा, लेकिन इसने वैश्विक व्यापार को एक नया मोड़ तो दिया ही है। निस्संदेह यह हमें हमारी आर्थिक नीतियों को फिर से परखने का समय है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज जरूरत इस बात की है कि सरकार व उद्योग मिलकर ऐसी ठोस रणनीतियां बनाएं, जिससे हम टैरिफ आपदा में निहित अवसरों का अधिकतम लाभ उठा सकें। बहरहाल, हमारे देश के लिये अच्छी बात यह है कि हमारे मुख्य प्रतिस्पर्धी-चीन, वियतनाम, बांग्लादेश और थाईलैंड पर हम से कहीं अधिक शुल्क लगाया गया है। हाल फिलहाल, सरकार को यह उम्मीद है कि वाशिंगटन के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर काम चल रहा है, जिसके जरिये घरेलू उद्योग को टैरिफ वृद्धि के दुष्प्रभावों से निपटने में मदद मिल सकती है। वास्तव में, अतीत से सबक लेकर भारत को नई स्थितियों का लाभ उठाने के लिये बेहतर ढंग से तैयार रहना चाहिए। हमें अपने पड़ौसी चीन से भी सतर्क रहने की आवश्यकता है, क्यों कि चीन भारत को कहीं न कहीं प्रतिस्पर्धा के बाजार में भारत को शिकस्त दे सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि चीन कम लागत वाले सामानों के जरिये भारतीय बाजारों को प्रभावित करने की कोशिश कर सकता है। बहरहाल, कहना चाहूंगा कि आज भारत दुनिया का सबसे अधिक युवा आबादी वाला देश है, इसलिए हमें यह चाहिए कि हम अपनी श्रमशक्ति के बेहतर उपयोग की दिशा में गंभीरता से काम करें। हमें यह चाहिए कि हम कौशल विकास (स्किल डेवलपमेंट) पर अपना ध्यान केंद्रित करें। कहना ग़लत नहीं होगा कि कुशल कामगारों से हम वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला करने में सक्षम हो सकते हैं। इतना ही नहीं, हमें अपना विदेशी निवेश भी बढ़ाना होगा। हमें अपने डोमेस्टिक इन्वेस्टमेंट को भी गति देनी होगी। जरूरत इस बात की है कि हम अपने निर्यात को अन्य देशों में बढ़ाने के लिए काम करें, तभी हम वास्तव में अमेरिकी टैरिफ संकट का सामना करते हुए अपने देश की अर्थव्यवस्था और विकास को और अधिक गति दे पायेंगे।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर

होंडा ने एक साथ तीन मोटरसाइकिल को किया अपडेट, नए रंगों और कीमतों के साथ हुई लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में होंडा मोटरसाइकिल्स ने अपनी 350cc की बाइक रेंज CB350 H'ness CB350 और CB350RS को अपडेट किया था। अब कंपनी ने इसे नए कलर ऑप्शन और BS6 OBD2B कम्प्लायंट इंजन के साथ लेकर आई है। इन तीनों मोटरसाइकिल को नया कलर ऑप्शन मिलने के बाद और भी शानदार हो गई है। साथ ही अब यह अब E20 इथेनॉल मिश्रित फ्यूल पर भी चल सकती है।

नई दिल्ली। होंडा मोटरसाइकिल्स ने अपनी 350cc की सबसे पॉपुलर बाइक रेंज CB350, H'ness CB350 और CB350RS के 2025 वर्जन को लॉन्च किया हैं। इन बाइक को कंपनी ने अब E20 इथेनॉल मिश्रित फ्यूल पर चलने के लिए अपडेट किया गया है और इसके साथ ही नए कलर ऑप्शन भी दिए हैं। इस अपडेट के साथ ही होंडा की ये मोटरसाइकिल अब और भी आकर्षक हो गई है।

1. Honda H'ness CB350

इसे अब तीन वेरिएंट में लेकर आया गया है, जो DLX, DLX Pro और DLX Pro Chrome है।

1. DLX वेरिएंट

कीमतः 2,10,500 रुपये (एक्स-शोरूम)

कलर ऑप्शनः Pearl Deep Ground Grey और Pearl Igneous Black स्टैंडर्ड ब्लैक सीट्स के साथ

2. DLX Pro वेरिएंट

कीमतः 2,13,500 रुपये (एक्स-शोरूम)

कलर ऑप्शनः Rebel Red Metallic, Pearl Igneous Black, Pearl Deep Ground Grey

Tan कलर सीट्स के साथ

3. DLX Pro Chrome वेरिएंट

कीमतः 2,15,500 रुपये (एक्स-शोरूम)

कलर ऑप्शनः Athletic Blue Metallic, Pearl Deep Ground Grey, Pearl Igneous Black

क्रोम फेंडर्स, टैन सीट्स और फ्यूल टैंक पर यूनिक ग्राफिक्स

2, Honda CB350 (2025)

CB350 को दो वैरिएंट्स में होंडा मोटरसाइकिल ऑफर करती है, जो DLX और DLX Pro है।

1. DLX वेरिएंट

कीमतः 2,15,500 रुपये (एक्स-शोरूम)

2, DLX Pro वेरिएंट

कीमतः 2,18,850 रुपये (एक्स-शोरूम)

दोनों ही मोटरसाइकिल में एक समान कलर ऑप्शन दिया जा रहा है, जो Mat Axis Grey Metallic, Mat Dune Brown, Rebel Red Metallic, Pearl Igneous Black, Pearl Deep Ground Grey है। इसके साथ ही दोनों में ही टैन सीट्स, बॉडी कलर्ड फेंडर्स, और हेडलैम्प, मिरर, एग्जॉस्ट व सस्पेंशन पर क्रोम फिनिश को भी शामिल किया गया है।

3. Honda CB350RS

CB350RS, होंडा की 350cc सेगमेंट में सबसे स्पोर्टी बाइक है और इसे दो वैरिएंट्स में लॉन्च किया गया है, जो DLX और DLX Pro है।

1. DLX वेरिएंट

कीमतः 2,15,500 रुपये (एक्स-शोरूम)

कलर ऑप्शनः Pearl Deep Ground Grey, Pearl Igneous Black

2. DLX Pro वेरिएंट

कीमतः 2,18,500 रुपये (एक्स-शोरूम)

कलर ऑप्शनः Rebel Red Metallic, Mat Axis Grey Metallic, Pearl Igneous Black, Pearl Deep Ground Grey है।

इस वर्जन में स्लीक फेंडर्स, फोर्क गेटर्स, सिंगल-पीस सीट, और ब्लैक फिनिश एग्जॉस्ट व सस्पेंशन दिए गए हैं।

इंजन और परफॉर्मेंस

होंडा की इन तीनों मोटरसाइकिल में एक समान इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इन तीनों में ही 348.36cc, एयर-कूल्ड, सिंगल सिलेंडर, BS6 OBD2B कम्प्लायंट दिया गया है, जो 21 PS की पावर जनरेट करता है। इसके इंजन को 5-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है।

बीएमडब्ल्यू की दो सस्ती मोटरसाइकिल हुई बंद, 7 साल तक बिक्री के बाद लाइनअप से हटी

भारतीय बाजार से अपनी दो मोटरसाइकिल BMW G 310 R और G 310 GS को बंद कर दिया है। इसे भारत से हटाने के साथ ही अपनी BMW इंडिया की आधिकारिक वेबसाइट से भी हटा दिया गया है। इतना ही नहीं डीलरशिप के पास इन मोटरसाइकिल का स्टॉक भी तकरीबन खत्म हो चुका है। आइए इनके बंद होन के पीछे का कारण जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में BMW Motorrad ने अपनी सबसे किफायती मोटरसाइकिल BMW G 310 R और G 310 GS को बंद कर दिया है। इन दोनों को BMW इंडिया की आधिकारिक वेबसाइट से भी हटा दिया गया है। वहीं, भारत में कंपनी की अब 310cc रेंज में केवल G 310 RR ही बिक्री के लिए उपलब्ध है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, डीलरशिप के पास इन मोटरसाइकिल का स्टॉक भी तकरीबन खत्म हो चुका है।

BMW G 310 R

यह एक स्ट्रीट फाइटर बाइक थी जो 300cc सेगमेंट में आती थी। इसमें 312cc, लिक्विड-कूल्ड, सिंगल सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया था, जो 34PS की पावर और 28Nm का टॉर्क जनरेट करता था। भारतीय बाजार में इसकी एक्स-शोरूम कीमत 2.90 लाख रुपये थी। इसके बंद होने के पीछे का कारण इसमें कम मिलने वाली फीचर्स थे। साथ ही इसका परफॉर्मेंस भी औसत था। BMW की यह बाइक ₹Value for Money₹ के पैमाने पर कमजोर पड़ गई।

BMW G 310 GS

इसे एक टूरिंग और ऑफ-रोड मोटरसाइकिल के रूप में जाना जाता था। इसका लुक काफी प्रीमियम था, लेकिन यह KTM 390 Adventure और Royal Enfield Himalayan 450 से काफी पीछे रह गई। यह दोनों ही मोटरसाइकिल इससे काफी कम कीमत में आती थी। वहीं, G 310 GS की एक्स-शोरूम कीमत 3.30 लाख रुपये काफी ज्यादा लगता है।

क्या G 310 RR भी होगी बंद

BMW G 310 R और G 310 GS की बिक्री में भारत में बंद होने के बाद BMW सिर्फ G 310 RR को बेच रही है। यह भी TVS Apache RR 310 पर बेस्ड है और उसी इंजन और डिजाइन का इस्तेमाल करती है। इन दोनों बाइक में अंतर सिर्फ BMW के बैज और मामूली बदलावों का है। दोनों ही कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आती है, लेकिन TVS का वर्जन ज्यादा एडवांस है। ऐसे में यह अंदेशा लगाया जा रहा है कि यह भी जल्द ही बंद हो सकती है।

BMW का 450cc पैरेलल ट्विन इंजन

कंपनी ने Auto Expo 2025 में BMW F 450 GS कॉन्सेप्ट को शोकेस किया है। यह बाइक नए 450cc पैरेलल ट्विन इंजन प्लेटफॉर्म पर बेस्ड है। आगे आने वाली BMW की मोटरसाइकिलों में यह इंजन देखने के लिए मिल सकता है, जो नई एडवेंचर और नेकेड स्ट्रीटफाइटर बाइक हो सकती है।

टाटा की इलेक्ट्रिक कार पर बंपर डिस्काउंट ऑफर, मिल रही 1.5 लाख तक की छूट

टाटा मोटर्स अप्रैल 2025 के महीने में अपनी इलेक्ट्रिक कारों पर जबरदस्त डिस्काउंट दे रही है। इस डिस्काउंट ऑफर में ग्रीन बोनस एक्सचेंज या स्क्रैपेज बोनस और लॉयल्टी बोनस शामिल है। कंपनी अपनी MY24 और MY25 मॉडल पर डिस्काउंट ऑफर दे रही है। आइए जानते हैं कि Tata Motors की इलेक्ट्रिक कारों पर कितना डिस्काउंट मिल रहा है।

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स ने अप्रैल 2025 के महीने में अपनी इलेक्ट्रिक कारों पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। इसक ऑफर के तहत कंपनी 1.5 लाख रुपये तक की छूट दे रही है। इस ऑफर में ग्रीन बोनस, एक्सचेंज या स्क्रैपेज बोनस और लॉयल्टी बोनस शामिल है। टाटा मोटर्स की तरफ से दी जा रही इस छूट में कुछ ऑफर को क्लब नहीं किया जा सकता है। आइए जानते हैं कि Tata Motors के अलग-अलग इलेक्ट्रिक कार पर कितनी छूट दी जा रही है।

1. Tata Nexon EV

यह टाटा की सबसे पॉपुलर इलेक्ट्रिक SUV है। इसपर कंपनी 1.20 लाख रुपये तक की छूट दे रही है। इस ऑफर में MY24 और MY25 मॉडल शामिल है। इसके MY24 मॉडल पर 40,000 रुपये कंज्यूमर ऑफर, 30,000 रुपये स्क्रैपेज या एक्सचेंज बोनस दिया जा रहा है। इसपर 50,000 रुपये टाटा ईवी ग्राहकों के लिए और 20,000 रुपये ICE ग्राहकों के लिए लॉयल्टी बोनस मिल रहा है। इसके MY25 मॉडल पर 30,000 रुपये का एक्सचेंज या स्क्रैपेज बोनस दिया जा रहा है।

2. Tata Punch EV

टाटा की इस इलेक्ट्रिक कार पर 70,000 रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके MY24 मॉडल पर कंज्यूमर ऑफर 20,000 रुपये, एक्सचेंज या स्क्रैपेज बोनस 30,000 रुपये छूट मिल रही है। इसके MY25 मॉडल पर 40,000 रुपये का कंज्यूमर ऑफर और 10,000 रुपये का अतिरिक्त स्क्रैपेज या एक्सचेंज बोनस दिया जा रहा है।

3. Tata Tiago EV

टाटा की यह सबसे किफायती इलेक्ट्रिक कार है। इसपर 1.30 लाख रुपये तक का डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके MY24 मॉडल पर 85,000 रुपये का कंज्यूमर ऑफर, 15,000 रुपये का अतिरिक्त कंज्यूमर बोनस और 30,000 का स्क्रैपेज या एक्सचेंज बोनस दिया जा रहा है। इसके MY25 मॉडल पर 40,000 रुपये का कंज्यूमर ऑफर और 10,000 का स्क्रैपेज या एक्सचेंज बोनस मिल रहा है।

4. Tata Curvv EV

टाटा मोटर्स की यह नई और स्टाइलिश इलेक्ट्रिक कार है। इसपर अप्रैल 2025 में 1.50 लाख रुपये का डिस्काउंट ऑफर दिया जा रहा है। इसके MY24 मॉडल पर 70,000 रुपये का कंज्यूमर ऑफर (सभी वेरिएंट्स पर), 30,000 रुपये का स्क्रैपेज या एक्सचेंज बोनस और 50,000 रुपये तक का लॉयल्टी बोनस दिया जा रहा है। इसके MY25 मॉडल पर केवल 30,000 रुपये का एक्सचेंज या स्क्रैपेज बोनस दिया जा रहा है।

सीडान vs एसयूवी: फीचर्स, माइलेज और कीमत में कौन-सी कार बेस्ट?

एसयूवी और सेडान दोनों के ही अपने-अपने फायदे हैं। SUV ज्यादा ग्राउंड क्लीयरेंस रफ-टफ लुक और बेहतर रोड प्रजेंस देती है जबकि Sedan बेहतर माइलेज स्मूद हैंडलिंग और कम मेंटेनेंस का विकल्प है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि SUV और Sedan में से आपकी जरूरत के हिसाब से सही रहेगी।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत में बहुत से लोग कार खरीदने से पहले यह जरूर सोचते हैं कि उन्हें SUV लेना चाहिए या फिर Sedan? भारत में जहां एक तरफ SUV ((Sports Utility Vehicle) का क्रेज दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है, वहीं सेडान अब भी अपनी स्टाइल, राइड क्वालिटी और परफॉर्मेंस के लिए जानी जाती हैं। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों के बीच के अंतर को बताने के साथ ही यह भी बता रहे हैं कि आपकी जरूरत के हिसाब से कौन सी कार आपके लिए सही रहेगी।

1. बॉडी टाइप और ग्राउंड क्लीयरेंस

SUV: इसकी बॉडी ऊंची होती है और इसका ग्राउंड क्लीयरेंस भी 180mm से 220mm तक का होता है। इसकी वजह से यह खराब सड़कों, गड्ढों और स्पीड ब्रेकर्स काफी आराम से चल सकती है। यह अक्सर अक्सर बॉडी-ऑन-फ्रेम (Body-on-Frame) चेसिस बेस्ड होती है, जो इन्हें ज्यादा मजबूती और ऑफ-रोड फ्रेंडली बनाती है।

Sedan: SUV के मुकाबले सेडान में 150mm से 180mm तक का ग्राउंड क्लीयरेंस मिलता है। यह मोनोकॉक चेसिस पर बेस्ड होती है, जिसकी वजह से ज्यादा हल्की, ज्यादा फ्यूल एफिशिएंट और स्पीड में भी स्थिर होकर चलती हैं।

2. परफॉर्मेंस और ड्राइविंग डायनामिक्स

SUV: इसमें ज्यादातर टॉर्क इंजन का इस्तेमाल किया जाता है, जो ज्यादा पावर जनरेट करते हैं। खासकर जब आप हाईवे या फिर ऑफ-रोड पर ड्राइव कर रहे हों। SUV का हाई सेंटर ऑफ ग्रेविटी तेज स्पीड में कम स्थिर रहता है।

Sedan: इन्हें काफी लो सेंटर ऑफ ग्रेविटी और एयरोडायनामिक डिजाइन दिया जाता है, जो इन्हें बेहतर हैंडलिंग और स्टेबिलिटी देता है। यह मोड़ पर SUV से बेहतर ग्रिप और राइड क्वालिटी देती है।

3. माइलेज और मेंटेनेंस

SUV: इनका वजन काफी ज्यादा होता है और इनके टायर्स भी बड़े होते हैं। इसकी वजह से इनमें माइलेज कम (13–18 kmpl) मिलती है। इसके साथ ही SUV का मेंटेनेंस भी काफी ज्यादा होता है।

Sedan: इनकी बॉडी काफी हल्की और एरोडायनामिक्स होती है, जिसकी वजह से यह 16–22 kmpl तक का माइलेज देती है। इनका मेंटेनेंस भी SUV की तुलना में काफी कम होता है।

4. स्पेस और कम्फर्ट

SUV: इसमें बड़ा सस्पेंशन और बड़ी विंडो मिलती है, जो आपको बड़ी कार वाली फील देती है। इसमें दी जाने वाली हाई सीटिंग पोजिशन बुजुर्गों के लिए भी बेहतर होती है। कई SUV में तो रियर एसी वेंट, सनरूफ, वेंटिलेटेड सीट्स जैसे फीचर्स भी दिए जाते हैं।

Sedan: इसके C और D सेगमेंट में रियर लेगरूम और बूट स्पेस काफी बेहतर मिलता है, जिसकी वजह से पीछे बैठने वाले पैसेंजर काफी आराम से सफर कर सकते हैं। इतना ही नहीं कई सेडान में तो 500 लीटर तक का बूट स्पेस मिलता है।

5. फीचर्स और टेक्नोलॉजी

हाल के समय में आने वाली दोनों सेगमेंट की गाड़ियों में ADAS, डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 360 कैमरा, वायरलेस Android Auto/Apple CarPlay, कनेक्टेड कार टेक्नोलॉजी जैसे मॉडर्न फीचर्स देखने के लिए मिलते हैं। हालांकि, SUV में अक्सर साइज और प्रीमियम अपील की वजह से ज्यादा फीचर्स मिलते हैं।

6. सेफ्टी फीचर्स

वर्तमान में आने वाली दोनों ही सेगमेंट की कारों में सेफ्टी फीचर्स भरपूर मात्रा में मिल रही है। दोनों सेगमेंट की गाड़ियों में 6 एयरबैग, ABS, EBD, ESP, हिल होल्ड, ट्रैक्शन कंट्रोल जैसे सेफ्टी फीचर्स दिए जा रहे हैं। इसके बावजूद लोग SUV की ऊँची बॉडी और मजबूत चेसिस की वजह से इसे ज्यादा सुरक्षित मानते हैं, लेकिन सेफ्टी रेटिंग ही असली मानक है।

आपके लिए कौन-सी कार बेस्ट?

यदि आप एक ऐसी कार की तलाश में हैं जो हर तरह की सड़कों पर आसानी से चले, जिसमें ज्यादा जगह हो और जिसकी उपस्थिति दमदार हो, तो SUV आपके लिए सही विकल्प है। वहीं, अगर आप एक ऐसी गाड़ी चाहते हैं जो ड्राइविंग में मजा दे, अच्छी माइलेज दे और सिटी के लिए परफेक्ट हो, तो Sedan आपके लिए उपयुक्त होगी।

कराहती कुदरत के चिंताजनक संदेश

विजय गर्ग

भूजल पृथ्वी की सतह के नीचे मिट्टी के छिद्रों और चट्टानों की दरारों में जमा पानी है, जो 'हाइड्रोलाजिकल साइकिल' हिस्सा बनता है। पानी, बारिश से जमीन में रिसकर भूमिगत जलभृतों यानी पानी से भरी हुई चट्टानों या असंगठित तलछट, जिससे कुओं और झरनों तक आसानी से पहुंचता है। इस तरह अच्छी गुणवत्ता वाला पानी फिर भरता है।

कई बाढ़, बारिश, तपिश, सूखा, कहने को कुदरती घटनाएं, लेकिन जिस तरह अब इनका रौद्ररूप मौसम- बेमौसम दिखने लगा है, वह चिंताजनक है। बीते साल बाढ़, वनों की आग की बेतहाशा घटनाओं ने देशों को झकझोर दिया। बाढ़ से भारत से लेकर केन्या तक आम जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ। मैक्सिको से लेकर पाकिस्तान और दूसरे कई देश उच्च तापमान से हलकान रहे। सऊदी अरब में हज के दौरान असहनीय गर्मी से 1300 से अधिक लोगों की जान चली गईं। बढ़ते तापमान से जंगलों में बार-बार आग लगने की भयावह स्थितियां बनीं। अमेरिका के कैलिफोर्निया का झुलसना सबने देखा। दस लाख एकड़ से ज्यादा जमीन खाक हो गई। तूफान से कई देशों में तबाही के मंजर दिखे। ये घटनाएं न तो साधारण हैं और न सिर्फ प्राकृतिक । । पहले भी मौसम का प्रकोप दिखता था, लेकिन भयावहता का ऐसा मंजर यदा- कदा ही दिखा। इसके कारणों को जानते-समझते हुए भी हमारे अनजान बने रहने से प्राकृतिक आपदाएं दिनोंदिन और भयावह होती जा रही हैं। एक शोध ने वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों और प्रकृति को लेकर चिंतित संगठनों की नींद उड़ा है। कोरियाई भू-भौतिकी विशेषज्ञ वियन से ओ र उनके सहयोगियों का 'जियोफिजिकल रिसर्च रेसचं लेटर्स' में प्रकाशित शोध बेहद परेशान करने वाला है। । भूजल दोहन के अनुपात वापस धरती में नहीं पहुंच रहा है। इससे पृथ्वी के नाजुक संतुलन पर हैरान कर देने ने वाले प्रभाव दिखे। पृथ्वी लगभग 80 सेंटीमीटर यानी 31.5 इंच तक झुक गई है। पानी के धरती से निकाले जाने के चलते, बड़े जल द्रव्यमान के विस्थापन पृथ्वी के घूर्णन अक्ष को लगभग 80 सेंटीमीटर पूर्व की ओर खिसक गया। शोधपत्र यह भी बताता है कि पानी 1993 से 2010 के बीच, पृथ्वी के घूर्णन अक्ष यह विचलन यानी झुकाव प्रति वर्ष 4.36 सेंटीमीटर की दर से बढ़ा। इस दौरान पृथ्वी से करीब 2,150 गीगाटन भूजल निकाला गया। यही पृथ्वी के और झुकने का कारण है। निश्चित रूप से यह अब भी निरंतर बढ़ रहा होगा।

भूजल पृथ्वी की सतह के नीचे मिट्टी के छिद्रों और चट्टानों की दरारों में जमा पानी है, जो 'हाइड्रोलाजिकल साइकिल' हिस्सा बनता है। पानी, बारिश से जमीन में रिसकर भूमिगत जलभृतों यानी पानी से भरी हुई चट्टानों या असंगठित तलछट, जिससे कुओं और झरनों तक आसानी से पहुंचता है। इस तरह अच्छी गुणवत्ता वाला पानी फिर भरता है। यही जलभृत महत्त्वपूर्ण मीठे जल भंडार होते हैं ये पीने, सिंचाई और औद्योगिक जरूरतों को पूरा करते हैं। धरती की धुरी का बदलना भले मामूली लगे, लेकिन भूगर्भीय हलचल के तौर पर ऐसे मामूली बदलाव बड़े घातक पर्यावरणीय परिणामों के जनक बन सकते हैं। पानी का पुनर्वितरण विभिन्न क्षेत्रों, यहां तक कि समुद्र के स्तर तक में परिवर्तन को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित कर सकता है। अभी इससे ग्रह के झुकाव में बड़ा बदलाव आया और पानी का ज्यादातर हिस्सा वापस महासागरों में चला गया। नतीजतन, समुद्र का स्तर बढ़ गया। पृथ्वी के घूर्णन ध्रुव में होने वाले परिवर्तनों के अध्ययन से बड़े पैमाने पर जल भंडारण में होने वाले परिवर्तनों की जानकारी मिलती है। नासा के अनुसार, पृथ्वी का मूल झुकाव ही अलग-अलग

मौसमों का जनक है, जो मंगल ग्रह के आकार की वस्तु, थिया के टकराने निर्मित हुआ था। इस ब्रह्मांडीय टकराव ने पृथ्वी को अपनी धुरी पर स्थायी रूप से झुका दिया, जिससे वसंत, ग्रीष्म, शरद और शीत ऋतुओं का चक्र बना। नवीन शोध के अनुसार, ताजा झुकाव मौसमों को तो नहीं बदलेगा, लेकिन यह वैश्विक जलवायु 'पैटर्न' को प्रभावित जरूर करेगा । यही बदलता जलवायु 'पैटर्न' प्राकृतिक आपदाओं को न्योता है। इससे ग्रह की आंतरिक प्रणालियां, यहां तक कि चुंबकीय क्षेत्र भी प्रभावित होंगे, जो हमें हानिकारक सौर विकिरण से बचाते हैं। ऐसी घटनाओं की अप्रत्याशित वृद्धि कभी भी बड़ी त्रासदी बन सकती है। दुनिया के पर्यावरण संतुलन में हिमालय का बड़ा योगदान है। इसकी पर्वत श्रृंखला दुनिया में सबसे ऊंची हैं और ग्लेशियरों से निकलने वाली सदाबहार नदियां भारत, चीन, नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, xअफगानिस्तान की ग्रामीण कृषि अर्थव्यवस्था की जीवनदायिनी बनकर वहां की सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत की वाहक भी हैं। मगर दुखद है कि जलवायु परिवर्तन से हिमालयी क्षेत्रों में बारिश और बर्फबारी अनियमित हो गई है। ऐसे बदलावों के कारण तापमान बढ़ने लगा, जिससे ग्लेशियर पिघलने की गति भी बढ़ी। इससे कई नदियों के अस्तित्व पर संकट आ खड़ा हुआ। अठारहवीं सदी में विकसित प्रकृति-विरोधी मानवीय गतिविधियों के चलते समूचे विश्व में अंधाधुंध कोयला, जीवाश्म ईंधन, पेट्रोल-डीजल की खपत होने लगी। इससे ग्रीन हाउस गैसों में खासी वृद्धि हुई और ग्लेशियर पिघलने की प्रक्रिया तेजी से बढ़ी। दो सौ साल पहले तक सिर्फ प्राकृतिक कारणों से ग्लेशियर प्रभावित होते थे। प्राकृतिक तरीके से स हुए बदलाव मानव और दूसरे दूसरे जीव-जंतुओं को वातावरण के अनुसार ढलने का समय मिल जाता है, लेकिन जब प्रकृति-विरोधी मानवीय गतिविधियों से ऐसा होता है, तो घातक नतीजे सामने आते हैं। बीते वर्ष जून-जुलाई में गर्मी के पिछले सभी रेकार्ड ध्वस्त हो गए, नवंबर बेहद गर्म महीना बना चिंताजनक यह भी है कि दो दशक में ही धरती के 270 अरब टन ग्लेशियर पिघल गए। तापमान ऐसे ही बढ़ता रहा, तो साल 2100 तक 80 फीसद ग्लेशियर खत्म हो जाएंगे।

'नासा' का 2018 का एक और खुलासा चिंताजनक है। मध्य चीन में यांनी नदी के मार्ग पर 'श्री गार्जेस' बांध बनने के बाद पृथ्वी के घूमने की गति घटी है। यह बांध सबसे बड़ी मानवीय संरचनाओं में एक है, जो यांग्त्जी नदी से 185 मीटर ऊंचा और दो किलोमीटर से ज्यादा लंबा है। इसकी क्षमता 40 अरब घन मीटर जल संग्रहण की है। यानी मानवीय विदूपण के पर्यावरण पर प्रभाव के चलते धरती के घूमने 1 रफ्तार में 0.06 माइक्रोसेकंड की कमी आई इससे समझ आता है मनुष्य बनाई चीजें पृथ्वी की दिनचर्या या प्राकृतिक प्रक्रियाओं को कैसे प्रभावित कर रही हैं। वैज्ञानिक और पर्यावरणविद इस विशाल जलाशय की आलोचना करते रहे हैं। अतार्किक भूजल दोहन से धरती का अप्राकृतिक झुकाव चिंताजनक है। हाल की प्राकृतिक आपदाओं ने न केवल जन-जीवन, बल्कि आजीविका को भी प्रभावित किया है। तुरंत, भूजल दोहन के अनुपात में पानी न मिलने से धरती के झुकाव पर अध्ययन और शोधकर्ताओं गंभीर लेने होंगे। अभी ज्यादा कुछ नहीं बिगड़ा है। समूचे विश्व को एकजुट होना होगा। ये घटनाएं भले बहुत छोटी हों, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी भी आपदा या महामारी की शुरुआत छोटे रूप में ही होती है, जो तत्काल नियंत्रित न कर पाने के चलते भयावह हो जाती है। हो सकता है कि पृथ्वी का और झुकना, भूजल में जबरदस्त गिरावट, बाढ़ बारिश, सूखा- तूफान, झुलसाती गर्मी और गलाती ठंड प्रकृति के इशारे हों। समझकर भी नासमझ बनना, अपने विनाश की गाथा स्वयं लिखने जैसा है।

पेशेवर प्रवेश परीक्षा की तैयारी कैसे करें

विजय गर्ग

भारत में पेशेवर पाठ्यक्रमों में सीटों के लिए लड़ाई बहुत प्रतिस्पर्धी रही है, जिसमें प्रवेश परीक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हालांकि, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और सीमित सीटों के साथ, ये परीक्षाएं कई छात्रों के लिए तनाव, चिंता और निराशा का स्रोत बन गई हैं।

संख्या बताती है कि भारत में पेशेवर पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश परीक्षा अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है, जिसमें लाखों छात्र सीमित संख्या में सीटों के लिए मर रहे हैं। सफल होने के लिए, छात्रों को अपने विषयों में एक मजबूत नींव रखने की आवश्यकता है, परीक्षा के लिए अच्छी तरह से तैयार रहें, और समय प्रबंधन और परीक्षा लेने के लिए एक अच्छी रणनीति रखें।

संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई), राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (एनईईटी), कॉमन एडमिशन टेस्ट (कैट) और ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट) विभिन्न क्षेत्रों में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए कुछ लोकप्रिय प्रवेश परीक्षा हैं।

ये परीक्षा छात्रों के शैक्षणिक कौशल का परीक्षण करती है और दबाव और समय प्रबंधन कौशल को संभालने की उनकी क्षमता का मूल्यांकन करती है।

इन प्रवेश परीक्षाओं की प्रतिस्पर्धा का प्राथमिक कारण शीर्ष स्तरीय कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में उपलब्ध सीटों की सीमित संख्या है। इन संस्थानों में प्रवेश को सुरक्षित करने में असमर्थ छात्रों के पास सीमित विकल्प हैं, जो उनके भविष्य की कैरियर की संभावनाओं के लिए एक महत्वपूर्ण झटका हो सकता है।

देश के कई हिस्सों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और अवसरों की कमी प्रतिस्पर्धा को जोड़ती है। नतीजतन, कम विशेषाधिकार प्राप्त पृष्ठभूमि के छात्रों को अपने अधिक विशेषाधिकार प्राप्त समकक्षों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

युक्तियाँ और रणनीतियाँ

समय प्रबंधनः यह सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। छात्रों को एक अध्ययन कार्यक्रम बनाना चाहिए और उससे चिपके रहना चाहिए। प्रत्येक विषय और विषय के लिए समय आवंटित करें और तदनुसार अध्ययन करें।

आत्म-अनुशासनः इन परीक्षाओं के लिए अनुशासन और समर्पण की आवश्यकता होती है। यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें प्राप्त करने की दिशा में काम करें। ध्यान भटकाने से बचें और अपनी पढ़ाई पर ध्यान दें।

नियमित अभ्यासः इन परीक्षाओं में सफलता के लिए यह आवश्यक है। अधिक से अधिक अभ्यास प्रश्न और पिछले वर्ष के पेपर हल करें। इससे आपको परीक्षा पैटर्न को समझने और अपनी समस्या को सुलझाने के कौशल में सुधार करने में मदद मिलेगी।

आकाओं से मार्गदर्शन की मांगः आकाओं छात्रों को मार्गदर्शन और सलाह प्रदान कर सकते हैं । छात्रों को अपनी पढ़ाई में कठिनाइयों का सामना करने पर अपने शिक्षकों, कोचिंग सेंटर या ऑनलाइन ट्यूटर की मदद लेनी चाहिए।

ऑनलाइन अध्ययन सामग्रीः ये आसानी से सुलभ हैं और छात्रों के लिए एक उत्कृष्ट संसाधन हो सकते हैं। वे संशोधन और अभ्यास प्रश्नों के लिए ऑनलाइन अध्ययन सामग्री का उल्लेख कर सकते हैं, जटिल अवधारणाओं को समझने के लिए ऑनलाइन वीडियो और व्याख्यान देख सकते हैं।

कोचिंग सेंटरः कोचिंग सेंटर एक संरचित शिक्षण वातावरण प्रदान कर सकते हैं और छात्रों को प्रभावी ढंग से परीक्षा की तैयारी करने में मदद कर सकते हैं। वे छात्रों को परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने में मदद करने के लिए मार्गदर्शन, अध्ययन सामग्री और मॉक टेस्ट प्रदान कर सकते हैं।

मॉक टेस्टः परीक्षा की तैयारी के लिए मॉक टेस्ट एक

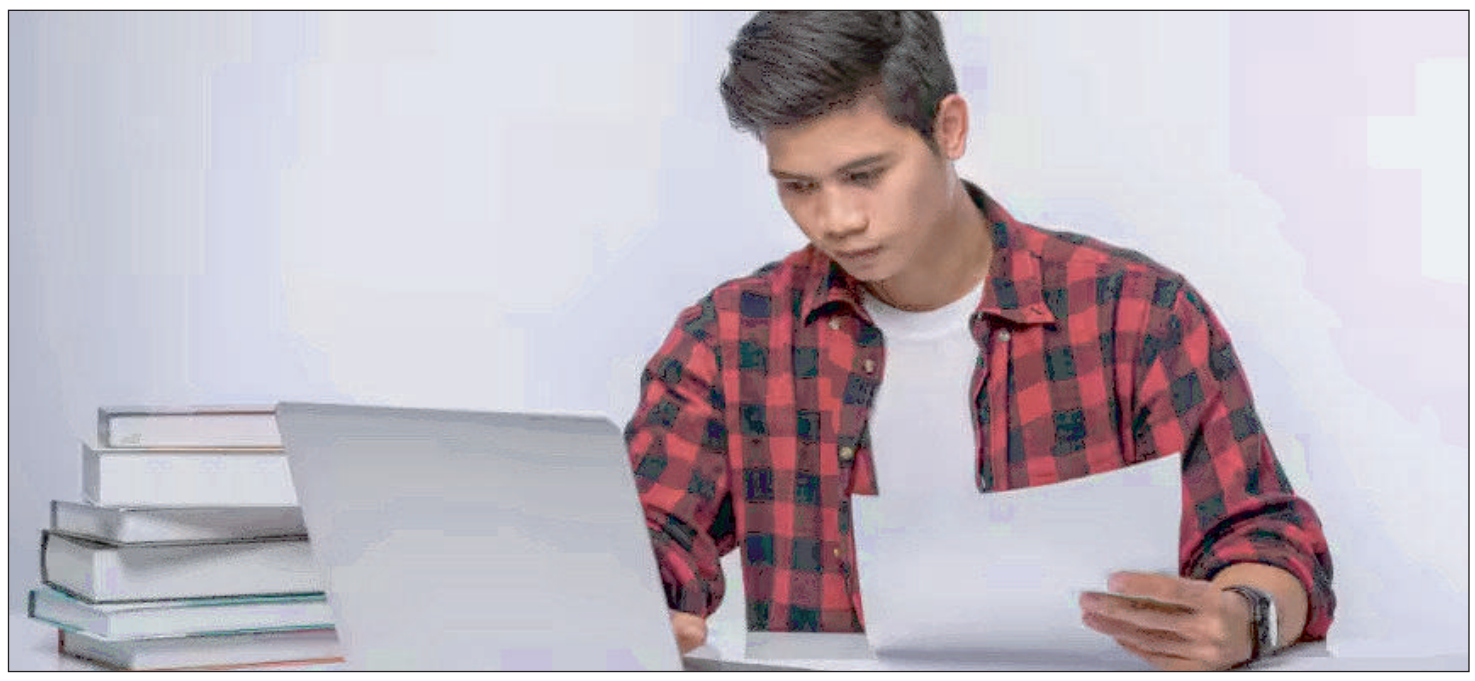

आवश्यक उपकरण है। छात्रों को अपनी तैयारी के स्तर का आकलन करने और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए नियमित रूप से मॉक टेस्ट लेना चाहिए। उन्हें अपने प्रदर्शन का विश्लेषण करना चाहिए और अपनी कमजोरियों को सुधारने की दिशा में काम करना चाहिए।

तनाव और चिंताः प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी से छात्रों में उच्च तनाव और चिंता हो सकती है। यह उनके प्रदर्शन को प्रभावित कर सकता है और बर्नआउट का कारण बन सकता है। छात्रों को नियमित ब्रेक लेना चाहिए, माइंडफुलनेस का अभ्यास करना चाहिए और योग या ध्यान जैसी शारीरिक गतिविधियों में संलग्न होना चाहिए।

प्रेरणा की कमीः प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए कभी-कभी प्रेरणा की कमी के बीच कड़ी मेहनत और समर्पण की आवश्यकता होती है। प्राप्त लक्ष्यों को निर्धारित करें, छोटी सफलताओं के लिए खुद को पुरस्कृत करें, और अपने आप को दीर्घकालिक लक्ष्यों की याद दिलाएं।

स्वास्थ्य के मुद्देः लंबे समय तक बैठने और अध्ययन करने से विभिन्न स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं, जैसे पीठ दर्द, आंखों में खिंचाव और अनिद्रा। छात्रों को संतुलित आहार खाने, नियमित रूप से व्यायाम करने और बार-बार ब्रेक लेने से स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखनी चाहिए।

'नेशनल टेस्ट अभय' शिक्षा मंत्रालय द्वारा जेईई मेन, एनईईटी और अन्य इंजीनियरिंग और मेडिकल प्रवेश परीक्षा जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए मुफ्त ऑनलाइन अभ्यास परीक्षण प्रदान करने के लिए शुरू किया गया एक मोबाइल एप्लिकेशन है। छात्र इसका उपयोग कर सकते हैं।

गहरी नींद से यकीनी बनाएं स्वस्थ : विजय गर्ग

विजय गर्ग

हर दिन की भागदौड़ के बाद एक अच्छी और सुकून भरी नींद लेना सभी के लिए बेहद आवश्यक है। लेकिन क्या हो अगर आपकी नींद अधूरी रह जाए और आपको इसका अहसास भी न हो? खर्राटे लेना या नींद के दौरान सांस रुकना कई लोगों को सामान्य लग सकता है, लेकिन यह ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया (ओएसए) जैसी गंभीर बीमारी का संकेत हो सकता है। यह समस्या न केवल आपकी दिनचर्या को प्रभावित कर सकती है, बल्कि हृदय रोग, डायबिटीज और अन्य गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण भी बन सकती है।

क्या है ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया

ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया यानी ओएसए एक ऐसी नींद संबंधी बीमारी है, जिसमें सोते समय बार-बार सांस लेने में रुकावट आती है। यह रुकावट ऊपरी सांस नली में बाधा के कारण होती है, जिससे मस्तिष्क और शरीर को पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं मिल पाती।

इस बीमारी से दुनियाभर में 1 अरब से अधिक लोग प्रभावित हैं। भारत में करीब 11 फीसदी लोग इस समस्या से जूझ रहे हैं। पुरुषों में यह समस्या महिलाओं की तुलना में दोगुनी अधिक पाई जाती है। वहीं 2 से 8 वर्ष की उम्र के 1-5 फीसदी बच्चों में भी यह समस्या देखी जाती है।

ये हैं लक्षण

यदि आप या आपके परिवार में कोई व्यक्ति ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया के लक्षणों के चलते समस्या का सामना कर रहा है, तो इसे नज़रअंदाज़ न करें। जानिये, स्लीप एपनिया के कुछ लक्षणों को जो यहां दिये जा रहे हैं-

तेज और लगातार खर्राटे आना, नींद के दौरान सांस रुकना या घुटन महसूस होना, दिनभर अत्यधिक नींद आना और थकान महसूस होना, सुबह सिरदर्द रहना, ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई और याददाश्त कमजोर होना, चिड़चिड़ापन और अवसाद जैसी मानसिक समस्याएं, हाई ब्लड प्रेशर और अन्य हृदय रोगों का खतरा तथा रात में बार-बार जागना और बेचैनी महसूस करना ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया के लक्षण हो सकते हैं।

ये हैं नींद में बाधक रोग के कारण

गुणवत्तापूर्ण नींद न आना यानी खर्राटों आदि के साथ ही लगातार नींद में बाधा आने की कुछ मूलभूत वजहें भी हो सकती हैं। कुछ विशेष कारणों से ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया का खतरा बढ़ सकता है। जैसे

मोटापा – गले और गर्दन के आसपास वसा जमा होने से सांस लेने में रुकावट आती है। उम्र – मध्यम और बुजुर्ग आयु वर्ग में यह समस्या अधिक पाई जाती है। महिलाओं को जोखिम – पुरुषों में यह समस्या अधिक होती है, लेकिन मेनोपॉज के बाद महिलाओं में भी इसका खतरा बढ़ जाता है। पारिवारिक इतिहास – यदि परिवार में किसी को यह समस्या रही है, तो इसके होने की संभावना अधिक होती है। शारीरिक बनावट – छोटे जबड़े, मोटी गर्दन, बढ़े हुए टॉन्सिल या नाक की रुकावट इस समस्या का कारण बन सकते हैं। अस्वास्थ्यकर जीवनशैली – धूम्रपान और शराब का सेवन सांस की नली की मांसपेशियों को कमजोर करता है, जिससे समस्या और गंभीर हो सकती है।

बच्चों में भी हो सकती है यह समस्या

अकसर बड़ी उम्र के पुरुषों और कुछ महिलाओं में ही नींद में बाधा का रोग पाया जाता है। लेकिन

बच्चे व किशोर भी इससे अछूते नहीं हैं। बच्चों में ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया के मुख्य कारण हो सकते हैं। मसलन-

बढ़े हुए टॉन्सिल और एडेनॉइड्स, अधिक वजन या मोटापा, जबड़े और श्वसन प्रणाली में जन्मजात विकृति, समय पर एडेनोटॉन्सिलेक्टॉमी (टॉन्सिल हटाने की सर्जरी) जैसी मामूली प्रक्रियाओं से भविष्य में होने वाली जटिलताओं को रोका जा सकता है।

बिना इलाज के ओएसए कितना खतरनाक

यदि ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया यानी ओएसए का समय पर इलाज न किया जाए, तो यह कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकता है। ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया से सेहत को होने वाले जोखिम इस प्रकार है -

हृदय रोगों का खतरा – उच्च रक्तचाप, दिल की बीमारियां और स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है। मेटाबोलिक समस्याएं – टाइप-2 डायबिटीज और इंसुलिन रेजिस्टेंस की समस्या हो सकती है। मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव – लगातार नींद की कमी से डिप्रेशन, चिंता और याददाश्त कमजोर हो सकती है। दुर्घटनाओं का खतरा – दिनभर नींद आने की वजह से वाहन और कार्यस्थल दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाती है। जीवन की गुणवत्ता पर असर – खराब नींद से सेहत, उत्पादकता और मूड पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

स्लीप एपनिया का ऐसे करें निदान

यदि आपको संदेह हो कि आपको या आपके किसी प्रियजन को ओएसए है, तो निम्नलिखित परीक्षण मदद कर सकते हैं—

क्लिनिकल मूल्यांकन – लक्षणों, मेडिकल इतिहास और जोखिम कारकों की समीक्षा। नींद परीक्षण (पॉलीसोम्नोग्राफी) – यह एक विशेष टेस्ट होता है, जिसमें सोते समय ऑक्सीजन स्तर, सांस लेने के पैटर्न और अन्य महत्वपूर्ण संकेतों की निगरानी की जाती है। यह स्लीप लैब में या घर पर किया जा सकता है।

इलाज के प्रमुख उपाय

अच्छी बात यह है कि यह समस्या पूरी तरह से ठीक की जा सकती है। जीवनशैली में बदलाव जैसे वजन कम करना, नियमित व्यायाम करना व सोने से पहले शराब और सिगरेट आदि से परहेज ओएसए के इलाज में खास तौर से मददगार हैं।

सीपीएपी थेरेपी यानी टीन्यूस पॉज़िटिव एयरवे प्रेशर : यह एक मास्क के जरिए हवा का दबाव देकर वायुमार्ग को खुला रखता है। ओएसए के लिए सबसे प्रभावी उपचारों में से एक है।

ओरल डिवाइसेज : जबड़े और जीभ की स्थिति को सही करने वाले डेंटल उपकरण, जो सांस की नली को खुला रखते हैं।

सर्जिकल विकल्प : गंभीर मामलों में टॉन्सिलेक्टॉमी, सेप्टोप्लास्टी जैसी आधुनिक सर्जरी की जाती है।

ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया (ओएसए) सिर्फ नींद से जुड़ी समस्या नहीं, बल्कि एक गंभीर स्वास्थ्य संकट भी है। समय पर पहचान और सही उपचार से न केवल इस बीमारी को नियंत्रित किया जा सकता है, बल्कि जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार लाया जा सकता है। अगर आपके आसपास कोई व्यक्ति लगातार खर्राटे लेता है, दिनभर सुस्ती महसूस करता है या ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई हो रही है, तो उसे डॉक्टर से मिलने के लिए प्रोत्साहित करें। अच्छी नींद ही स्वस्थ जीवन की कुंजी है !

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

नौवाँ नवरात्र "माँ सिद्धिदात्री"

माँ दुर्गाजी की नौवीं शक्ति का नाम सिद्धिदात्री हैं। ये सभी प्रकार की सिद्धियों को देने वाली हैं। नवरात्र-पूजन के नौवें दिन इनकी उपासना की जाती है। इस दिन शास्त्रीय विधि-विधान और पूर्ण निष्ठा के साथ साधना करने वाले साधक को सभी सिद्धियों की प्राप्ति हो जाती है। सृष्टि में कुछ भी उसके लिए अगम्य नहीं रह जाता है। ब्रह्मांड पर पूर्ण विजय प्राप्त करने की सामर्थ्य उसमें आ जाती है।

मार्कण्डेय पुराण के अनुसार अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व- ये आठ सिद्धियाँ होती हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण के श्रीकृष्ण जन्म खंड में यह संख्या अठारह बताई गई है। इनके नाम इस प्रकार हैं-

माँ सिद्धिदात्री भक्तों और साधकों को ये सभी सिद्धियाँ प्रदान करने में समर्थ हैं। देवीपुराण के अनुसार भगवान शिव ने इनकी कृपा से ही इन सिद्धियों को प्राप्त किया था। इनकी अनुकम्पा से ही भगवान शिव का आधा शरीर देवी का हुआ था। इसी कारण वे लोक में 'अर्द्धनारीश्वर' नाम से प्रसिद्ध हुए। माँ सिद्धिदात्री चार भुजाओं वाली हैं। इनका वाहन सिंह है। ये कमल पुष्प पर भी आसीन होती हैं। इनकी दाहिनी तरफ के नीचे वाले हाथ में कमलपुष्प है। प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह माँ सिद्धिदात्री की कृपा प्राप्त करने का निरंतर प्रयत्न करे। उनकी आराधना की ओर अग्रसर हो। इनकी कृपा से अनंत दुख रूप संसार से निर्लिप्त रहकर सारे सुखों का भोग करता हुआ वह मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

नवदुर्गाओं में माँ सिद्धिदात्री अंतिम हैं। अन्य आठ दुर्गाओं की पूजा उपासना शास्त्रीय विधि-विधान के अनुसार करते हुए भक्त दुर्गा पूजा के नौवें दिन इनकी उपासना में प्रवत्त होते हैं। इन सिद्धिदात्री माँ की उपासना पूर्ण कर लेने के बाद भक्तों और साधकों की लौकिक, पारलौकिक सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। सिद्धिदात्री माँ के कृपापात्र भक्त के भीतर कोई ऐसी कामना शेष बचती ही नहीं है, जिसे वह पूर्ण करना चाहे। वह सभी सांसारिक इच्छाओं, आवश्यकताओं और स्पृहाओं से ऊपर उठकर मानसिक रूप से माँ भगवती के दिव्य लोकों में विचरण करता हुआ उनके कृपा-रस-पीयूष का निरंतर पान करता हुआ, विषय-भोग-शून्य हो जाता है। माँ भगवती का परम सान्निध्य ही उसका सर्वस्व हो जाता है। इस परम पद को पाने के बाद उसे अन्य किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं रह जाती। माँ के चरणों का यह सान्निध्य प्राप्त करने के लिए भक्त को निरंतर नियमनिष्ठ रहकर उनकी उपासना करने का नियम कहा गया है। ऐसा माना गया है कि माँ भगवती का स्मरण, ध्यान, पूजन, हमें इस संसार की असारता का बोध कराते हुए वास्तविक परम शांतिदायक अमृत पद की ओर ले जाने वाला है। विश्वास किया जाता है कि इनकी आराधना से भक्त को अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, सर्वकामावसायिता, दूर श्रवण, परकामा प्रवेश, वाकसिद्ध, अमरत्व भावना सिद्धि आदि समस्त सिद्धियों नव निधियों की प्राप्ति होती है। ऐसा कहा गया है कि यदि कोई इतना कठिन तप न कर सके तो अपनी शक्तिनुसार जप, तप, पूजा-अर्चना कर माँ की कृपा का पात्र बन सकता ही है। माँ की आराधना के लिए इस श्लोक का प्रयोग होता है। माँ जगदम्बे की भक्ति पाने के लिए इसे कंठस्थ कर नवरात्रि में नवमी के दिन इसका जाप करने का नियम है।

या देवी सर्वभूतेषु माँ सिद्धिदात्री रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

अर्थ :- हे माँ ! सर्वत्र विराजमान और माँ सिद्धिदात्री के रूप में प्रसिद्ध अम्बे, आपको मेरा बार-बार प्रणाम है। या मैं आपको बारंबार प्रणाम करता हूँ। हे माँ, मुझे अपनी कृपा का पात्र बनाओ।

जय माँ सिद्धिदात्री

भगवान विष्णु के 'हरि' और 'नारायण' नामों का रहस्य

भगवान विष्णु को उनके शांत और भयानक—दोनों रूपों में दर्शाया गया है। वे भक्तवत्सल और करुणामयी हैं, जिनका शांत स्वरूप कठिन परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

ऱ्हरिऱ् नाम का अर्थ भगवान विष्णु को ऱ्हरिऱ् इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे भक्तों के पाप, अज्ञान और दुखों का हरण करने वाले हैं। ऱ्हरिः हरति पापानिऱ् शास्त्रों में वर्णित है, जिसका अर्थ है कि श्रीहरि सभी दुखों को हर लेते हैं। साथ ही, वे सांसारिक मोह, ऐश्वर्य और वासनाओं को दूर कर भक्त को भगवान से जोड़ते हैं।

'नारायण' नाम का अर्थ भगवान विष्णु को 'नारायण' इसलिए कहा जाता है क्योंकि जल (नार) उनके चरणों से उत्पन्न हुआ और वे क्षीरसागर (जल) में निवास करते हैं। 'नार' (जल) और 'अयन' (निवास स्थान) से मिलकर 'नारायण' शब्द बना। उनके पहले तीन अवतार—मत्स्य, कच्छप और वराह—भी जल से जुड़े हैं, इसलिए वे जल के देवता भी माने जाते हैं।

भगवान विष्णु के ये दोनों नाम भक्तों के कल्याण और मोक्ष का मार्ग दिखाते हैं।

।। माँ कालरात्रि ।।

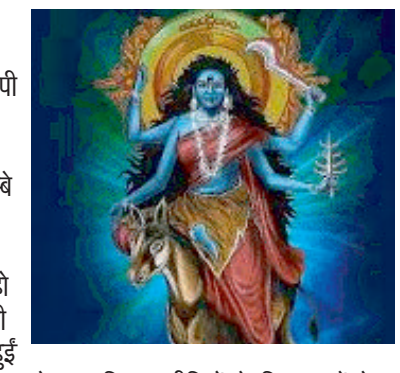

जीवन की अज्ञान और तमस भरी काल रात्रि में माँ की ज्ञान रुपी पावन ज्योति सत्मार्ग की ओर प्रेरित करती है। नवरात्रि का सप्तम दिवस माँ काली को समर्पित होता है। इसलिए ही इस दिन को कालरात्रि के नाम से भी जाना जाता है। अम्बे-जगदम्बे से आखिर माँ को काली क्यों बनना पड़ा ?

समाज पर, राष्ट्र पर, धर्म पर, संस्कृति पर जब घोर अत्याचार होने लगा, राजसत्ता असहाय बन गई। आसुरी शक्तियाँ हावी हो गई तब माँ ने परिस्थिति अनुसार स्वयं शस्त्र धारण कर आसुरी शक्तियों का ना केवल नाश किया अपितु नारी के भीतर छिपी हुईं शक्तियों से समाज को परिचित भी कराया। अन्याय से, अत्याचार से, सामाजिक कुरीतियों से, विषमताओं से लड़ने में नारी शक्ति के जागरण की बहुत बड़ी आवश्यकता है। अभिमन्यु तभी मरता है जब कोई सुभद्रा सो जाती है। एक नए भारत के निर्माण में नारी शक्ति की बड़ी भूमिका है। भक्तों के हित साधन हेतु ममतामय रूप से काली बने माँ के स्वरूप को कोटि-कोटि प्रणाम।

पाना चाहते हैं भगवान विष्णु की कृपा तो भूलकर भी ना करें ये काम

सृष्टि के जो पालनकर्ता हैं, दुखों के वो संकट हर्ता हैं। त्रिदेवों में सम्मिलित हैं वो, अनेक अवतारों में प्रचलित हैं वो। गुरुवार का दिन देवताओं के गुरु 'बृहस्पति' का दिन माना जाता है। हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार, गुरुवार के दिन भगवान विष्णु की पूजा का विधान है। इस दन सच्चे दिल से भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना करने से भक्तों के सभी कष्ट दूर होते हैं और सभी मनोकामनाएं भी पूर्ण होती हैं। मान्यता है कि जो कोई भी भगवान विष्णु की पूजा और व्रत, विधि-विधान से करता है, उससे मां लक्ष्मी भी प्रसन्न होती हैं और उसे धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती हैं। गुरुवार के दिन अगर आप व्रत नहीं रखते, सिर्फ पूजा-पाठ आदि ही करते हैं, तो कुछ बातों को ध्यान में रखना जरूरी है, नहीं तो मां लक्ष्मी और भगवान विष्णु नाराज भी हो सकते हैं। आइए जानते हैं ऐसी कुछ बातों के बारे में:-

भूलकर भी न करें यह काम मान्यता है कि इस दिन घर की साफ-सफाई के दौरान कबाड़ नहीं निकालना चाहिए। इस दिन घर में पोछा या फिर ज़मीन की पानी से धुलाई नहीं करनी चाहिए। इस दिन बाल और कपड़े आदि धोने की भी मनाही होती है। कहते हैं कि गुरुवार के दिन किसी भी चीज का दान नहीं करना चाहिए। कोशिश करें कि आज के दिन केवल पीली चीजों का ही दान करें, जैसे कि गुड़, चना, चने की दाल आदि।

न खाएं यह चीजें

केला – धार्मिक ग्रंथों के अनुसार गुरुवार के स्वामी, देवताओं के गुरु 'बृहस्पति' हैं। कहते हैं कि केले के वृक्ष में उनका वास होता है। ऐसा भी माना जाता है कि केले के पेड़ में भगवान विष्णु जी का वास होता है। इसी वजह से गुरुवार के दिन केले के वृक्ष का पूजन किया जाता है। गुरुवार का व्रत रखने वाले लोगों को इस दिन केले का सेवन नहीं करना चाहिए।

खिचड़ी – गुरुवार के दिन खिचड़ी खाने की भी मनाही होती है। कहते हैं कि गुरुवार के दिन घर में खिचड़ी बनाने या खाने से धन का नुकसान उठाना पड़ सकता है और घर में दरिद्रता भी आती है। इतना ही नहीं, इस दिन चावल खाना भी वर्जित माना जाता है।

क्या करना चाहिए? गुरुवार के दिन भगवान विष्णु के आगे देसी घी का दीपक जलाकर उनकी आरती करें। इस दिन केले के पेड़ को जल अर्पित करें। अगर आप गुरुवार का व्रत रख रहे हैं तो व्रत पारण के समय पीली चीज ही खाएं।

कहते हैं कि कुछ पाने के लिए, कुछ खोना पड़ता है। इसी तरह अच्छा फल पाने के लिए भी तपस्या करनी पड़ती है। अगर भक्त, सच्चे मन से बृहस्पतिवार के दिन नियमों का पालन करते हैं, तो उन्हें भगवान विष्णु की कृपा अवश्य प्राप्त होती है।

ध्यान चेतना की विशुद्ध अवस्था है, जहां कोई विचार नहीं होता, कोई विषय नहीं होता

साधारणतया हमारी चेतना विचारों/विषयों/कामनाओं से आच्छादित रहती है, जिस प्रकार कोई दर्पण धूल से ढका हो। हमारा मन एक सतत प्रवाह है, विचार चल रहे हैं, कामनाएं चल रही हैं, पुरानी स्मृतियों का आवागमन हो रहा है। रात-दिन यह सिलसिला अनवरत चल रहा है। नींद में भी हमारा मन चलता रहता है, स्वप्न चलते रहते हैं। यह अ-ध्यान की अवस्था है। जबकि ठीक इससे उल्टी अवस्था 'ध्यान' की है। जब कोई विचार नहीं चलते और कोई कामनाएं सिर नहीं उठातीं, वह परिपूर्ण मौन, ध्यान है। उसी परिपूर्ण मौन में ही सत्य का साक्षात्कार होता है। जब मन नहीं होता, तब जो होता है, वह ध्यान है। इसलिए मन के माध्यम से कभी ध्यान तक नहीं पहुंचा जा सकता। जैसे-जैसे हमारा बोध, कि 'मैं मन नहीं हूं', गहरा होता है, कुछ मौन/शांति की झलकें मिलनी शुरू होती हैं, उन्हीं मौन/शांत क्षणों में ही हमें स्वयं की सत्ता की अनुभूति होती है। धीरे-धीरे किसी सौभाग्यशाली क्षण/दिन में, ध्यान हमारी सहज अवस्था हो जाती है। अतः ध्यान हमारी सहज/स्वाभाविक अवस्था है और मन में जीना ही असहज अवस्था है।

स्त्री के बिना पुरुष निर्गुण है। और पुरुष के बिना स्त्री का अस्तित्व नहीं है। स्त्री सगुण है और पुरुष निर्गुण है....

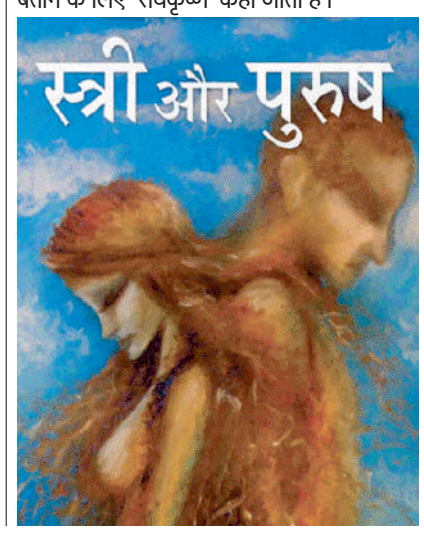

सृष्टि के लिए दोनों की एकता आवश्यक है। यह शरीर स्त्री है और चेतना पुरुष है। गीता में इसे क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ कहा गया है। दोनों को अलग-अलग समझना कठिन है। चेतना का आधार शरीर है और शरीर का आधार चेतना है। ध्यान रहे कि प्रकृति मनुष्य को भोग और मोक्ष दोनों में सहायता करती है। वहाँ लिंग भेद नहीं है, चेतना का अर्थ है कृष्ण, शरीर का अर्थ है राधा। शरीर नौ महीने बड़ा है। इसीलिए राधा को कृष्ण से बड़ी माना जाता है। प्रकृति के इस अद्भुत/अनोखे स्वभाव को बताने के लिए 'राधेकृष्ण' कहा जाता है।

नीम

आयुर्वेद में नीम के वृक्ष को आयुर्वेद का ब्रह्म बाण कहा जाता है। इस वृक्ष का प्रत्येक भाग जैसे-जड,तना, शाखाएं एवं पत्ते बहुत ही महत्वपूर्ण समझे जाते हैं

नीम के वृक्ष के फायदे

नीम के पत्तों में कषाय रस होता है, जो शरीर में जाकर मधुर रस यानी ब्लड शुगर लेवल को कम करने में मदद करता है। इसकी वजह से रोज नीम के पत्ते चबाने से डायबिटीज को कंट्रोल करने में मदद मिल सकती है।

डायबिटीज की बीमारी में मरीजों का शुगर लेवल अनकंट्रोल होने लगता है और इसे कंट्रोल करने के लिए दवा और इंसुलिन का सहारा लेना पड़ता है। डायबिटीज की समस्या बेहद तेजी से फैल रही है और इसे कंट्रोल करने के लिए दवाओं के अलावा खान-पान का भी विशेष ध्यान रखना पड़ता है। दवा के साथ अगर डायबिटीज के मरीज नियमित रूप से नीम के पत्ते चबाना शुरू कर दें, तो इससे उन्हें काफी राहत मिल सकती है।

आयुर्वेद में नीम के पत्तों को एंटी डायबिटिक गुणों से भरपूर माना गया है

नीमडायबिटीज का सबसे बड़ा दुश्मन है ! सिर्फ 5 पत्ते चबाकर देखिए

हालांकि इन पत्तों का सेवन डॉक्टर की सलाह के बाद ही करना चाहिए।

डायबिटीज की समस्या बेहद तेजी से फैल रही है और इसे कंट्रोल करने के लिए दवाओं के अलावा खान-पान का भी विशेष ध्यान रखना पड़ता है।

नीम के पत्ते आयुर्वेद में विशेष महत्व रखते हैं इन पत्तों में औषधीय गुणों का भंडार होता है, जो कई बीमारियों से राहत दिला सकते हैं। इन पत्तों में कई पावरफुल फ्लेवोनोइड्स होते हैं, जो पैंक्रियाज को स्टिम्युलेट करते हैं। इससे ब्लड शुगर कंट्रोल करने में मदद मिलती है ।नीम की पत्तियों का सेवन करने से स्किन डिजीज से भी राहत मिल सकती है।

नीम के पत्ते सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होते हैं, लेकिन इनका सेवन सही तरीके से करना चाहिए। ब्लड शुगर लेवल कंट्रोल करने के लिए लोगों को सुबह खाली पेट 4-5 नीम के पत्ते चबाकर खाएं और इसके बाद पानी पी लें। हालांकि जो लोग नीम की पत्तियां नहीं खा पाते हैं, वे नीम का तेल इस्तेमाल कर सकते हैं।

नीम के तेल का सेवन करने से भी डायबिटीज कंट्रोल करने में मदद मिल सकती है।

नीम की पत्तियों में मौजूद नेचुरल कंपाउंड स्किन डिजीज से राहत दिला सकते हैं।

हालांकि जिन लोगों का शुगर हद से ज्यादा रहता है, वे नीम के पत्ते खाने से पहले डॉक्टर से कंसल्ट जरूर करें।

इसके अलावा प्रेग्नेंट महिलाएं, बुजुर्ग और बच्चे नीम के पत्तों का सेवन बिना डॉक्टर की सलाह के बिल्कुल न करें।

नीम के अन्य फायदे

नीम की जड़ और तने के फ़ायदे:

नीम की जड़ और तने में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-इन्फ़्लेमेटरी, एंटीफ़ंगल, एंटीवायरल, और एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं।

नीम की जड़ और तने का इस्तेमाल गठिया और सूजन के इलाज में किया जाता है।

नीम की जड़ और तने का इस्तेमाल संक्रमण के इलाज में किया जाता है।

नीम की जड़ और तने का इस्तेमाल मधुमेह के इलाज में किया जाता है।

नीम की जड़ और तने का इस्तेमाल लीवर के लिए अच्छा माना जाता है।

नीम की जड़ और तने का इस्तेमाल प्रतिरक्षा को बढ़ाने में मदद करता है।

नीम की जड़ और तने का इस्तेमाल मस्तिष्क के लिए अच्छा माना जाता है।

नीम की जड़ और तने का इस्तेमाल मुंह की देखभाल के लिए किया जाता है।

नीम की जड़ और तने का इस्तेमाल पेट की समस्याओं से निपटने में मदद करता है।

नीम की जड़ और तने का इस्तेमाल दिल के लिए अच्छा माना जाता है।

नीम को संस्कृत में 'अरिष्ट' भी कहा जाता है, जिसका मतलब होता है, 'श्रेष्ठ, पूर्ण और कभी खराब न होने वाला'

64 योगिनियों के नाम और उनके कार्य

64 योगिनियां तांत्रिक परंपरा में शक्ति की विभिन्न रूपों की देवी मानी जाती हैं। ये विशेष रूप से भारत के हीरापुर, रानीपुर-झरियाल, और खजुराहो जैसे मंदिरों में पूजी जाती हैं। योगिनियां देवी शक्ति के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करती हैं और इनमें अलौकिक शक्तियां होती हैं, जैसे प्रकृति पर नियंत्रण, परिवर्तन, और रक्षा।

१-१६ (प्रथम समूह)

1. माया योगिनी – माया और भ्रम की देवी
2. तारिणी योगिनी – सुरक्षा और मार्गदर्शन करने वाली
3. वायु योगिनी – वायु और हवा पर नियंत्रण
4. मार्जरी योगिनी – फुर्ती और चपलता
5. चार्चिका योगिनी – योद्धा देवी
6. कौमारी योगिनी – ज्ञान और युवा शक्ति
7. भैरवी योगिनी – उग्र और भयावह शक्ति
8. छिन्नमस्ता योगिनी – आत्म-बलिदान और कुंडलिनी शक्ति
9. ज्वाला योगिनी – अग्नि तत्व की देवी
10. विकटा योगिनी – विकराल रूप वाली देवी
11. शंखरी योगिनी – शंख से संबंधित देवी
12. कपालिनी योगिनी – खोपड़ी धारण करने वाली संन्यासिनी
13. धूमावती योगिनी – वैराग्य और तपस्या की देवी
14. बगलामुखी योगिनी – शत्रुओं का नाश करने वाली
15. वाराही योगिनी – वराह स्वरूप, युद्ध की देवी
16. सिद्धिदात्री योगिनी – सिद्धियां प्रदान करने वाली

१७-**२ (द्वितीय समूह)

17. रक्ता योगिनी – युद्ध ऊर्जा की देवी
18. गांधारी योगिनी – सुगंध और इत्र की देवी
19. महोदरी योगिनी – सृजन की देवी
20. कामिनी योगिनी – आकर्षण और इच्छा की देवी
21. चामुंडा योगिनी – चंड-मुंड राक्षसों की संहारक
22. लंबिनी योगिनी – लंबी गर्दन वाली देवी

23. विकृताननना योगिनी – विकराल मुख वाली देवी
24. कोकिला योगिनी – कोयल जैसी मधुर वाणी
25. नारायणी योगिनी – विष्णु की शक्ति
26. मेघेश्वरी योगिनी – बादलों और वर्षा की देवी
27. भोगेश्वरी योगिनी – भोग और समृद्धि की देवी
28. संकटा योगिनी – संकटों को दूर करने वाली
29. कराली योगिनी – प्रलयंकारी देवी
30. चंडिका योगिनी – उग्र शक्ति की देवी
31. इंद्राणी योगिनी – इंद्र की शक्ति
32. शूलिनी योगिनी – त्रिशूल धारण करने वाली देवी

**-४८ (तृतीय समूह)

33. गौरी योगिनी – पवित्रता और कोमलता की देवी
34. भवानी योगिनी – मातृ शक्ति का स्वरूप
35. ब्रह्माणी योगिनी – सृजन शक्ति की देवी
36. रेवती योगिनी – काल चक्र की देवी
37. कौशिकी योगिनी – दिव्य योद्धा देवी
38. कात्यायनी योगिनी – शक्ति का उग्र रूप
39. रुद्राणी योगिनी – शिव की शक्ति
40. काली योगिनी – काल और परिवर्तन की देवी
41. भेरुंडा योगिनी – दो सिरों वाली पक्षी स्वरूप देवी
42. शत्रु मर्दिनी योगिनी – शत्रुओं का नाश करने वाली
43. प्रचंडा योगिनी – अत्यंत उग्र रूप
44. शंखिनी योगिनी – शंख से संबंधित देवी
45. शतघ्नी योगिनी – अनेक शस्त्रों से युक्त देवी
46. उग्रचंडी योगिनी – भयंकर योद्धा देवी
47. कपिला योगिनी – स्वर्ण आभा वाली देवी
48. कामेश्वरी योगिनी – प्रेम और आकर्षण की देवी

४९-६४ (चतुर्थ समूह)

49. शीतला योगिनी – रोग और स्वास्थ्य की देवी
50. मनोहरमा योगिनी – सुंदरता और आकर्षण की देवी
51. अन्नपूर्णा योगिनी – अन्न और पोषण की देवी
52. त्रिपुरा योगिनी – तीन लोकों की शासक देवी
53. ज्येष्ठा योगिनी – दुर्भाग्य और संघर्ष की देवी
54. लक्ष्मी योगिनी – समृद्धि और धन की देवी
55. सरस्वती योगिनी – ज्ञान और संगीत की देवी
56. डंडा योगिनी – न्याय और दंड की देवी
57. पिंगला योगिनी – सूर्य ऊर्जा की देवी
58. विशालाक्षी योगिनी – व्यापक दृष्टि वाली देवी
59. शर्वाणी योगिनी – सर्वोच्च मातृशक्ति
60. त्रिशूला योगिनी – त्रिशूल धारण करने वाली देवी
61. भूतेश्वरी योगिनी – भूत-प्रेतों की स्वामिनी
62. नित्यक्लिन्ना योगिनी – प्रेम और भक्ति की देवी
63. वज्रेश्वरी योगिनी – अटूट शक्ति की देवी
64. ध्यान योगिनी – ध्यान और आत्मसाक्षात्कार की देवी

64 योगिनियों की पूजा और महत्व

- तांत्रिक साधना – योगिनियों की पूजा तांत्रिक अनुष्ठानों में की जाती है।
- शक्ति साधना – हर योगिनी देवी शक्ति का एक रूप मानी जाती हैं।
- रक्षा और उपचार – कुछ योगिनियां रोग, विपत्तियों और शत्रुओं से बचाने वाली होती हैं।

कैबिनेट ने ओडिशा में 2 रेलवे परियोजनाओं को मंजूरी दी, 5,104 करोड़ रुपये का निवेश होगा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारतीय रेलवे में चार मल्टीट्रैकिंग रेलवे परियोजनाओं को मंजूरी दे दी है, जिनमें ओडिशा की दो परियोजनाएं भी शामिल हैं। केंद्र सरकार की आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने आज देश भर में चार रेलवे परियोजनाओं को मंजूरी दे दी, जिनमें से दो ओडिशा के लिए हैं।मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने इसके लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री का ध्यान ओडिशा के विकास पर केंद्रित रहा है और जिस तरह केंद्र सरकार नियमित रूप से ओडिशा के लिए महत्वपूर्ण विकास परियोजनाएं स्वीकृत कर रही है, वह इसका प्रमाण है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में ओडिशा निश्चित रूप से देश के विकास इंजन के रूप में विकसित होगा। इसी प्रकार, मुख्यमंत्री ने केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव का भी आभार व्यक्त किया। ओडिशा में जिन दो परियोजनाओं को मंत्रिमंडल ने मंजूरी दी है, वे हैं संबलपुर-जरपाड़ा (तालचेर, अंगुल) तीसरी और चौथी लाइन तथा झारसुगुड़ा-सासन (संबलपुर) तीसरी और चौथी लाइन। संबलपुर-जरपाड़ा परियोजना के लिए 3,917 करोड़ रुपये का निवेश किया जाना है, जबकि झारसुगुड़ा-सासन परियोजना के लिए 1,187 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। दोनों परियोजनाओं पर कुल 5,104 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। ये बहु-ट्रैक परियोजनाएं संबलपुर, अंगुल और झारसुगुड़ा जिलों में रेल परिवहन क्षेत्र में व्यापक गतिशीलता लाएगी। इन परियोजनाओं से रेलवे परिचालन सरल होगा और भीड़भाड़ कम होगी। इन परियोजनाओं को प्रधानमंत्री के पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के अनुसार मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी के लिए क्रियान्वित किया जाएगा।

फरीदाबाद सैक्टर 3 जाट भवन में अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा विशाल भंडारे का आयोजन : डॉ हृदयेश कुमार

समाज हित में किसी भी तरह से सेवा हो डॉ हृदयेश कुमार किसी भी सेवा को खाली नहीं छोड़ते हैं वो हर तरह से समाज हित में अपने आप को समर्पित रखते हैं ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ एमपी सिंह के नेतृत्व में शारदीय नवरात्र के समापन अवसर पर भंडारे का आयोजन किया गया

शारदीय नवरात्र के अंतिम दिन दुर्गा पूजा पंडालों में भंडारे की धूम रही। पूड़ी, सब्जी, खीर का वितरण किया गया । इस दौरान भंडारे का प्रसाद ग्रहण करने के लिए भक्तों की भीड़ जुटी रही। इसमें महिलाओं की संख्या भी काफी अधिक रही। भंडारा काफी देर तक चला। भक्तों ने मां दुर्गा की पूजा-अर्चना की और जयकारे लगाए।

डॉ हृदयेश कुमार ने विशेष रूप से कहा कि

नौ दिनों तक मां कि आराधना

दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती, इन तीन रूपों में माँ की आराधना करते हैं। माँ केवल आसमान में कहीं स्थित नहीं हैं।

"या देवी सर्वभुतेषु चेतनेत्यभिधीयते" – "सभी जीव जंतुओं में चेतना के रूप में ही माँ / देवी तुम स्थित हो"

नवरात्रि माँ के विभिन्न रूपों को निहारने और उत्सव मनाने का त्यौहार है। जैसे कोई शिशु अपनी माँ के गर्भ में 9 महीने रहता है, वैसे ही हमारा स्वयं में, परा प्रकृति में रहकर – ध्यान में मग्न होने का इन 9 दिनों का महत्व है। वहाँ से फिर बाहर निकलते हैं, तो सृजनात्मकता का प्रस्फुरण जीवन में होने लगता है।

गुरुदेव श्री श्री रवि शंकर द्वारा नवरात्रि का महत्व

नवरात्रि का अंतिम दिन – विजयादशमी

अंतिम दिन विजयादशमी मनाते हैं क्योंकि हम तीनों गुणों से परे त्रिगुणातीत अवस्था में आ जाते हैं। काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ आदि जितनी भी राक्षसी प्रवृत्तियाँ हैं उनका हनन करके विजय का उत्सव मनाते हैं। रोजमर्रा की जिंदगी में जो मन फँसा रहता है उसमें से मन को हटा कर जीवन के जो उद्देश्य व आदर्श हैं उनको निखारने के लिए यह उत्सव मनाया जाता है। एक तरह से समझ लीजिए कि हम अपनी बैटरी को रिचार्ज कर लेते हैं। प्रत्येक व्यक्ति जीवनभर या साल भर में जो भी काम करते करते थक जाता है, इससे मुक्त होने के लिए इन 9 दिनों में शरीर की शुद्धि, मन की शुद्धि और बुद्धि में शुद्धि आ जाए, सत्व शुद्धि हो जाए – इसका प्रयत्न करते हैं। इस तरह शुद्धिकरण करने का, पवित्र होने का त्यौहार नवरात्रि है

इस दौरान पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया था।

ट्रस्ट के अंतरास्ट्रीय सचिव मुहम्मद मुस्तफा ने बहुत ही सुन्दर विचार रखते हुए बताया कि यह सिर्फ नवरात्रि ही नहीं बल्कि एक सामाजिक पर्व है जो हम सभी को एक जुट हो कर मनाना चाहिए

ट्रस्ट के राष्ट्रीय सचिव सुबोध कुमार साह, राहुल नीरज कुमार, शिवशंकर राय , सतपाल सिंह, विमलेश देवी, आदि मौजूदा रहे। ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने अहम भूमिका निभाई।

भारत से मनोज हो गए अलविदा...!

भारत से मनोज कुमार हो गए अलविदा,
जिसकी देशभक्ति पर दुनिया थी फिदा।
फ़िल्मों में हीरो बनने सपना लिए आया,
फ़ैशन में भिखारी का छोटा रोल पाया।
नौजवान का नाम हरि किशन गोस्वामी,
हाँ कांच की गुड़िया में ब्रेक मिला नामी।

भारत से मनोज कुमार हो गए अलविदा,
जिसकी देशभक्ति पर दुनिया थी फिदा।
विजय भट्ट की 'हरियाली और रास्ता' ने,
उनकी ज़िंदगी का बदल दिया था रास्ता।
कहानी लिखने की कला में रहीं महारत,
'शोर' ने करवाई एक निर्देशक की आहट।

भारत से मनोज कुमार हो गए अलविदा,
जिसकी देशभक्ति पर दुनिया थी फिदा।
देशभक्ति भरे भारत कुमार की हुई छवि,
दिलीप के साथ 'क्रांति' दशकों रहीं हावी।
क्या? याद करू रोटी, कपड़ा और मकान,
पूरब और पश्चिम,गुमनाम बनीं पहचान।

भारत से मनोज कुमार हो गए अलविदा,
जिसकी देशभक्ति पर दुनिया थी फिदा।
शहीद हो नीलकमल, अनीता, दो बदन,
हिमालय की गोद में हैं पत्थर के सनम,
साजन, बेईमान, दस नंबरी,आँखें है नम।
नहीं कोई दूसरा फिल्मी देशभक्त है गम!

संजय एम तराणेकर

बोकारो स्टील प्लांट में लाठीचार्ज में हुई मौत के मामले में विधायक श्वेता सिंह गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

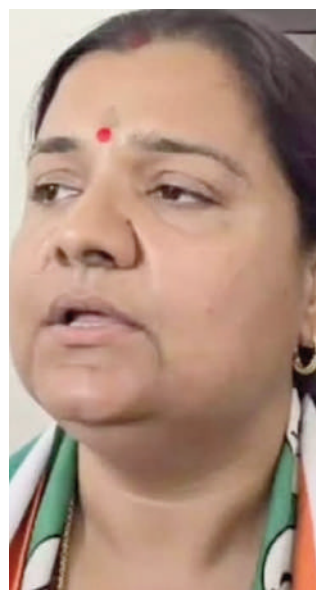

रांची, रैयत दाताओं , मुल निवासियों को नौकरी देने में पीछे हट रही झारखंड की लगभग सभी कंपनियां आज जनता को बेवकूफ बनाए हुए हैं . इसी क्रम झारखंड में बोकारो में धारा 163 के उल्लंघन करने को लेकर विधायक श्वेता सिंह गिरफ्तारी की गई है. श्वेता सिंह बोकारो स्टील प्लांट में प्रदर्शन के दौरान लाठीचार्ज में युवक की मौत को लेकर धरना दे रही थीं. लाठीचार्ज में विस्थापित युवक की मौत के बाद पूरे चास अनुमंडल क्षेत्र में धारा 163 लागू किया गया है.

सनद रहे कि बोकारो स्टील प्लांट के बाहर 3 अप्रैल को नियोजन की मांग कर रहे प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज और एक युवक की मौत के बाद बोकारो का माहौल बिगड़ता जा रहा है. दो दिन बीत जाने के बाद भी बोकारो स्टील प्लांट प्रबंधन और स्थानीय प्रशासन की ओर से सार्थक पहल नहीं किए जाने को लेकर विस्थापितों में आक्रोश है.

शुक्रवार देर रात प्रशासन, प्लांट प्रबंधन और जनप्रतिनिधियों के साथ वार्ता बेनतीजन रही, जिसके बाद बोकारो की स्थानीय कांग्रेस विधायक श्वेता सिंह बोकारो स्टील प्लांट के बाहर विस्थापितों के साथ धरने पर बैठ गईं. इसकी सूचना मिलने पर बोकारो डीसी और एसपी दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे और कांग्रेस विधायक श्वेता सिंह को गिरफ्तार कर लिया. गिरफ्तारी के बाद उन्हें सर्किट हाउस स्थित कैंप जेल ले जाया गया.

विधायक श्वेता सिंह ने कहा कि बोकारो स्टील प्लांट प्रबंधन और स्थानीय प्रशासन मिलकर विस्थापित लोगों के आंदोलन को खत्म करने का काम किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि हमलोग फिर से लड़ेंगे और मरेंगे. फिर से आंदोलन होगा और किसी भी कीमत पर विस्थापितों को उनका हक दिलाया जाएगा.

बता दें कि बोकारो स्टील प्लांट में नौकरी की मांग पर आंदोलित विस्थापित युवाओं पर लाठीचार्ज में एक युवक की मौत के बाद बवाल हुआ था. बोकारो की उपायुक्त विजया जाधव के निर्देश पर पुलिस ने स्टील प्लांट के मुख्यालय इस्पात भवन के समक्ष सीआईएसएफ और विस्थापितों के बीच हिंसक टकराव की घटना के लिए बीएसएल (बोकारो स्टील लिमिटेड) के मुख्य महाप्रबंधक हरि मोहन झा को गिरफ्तार कर लिया था.

घटना के विरोध में शुक्रवार को बुलाए गए बोकारो बंद के दौरान प्रदर्शनकारियों ने कम से कम तीन बसों सहित पांच गाड़ियों में आग लगा दी. कई वाहनों में तोड़फोड़ भी की गई.

झारखंड में 16 बंकर, 4 आईईडी बम बरामद , किया गया निष्क्रिय

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

चाईबासा, सारंडा जंगल में जराईकेला थाना क्षेत्र के वनग्राम बाबूडेरा के आसपास जंगली पहाड़ी क्षेत्रों में सुरक्षाबलों का टारगेट करके लगाये गये चार आईईडी बम को बरामद किया, ये आईईडी बम 20 किलो के थे। सुरक्षा की दृष्टि से जवानों ने बम निरोधक दस्ते की मदद से बम को निष्क्रिय कर दिया।

नक्सलियों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के दौरान सुरक्षाबलों ने नक्सलियों के 16 बंकर को भी ध्वस्त किया। इन बंकरों में 40 से 50 लोगों के रहने की क्षमता थी। नक्सलियों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान को लेकर जिले के एसपी आशुतोष शेखर ने कहा कि झारखंड पुलिस लगातार नक्सलियों के खिलाफ अभियान चला रही है। इसी क्रम में पुलिस को सूचना मिली थी कि प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के शीर्ष नेता मिसिर बेसरा, अनमोल, मोछू, अनल, असीम मंडल, अजय महतो, सागेन अंगारिया, अश्विन, पिंटू लोहरा, चंदन लोहरा, अमित हांसदा उर्फ उपतन, जयकांत, रापा मुंडा अपने दस्ते के सदस्यों के साथ सारंडा/कोल्हान क्षेत्र में विध्वंसक गतिविधियों के लिए भ्रमणशील हैं. जिसके आलोक में चाईबासा पुलिस, कोबरा 203 बीएन, 209 बीएन, झारखंड जगुआर एवं CRPF 26 बीएन, 60 बीएन, 134 बीएन, 174 बीएन, 193 बीएन, 197 बीएन की संयुक्त अभियान टीम गठित कर लगातार अभियान चलाया जा रहा है।

देशभक्ति के सच्चे सपूत अभिनेता मनोज कुमार का जीवन राष्ट्र व समाज के नाम रहा

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

' जब ज़ीरो दिया मेरे भारत ने भारत ने मेरे भारत ने
दुनिया को तब गिनती आयीं
तारों की भाषा भारत ने
दुनिया को पहले सिखलाई
देता ना दशमलव भारत तो
यूं चांद पे जाना मुश्किल था
धरती और चांद की दूरी का
अंदाजा लगाना मुश्किल था
हे प्रीत जहां की रीत सदा..... इस एक गीत में देश भक्ति के सच्चे सपूत अभिनेता मनोज कुमार का जीवन सार भी नजर आता है। अपने देश भारत के उनकी सोच बड़ी थी। हर छोटी छोटी चीजों पर बारीकी से अध्ययन करना और जो वजनदार बात रहती थी वहीं देशवासियों को समर्पित कर देते थे। पूरी दुनिया में भारत का डंका बजाने वाले वह एक सच्चे व अच्छे कलाकार थे। समाजिक स्तर पर देखें तो बुराईयों के प्रति व सजगता से आवाज उठाते हुए अपनी फिल्मों में जनचेतना को जागरूक करने के लिए देश के सिस्टम पर प्रहार करते थे। उनकी फिल्म चाहें वह शोर हो या रोटी कपड़ा और मकान उन्होंने जीवन में आपाधापी के बीच खुशियों को पहचानने के लिए अपने चहाने वाले दशकों से कहा। क्योंकि परछाई रहे जाती है,रह जाती निशानी है ज़िन्दगी तेरी मेरी कहानी है। हिन्दी सिनेमा के दिग्गज अभिनेता जिन्हें पूरी दुनिया जिन्हें भारत कुमार के नाम से जानते थें। वह दादा साहेब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित मशहूर अभिनेता मनोज कुमार जी ही थे। जिन्होंने देश का हर एक दौर देखा था । दो टुकड़ों में बांटा देश और समाज में विसंगतियों का बोल वाला था । लोग रोटी कपड़ा और मकान के लिए दर दर भटकते थें। तभी तों भारतीय सिनेमा में ऐसे आज़ाद विचार व भारत माता का दिवाना कहता रहा, मेरा रंग दे बसंती चोला। राष्ट्र भक्त कलाकार जिन्होंने अपने देश के लोगों को दिखाया कि शहीदों का जीवन कितने संघर्षों का रहा। एक सौनिक सेना में दिन रात अपने फर्ज के लिए लड़ाता है तो हम उसकी सेवा देशवासियों को नहीं दिखा सकतें? हमें अपनी युवा पीढ़ी को बताना चाहिए कि राष्ट्रभक्तों का मान सम्मान करें। यही धर्म भी है और कर्म भी यही है। फिल्म क्रांति, पूरब पश्चिम में उन्होंने देश भक्ति के साथ भारतीय समाजिक जनचेतना को जागृक करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई , जिसे देश कभी भी नहीं भूलेगा। ऐसे तो देशभक्ति फिल्मों को बनाने की प्रेरणा पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी से उन्हें मिलीं थीं। तभी तो किसान व जवान के चरित्र पर उन्होंने उपकार बनाई थी। जिसके गाने इतने वर्षों बाद भी सुपर-डुपर है। क्योंकि उनके शब्दों में देश की वंदना है। मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती। यह फिर मार्मिक भाव को प्रदर्शित करतें प्राण साहब के ऊपर फिल्माया गया। कस्मे वादे प्यार वफा वादे हैं वादों का क्या? मनुष्य को सोचने को मजबूर करती है , उनकी फिल्मों के हर एक सीन व गाने सदाबहार व ऐतिहासिक रहे जिन्हें कभी भी नहीं भूलया जा सकता हैं। आप का नाम हरिकृष्ण गोस्वामी और जन्म 1937 में ऐबटाबाद पाकिस्तान में हुआ था। विभाजन के बाद वह उनके परिवार के साथ भारत आ गये थें। आप सिर्फ एक अभिनेता ही नहीं बल्कि फिल्म निर्देशक, निर्माता, पटकथा,लेखक, गीतकार, संपादक और देश की राजनीति में आप ने भाग्य आजमाया था, पर कुछ समय तक ही । मनोज कुमार शिरडी के साईंबाबा के प्रति भी आप श्रद्धा बहुत ज्यादा थी। तभी तो आप ने शिरडी महाराष्ट्र में यात्रीओ की सुविधा हेतु एक होटल बनाया और साईं बाबा के नाम एक फिल्म भी बनाई थी । जो भक्तों को बहुत अच्छी लगी थी। हिट फिल्मों के इतिहास में मनोज कुमार ने 50 साल इस फिल्म इंडस्ट्री पर राज किया था। उन्हें एक राष्ट्रीय पुरस्कार व सात फिल्म फेयर पुरस्कार के साथ भारत सरकार का पद्मश्री व फिल्मों का सबसे बड़ा सम्मान दादा साहेब फाल्के पुरस्कार भी आप को मिला था। ऐसे तो आप जनता के लोकप्रिय अभिनेता थें,जिन्होंने अमर शहीद भगतसिंह के जीवन पर शहीद बनाकर ही शुरुआत में ही सफलता का झंडा बुलंद किया था। संघर्ष भी किया यह हार जीत जीवन का असली चरित्र है पर वह ऐसे फिल्मकार थे जिन्होंने हार नहीं मानी। क्योंकि एक प्यार का नगमा है मोजों की रवानी है ज़िन्दगी कुछ भी नहीं तेरी मेरी कहानी है। वही शहीद फिल्म में वह कहते आज उसी के पहन के निकला हम मस्तों का टोला, मेरे रंग दे बसंती चोला या कर चले हम फ़िदा जाने तन सथियो , मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती, हे प्रीत जहां की रीत सदा मैं गीत वह के गाता हूं भारत का रहने वाला हूं भारत की बात सुनाता हूं। ऐसे तो मनोज कुमार का राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत फिल्मों व उनकी ऐसी मजबूत प्रभाव फिल्मों में रहता था, जिससे राष्ट्रवाद के भाव नये भारत में उन युवा पीढ़ी में बना रहे। उनकी कोशिश यही रहती थी और वह उनके सार्थक प्रयास का परिणाम है आज भी उनकी फिल्में संदेश वाहक बन कर अपना फ़र्ज़ निभा रही हैं। आज मनोज कुमार जी हमारे बीच नहीं हैं पर उनकी यह देशभक्ति गीत फिल्में अमर है और सदियों तक हम भारतवासी के दिलों एक अलग जगह बनी रहेगी। आप के निधन से भारतीय फिल्मों ने अपना देशभक्त अभिनेता खो दिया। आपके निधन पर भावभीनी श्रद्धांजलि व शत शत नमन, भारत माता की जय।।

राजपरिवार सरायकेला ने याद किया प्रभू जगन्नाथ व पूर्व शासकों को

उत्कल दिवस पर सिंहभानु सिंहदेव को अंगवस्त्र से नवाजा गया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड, झारखंड

सरायकेला। कभी ओडिशा का अंग एवं आजाद मुल्क में ओडिशा का एक जिला सरायकेला प्रिंसली स्टेट(1620-1947) में उत्कल दिवस के अवसर पर अन्तिम शासक राजा सरायकेला, महाराज आदित्य प्रताप सिंहदेव के पौत्र सिंह भानु सिंहदेव ने अपने प्रजा के काफिले के साथ प्रभू जगन्नाथ ,महाराजा आदित्य प्रताप सिंहदेव, उत्कल मणि गोपबंधु दास समेत उनके मंझले दादा आधुनिक सरायकेला छऊ के जनक कुंवर विजय प्रताप सिंह देव तथा राजा उदित नारायण के मुर्तियों पर माल्यार्पण के साथ माथा टेका । वही ओड़िआ भाषा संस्कृति के संरक्षक सह बुद्धिजीवी कार्तिक कुमार परिच्छा ने राजमहल स्थित सिंहभूम की अधिष्ठात्री मां पाउडी देवी की पूजन के साथ राज परिवार सदस्य व सिंह भानु सिंहदेव जी को अंग वस्त्र देकर सम्मान कर परंपरा का निर्वाह किया ।

1936 के पहले कभी समुचा सिंहभूम ओड़िशा हुआ करता था जिसकी अधिष्ठात्री देवी मां पाउडी रही तथा देवता जगन्नाथ जी माना जाता था । राज्य विलय दस्तावेज में साफ वर्णन के वाबजूद स्थानीय ओड़िआ परंपरा आजादी के बाद से उपेक्षित रखा गया । कभी केंद्र के अधीन तो कभी बिहार फिर झारखंड में इसकी ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक विरासत को जिस कदर खत्म किया गया वह उच्चस्तरीय जांच का विषय है ।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही सरायकेला की अनमोल धरोहर उत्कलीय पाइक सैन्य छावनी अखाड़ों से परिमार्जित कर आधुनिक कलात्मकता से जोड़ने वाले एवं इस कला को लेकर सात सात पद्मश्री पुरस्कार सरायकेला माटी में दिलाने वाले राजकुमार कुंवर साहब विजय प्रताप सिंहदेव की उस मूर्ति पर भी दीप दान की गयी जो विगत सात आठ वर्षो से धुल फांक रही थी । उनके समीप ऐतिहासिक नृपराज राजकीय उच्च विद्यालय , बालक मध्य विद्यालय 1924के निर्माता राजा नृपराज सिंहदेव जी की मुर्ति पर भी माल्यार्पण किया गया ।

कुछ सजग नागरिक जिसमें ज्योति लाल साहु, मनोज मंडल , रंजीत नायक, राजकिशोर नायक, दीपु नायक, मंजीत नायक ,कुंदन ,टुनटून नायक आदि ने राजमहल प्रागण आदित्य प्रताप स्टेचू , गोपबंधू स्टेच्यू में पहुंचकर उत्कल दिवस की रश्म अदायगी की।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023